हिन्दी दैनिक

तीसरा विकल्प न्यूज़

(लखनऊ से प्रकाशित)

वर्षः- 02, अंकः-196, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.
लखनऊ, सोमवार 30 दिसम्बर 2024

जीवन में नई रोशनी ला रही विपिन शर्मा की ब्रज की रसोई...02

राष्ट्रीय बैटल स्पोर्ट्स डांस प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ी चयनित...06

टाटा-ग्रुप पांच साल में 5-लाख नई जॉब्स क्रिएट करेगा

रिलायंस ने हेल्थकेयर कंपनी कार्किनोस को खरीदा

डेलॉइट का अनुमान-FY25 में 6.8% रह सकती है जीडीपी

धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए एक सनातन बोर्ड बनाया जाए: देवकीनंदन ठाकुर

मुंबई, एजेंसी। कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर ने रविवार को बातचीत करते हुए सनातन की रक्षा के लिए एक सनातन बोर्ड के गठन की मांग की। उन्होंने कहा कि वक्फबोर्ड के माध्यम से मुस्लिम समुदाय के धार्मिक मामलों का संचालन होता है, वैसे ही सनातन धर्म के लिए भी एक बोर्ड की स्थापना जरूरी है, ताकि हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा की जा सके। देवकीनंदन ठाकुर ने बात करते हुए कहा कि वक्फबोर्ड की तर्ज पर सनातन बोर्ड का गठन किया जाए। धर्माचार्यों का मुख्य कार्य अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करना है। आज हमारे मंदिरों पर आक्रमण हो रहा है और मंदिरों के पैसों का दुरुपयोग किया जा रहा है। इन पैसों का इस्तेमाल सरकार ने किस काम में किया, यह भी हमें नहीं बताया जाता। हमारे भगवानों को अपमानित किया जा रहा है और हमें इसका विरोध करना चाहिए।

स्वाति मालीवाल ने खोला स्वास्थ्य विभाग के खिलाफ मोर्चा

नयी दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी की पूर्व नेता और दिल्ली महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने आम आदमी पार्टी के खिलाफमोर्चा खोल दिया है। वह अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए दिल्ली की अव्यवस्थाओं पर सवाल उठाती दिखाई दे रही हैं। बारिश के बाद कभी वह जल भराव पर निशाना साधती हैं तो कभी अस्पतालों की हालत पर।इसी कड़ी में स्वाति मालीवाल ने एक बार फिर अस्पताल का दौरा कर वहां की अव्यवस्थाओं पर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में एक वीडियो के साथ लिखा, ‘दिल्ली के इहबास अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। लोग घंटों घंटों दवा लेने के लिए अस्पताल के बाहर सड़क पर ठंड में सोते हैं। सुबह काउंटर खुलता है, भीड़ अंदर किसी तरह पहुंचती है तो दवा नहीं मिलती।

मन की बात का 117वां एपिसोड

महाकुंभ जाएं तो संकल्प लेकर लौटें-समाज से विभाजन और विद्वेष खत्म करेंगे: मोदी

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को ‘महाकुंभ को ‘‘एकता का महाकुंभ बताया और लोगों से इस आगामी भव्य धार्मिक समागम से समाज से नफरत और विभाजन को खत्म करने के संकल्प के साथ लौटने का आग्रह किया। मोदी ने अपने मासिक ‘मन की बात कार्यक्रम में कहा, ‘‘महाकुंभ का संदेश एक हो पूरा देश। उन्होंने प्रयागराज में अगले साल 13 जनवरी से आयोजित इस समागम में शामिल होने वाले लोगों की विविधता के मद्देनजर कहा कि विविधता में एकता के ऐसे दृश्य का कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। उन्होंने कहा, ‘‘महाकुंभ की विशेषता न केवल इसकी विशालता बल्कि इसकी विविधता में भी है। यह विशाल धार्मिक आयोजन हर 12 साल में आयोजित किया जाता है। मोदी ने कहा कि आगामी गणतंत्र दिवस संविधान के लागू होने की 75वीं वर्षगांठ होगी जो देशवासियों के लिए गर्व की बात है। उन्होंने जोर देकर कहा कि संविधान समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है। उन्होंने कहा, ‘‘यह हमारा मार्गदर्शक है। मोदी ने कहा कि वह अपने जीवन में इस स्तर तक संविधान के कारण ही पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि लोगों को संविधान के प्रावधानों और भावना से जोड़ने के लिए ‘कॉन्स्टीट्यूशन 75 डॉटकॉम नामक एक वेबसाइट शुरू की गई है। विपक्षी दल केंद्र सरकार पर संविधान को कमजोर करने का अक्सर आरोप लगाते रहे हैं, जिसका सत्तारूढ़ दल ने जोरदार खंडन किया है। मोदी ने संवैधानिक मूल्यों एवं भावना को मजबूत करने के अपनी सरकार के प्रयासों का कई बार जिक्र किया है और मुख्य विपक्षी कांग्रेस पर आरोप लगाया है कि जब भी वह सत्ता में रही, उसने संविधान को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया।

संविधान की प्रस्तावना विभिन्न भाषाओं में पढ़ें, अपना वीडियो अपलोड करें-मोदी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में देशवासियों को भारत का संविधान लागू होने के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित गतिविधियों में भाग लेने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि 2025 में 26 जनवरी को हमारे संविधान को लागू हुए 75 वर्ष होने जा रहे हैं। हम सभी के लिए बहुत गौरव की बात है। उन्होंने कहा, हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें जो संविधान सौंपा है वो समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है। संविधान हमारे लिए आगे की राह दिखाने वाला प्रकाश है। हमारा मार्गदर्शक है। ये भारत का संविधान ही है जिसकी वजह से मैं आज यहाँ हूँ, आपसे बात कर पा रहा हूँ। उन्होंने कहा कि 26 नवंबर 2024 को संविधान दिवस से एक साल तक चलने वाली कई गतिविधियां शुरू हुई हैं। देश के नागरिकों को संविधान की विरासत से जोड़ने के लिए कॉन्स्टिट्यूशन75.कॉम नाम से एक खास वेबसाइट भी बनाई गई है। इसमें आप संविधान की प्रस्तावना पढ़कर अपना वीडियो अपलोड कर सकते हैं। प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम के 117वीं कड़ी में अपने संबोधन में देशवासियों से कहा कि इस वेबसाइट पर आप अलग-अलग भाषाओं में संविधान पढ़ सकते हैं। साथ ही संविधान के बारे में प्रश्न भी पूछ सकते हैं। श्री मोदी ने लोगों से संविधान की प्रस्तावना पढ़ने और जुड़ने का आग्रह करते हुए कहा, मन की बात के श्रोताओं, स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों, कॉलेज में जाने वाले युवाओं से मेरा आग्रह है, इस वेबसाइट पर जरूर जाकर देखें, इसका हिस्सा बनें।

इसरो के अंतरिक्ष डॉकिंग परीक्षण के लिए काउंटडाउन शुरू

पीएसएलवी-सी60 रॉकेट पर लॉन्च होंगे दो उपग्रह

श्रीहरिकोटा, एजेंसी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अंतरिक्ष डॉकिंग परीक्षण के लिए काउंटडाउन रविवार शाम को शुरू हो गया। यह परीक्षण सोमवार को पीएसएलवी-सी60 रॉकेट के साथ लॉन्च होगा। यह भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। इस मिशन में अंतरिक्ष में डॉकिंग तकनीक का परीक्षण किया जाएगा। इस उपलब्धि को हासिल करने वाला भारत चीन, रूस और अमेरिका के बाद चौथा देश होगा। इसरो ने पीएसएलवी-सी60 के लॉन्च का समय सोमवार (30 दिसंबर) की रात 9.58 तय किया है। रॉकेट में स्पेडेक्स मिशन के तहत दो उपग्रह अंतरिक्ष में भेजे जाएंगे। इसके साथ 24 अन्य पेलोड भी होंगे। इसरो के एक अधिकारी ने पीटीआई को बताया कि पीएसएलवी/स्पेडेक्स मिशन का काउंटडाउन आज रात नौ बजे शुरू हुआ। इन-स्पेस डॉकिंग तकनीक अंतरिक्ष में भारत की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक होगी, जिसमें चंद्रमा पर मानव को भेजना, वहां से नमूने लाना और भारत के अपने अंतरिक्ष स्टेशन- भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन का निर्माण और संचालन भी शामिल है। डॉकिंग तकनीक का उपयोग तब भी किया जाएगा जब सामान्य मिशन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कई रॉकेट लॉन्च की योजना बनाई जाएगी। इसरो के एक अधिकारी के मुताबिक, स्पेडेक्स मिशन का मुख्य उद्देश्य दो छोटे उपग्रहों (एसडीएक्स01 और एसडीएक्स02) की डॉकिंग और अनडॉकिंग की तकनीक विकसित करना है, जो एक धरती की निचली कक्षा (लो-अर्थ ऑर्बिट) में एक साथ जुड़ेंगे।

पीओईएम-4 मिशन

इस महत्वपूर्ण मिशन के अलावा, पीएसएलवी ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंटल मॉड्यूल-4(पीओईएम-4) मिशन भी किया जाएगा। इसमें 24 पेलोड (इसमें इसरो के 14 और उद्योग व अकादमिक संस्थाओं के 10 पेलोड शामिल) को एक के बाद एख 90 मिनट के समय में अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। इन पेलोड का जीवनकाल 3 से 4 महीने तक रहेगा। वह पीएसएलवी का 18वां कोर-अलोन वेरिएंट होगा। इसे श्रीहरिकोटा स्थिथ पीएसएलवी इंटीग्रेश फैसिलिटी में तैयार किया गया है।

इन उपग्रहों को कक्षा में स्थापित करेगा प्रमुख रॉकेट

इसरो ने कहा कि इस मिशन के तहत इसरो का प्रमुख रॉकेट पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (पीएसएलवी) दो उपग्रहों एसडीएक्स01 और एसडीएक्स02 को एक कक्षा (ऑर्बिट) में स्थापित करेगा जो उन्हें एक दूसरे से 5 किलोमीटर दूर रखेगा। बाद में, इसरो मुख्यालय के वैज्ञानिक उन्हें 3 मीटर तक करीब लाने की कोशिश करेंगे, जो बाद में उन्हें पृथ्वी से लगभग 470 किमी की ऊंचाई पर एक साथ विलय करने के लिए प्रेरित करेगा। इसरो के अधिकारियों ने कहा कि यह प्रक्रिया सोमवार को निर्धारित प्रक्षेपण के लगभग 10-14 दिन बाद होने की उम्मीद है। स्पाडेक्स मिशन में, अंतरिक्ष यान ए में एक उच्च रिजॉल्यूशन कैमरा है, जबकि अंतरिक्ष यान बी में लघु मल्टीस्पेक्ट्रल पेलोड और एक विकिरण मॉनिटर पेलोड है। ये पेलोड उच्च रिजॉल्यूशन वाली छवियां, प्राकृतिक संसाधन निगरानी, वनस्पति अध्ययन आदि प्रदान करेंगे।

15 दिनों में ही मेरी विधानसभा से 5 हजार से ज्यादा वोट कटवाने के एप्लीकेशन दिए गए: केजरीवाल

नयी दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भाजपा पर बड़ा आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि भाजपा हर हाल में चुनाव जीतना चाहती है। इसलिए लगातार वोट कटवाने के एप्लीकेशन डाले जा रहे हैं। इसके साथ-साथ नए वोट जोड़ने के भी एप्लीकेशन दिए जा रहे हैं। जिनका कोई अता-पता नहीं है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि भाजपा के पास ना कोई सीएम का चेहरा है और ना ही कोई उम्मीदवार। दिल्ली में भाजपा अपनी हार मान चुकी है। इसलिए अलग-अलग हथकंडे अपना कर किसी भी हालत में चुनाव जीतना चाहती है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मेरी विधानसभा नयी दिल्ली इलाके में बीते 15 दिनों में ही अभी तक 5 हजार से ज्यादा वोट कटवाने के एप्लीकेशन दिए गए हैं और 10 हजार से ज्यादा नए वोट जोड़ने के एप्लीकेशन भी दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि 1 लाख 6 हजार वोट कुल नयी दिल्ली विधानसभा में मौजूद हैं। 29 अक्टूबर से 14 दिसम्बर तक सिर्फ 900 वोट डिलीट के लिए एप्लीकेशन आए थे और 15 दिसंबर से अभी तक 5 हजार वोट डिलीट करने के लिए भाजपा ने एप्लिकेशन डाली है। जबकि 29 अक्टूबर को चुनाव आयोग ने समरी रिवीजन के बाद वोटर लिस्ट जारी की थी। 2 महीना चुनाव आयोग घर-घर जाकर रिवीजन का काम करता है तो उसके बाद यह एप्लीकेशन क्यों आ रही है।

ठंडी हवाओं ने बढ़ाई ठिठुरन, तीन दिन के लिए कोहरे का यलो अलर्ट

नई दिल्ली। पहाड़ों से आने वाली ठंडी हवाओं ने राजधानी में सर्दी का सितम बढ़ा दिया है। इससे ठिठुरन बढ़ गई है। रविवार को न्यूनतम तापमान सामान्य से छह डिग्री सेल्सियस अधिक 13 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। अधिकतम तापमान दो डिग्री कम के साथ 18 डिग्री सेल्सियस रहा। ऐसे में सफदरजंग में सुबह साढ़े सात बजे दृश्यता 600 मीटर रही। उधर, पालम एयरपोर्ट पर साढ़े नौ बजे दृश्यता 350 मीटर दर्ज की गई। मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि सोमवार से न्यूनतम तापमान में गिरावट आएगी। साथ ही कई इलाकों में घना कोहरा छाया रहेगा। ऐसे में येलो अलर्ट जारी किया है। अधिकतम तापमान 18 डिग्री और न्यूनतम तापमान 09 डिग्री रहने का अनुमान है। कमोबेश यही स्थित मंगलवार और बुधवार को भी रहेगी। विभाग ने कहा कि कुछ स्थानों पर सुबह घने से घना कोहरा छाया रह सकता है। शाम व रात में स्मॉग-धुंध का अनुमान है। रविवार को सुबह से ही स्मॉग के साथ धुंध छाई रही। इससे वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ा। हालांकि, दिन में हल्की धूप निकली, लेकिन सर्दी से राहत नहीं मिली। दोपहर होते ही आसमान में बादल छा गए। साथ ही तेज ठंडी हवाएं चली। शाम को ठंडी हवाओं ने फिर से तापमान में गिरावट कर दी। रात के समय ठंड से बचने के लिए लोगों ने अलाव का सहारा लिया। पालम में न्यूनतम तापमान अन्य केंद्र के मुताबिक सबसे कम दर्ज किया गया। यहां न्यूनतम तापमान 11.1 डिग्री सेल्सियस रहा। वहीं, आया नगर में 11.8, नरेला में 12.2, नजफगढ़ में 12.5 व पूसा में 13.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

फिर संभल पहुंची एएसआई की चार सदस्यीय टीम

बांके बिहारी मंदिर का सर्वे कर खोलेगी डेढ़ सौ साल पुराने राज

संभल, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के संभल जिले की तहसील चंदौसी में बावड़ी की खुदाई के दौरान श्री बांके बिहारी मंदिर का एएसआई की चार सदस्यीय टीम ने सर्वे किया। करीब डेढ़ सौ साल पुराने बांके बिहारी मंदिर से एएसआई की टीम ने सैंपल जुटाए हैं। बता दें कि यह बांके बिहारी मंदिर पिछले चौदह सालों से बंद पड़ा था। जिसके चलते मंदिर खंडहर बन गया है। आपको बता दे संभल जिले की तहसील चंदौसी के लक्ष्मणगंज मौहल्ले में स्थित बावड़ी की खुदाई तथा श्री बांके बिहारी मंदिर को लेकर के बीती 21 दिसंबर को तहसील समाधान दिवस के दौरान जिलाधिकारी डॉ राजेंद्र पैसिया को एक शिकायती पत्र सोपा गया था। जिसमें बावड़ी की खुदाई तथा श्री बांके बिहारी मंदिर के जीर्णोदार करने की मांग की गई थी। इसी के चलते डीएम के निर्देशन में एएसआई की चार सदस्यीय टीम बावड़ी की खुदाई के साथ-साथ श्री बांके बिहारी मंदिर का सर्वे करने पहुंची। जहां इस टीम ने मंदिर के चारों ओर घूम कर सैंपल लिए हैं। गौरतलब हो कि बीते दिनों संभल के मोहल्ला खग्गू सराय में 46 साल से बंद शिव मंदिर मिला था। जिसमें भगवान शिव की शिवलिंग और हनुमान जी की मूर्ति भी मिली थी। अब इस मंदिर में श्रद्धालु खुशी खुशी रोजाना सुबह-शाम आरती करते हैं। इसमें भक्तों की भीड़ लगी रहती है। इस प्राचीन मंदिर में दर्शन के लिए दूर दराज से भी लोग पहुंच रहे हैं। 14 दिसंबर को प्रशासन की पहल पर 1978 के दंगों के बाद से बंद इस शिव मंदिर का ताला खोला गया।

भाजपा को जनवरी के अंत में मिल सकता है नया राष्ट्रीय अध्यक्ष, दिल्ली में हुई अहम बैठक

नई दिल्ली, एजेंसी। भाजपा को नए साल में जनवरी के अंत में नया राष्ट्रीय अध्यक्ष मिल सकता है। भाजपा नेता पीटी कुंजांग ने कहा कि 15 जनवरी तक राज्य और जिला अध्यक्षों के चुनाव पूरे होंगे। इसके बाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया शुरू होगी और जनवरी के अंत या फरवरी के पहले हफ्ते में नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की घोषणा की जाएगी। भाजपा की नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में रविवार को संगठन चुनाव को लेकर अहम बैठक हुई। इसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) बीएल संतोष, सभी महासचिव, सभी प्रदेश अध्यक्ष और सभी प्रदेश महासचिवों के साथ-साथ संगठनात्मक चुनाव प्रक्रिया के प्रमुख और सह प्रमुख शामिल हुए। बैठक के बाद कुंजांग ने बताया कि बैठक में संगठन की चुनाव प्रक्रिया के सभी पहलुओं पर चर्चा हुई। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, गुजरात, पश्चिम बंगाल, जम्मू-कश्मीर और झारखंड को 15 जनवरी तक नए अध्यक्ष मिल सकते हैं। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का कार्यकाल 2023 में खत्म हो चुका है। हालांकि लोकसभा और कई राज्यों के विधानसभा चुनाव को देखते हुए उनका कार्यकाल बढ़ा दिया गया था। नड्डा जनवरी 2020 में पार्टी के अध्यक्ष बनाए गए थे। भाजपा के संविधान के अनुसार, कोई व्यक्ति अधिकतम दो कार्यकाल तक लगातार अध्यक्ष रह सकता है। साथ ही नड्डा केंद्रीय मंत्रिमंडल में भी शामिल किए गए हैं, ऐसे में उनका फिर से अध्यक्ष बनने की उम्मीद खत्म हो गई है। कुंजांग ने बताया कि पार्टी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती को पूरे एक साल तक मनाने का फैसला किया है।

योगी ने राष्ट्रपति-उप राष्ट्रपति को दिया महाकुम्भ का निमंत्रण

नयी दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से अलग-अलग भेंट की और उन्हें महाकुम्भ का निमंत्रण दिया। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और दिल्ली के उप राज्यपाल विनय कुमार सक्सेना को भी प्रयागराज में होने जा रहे महाकुम्भ-2025 के लिए आमंत्रित किया। योगी आदित्यनाथ ने सभी विशिष्ट जनो को निमंत्रण पत्र के साथ ही महाकुम्भ 2025 का प्रतीक चिह्न, कलश, महाकुम्भ से जुड़ा साहित्य, नववर्ष का टेबल कैलेंडर और डायरी भी भेंट की। अगले 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक प्रयागराज में होने जा रहे महाकुम्भ में विशिष्टजनों को आमंत्रण देने के लिए मुख्यमंत्री शनिवार को नयी दिल्ली पहुंचे थे। शनिवार को उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा और मिजोरम के राज्यपाल जनरल वीके सिंह से मुलाकात की थी। उन्होंने सभी विशिष्टजनों को महाकुम्भ से संबंधित उपहार भी भेंट किए। योगी आदित्यनाथ ने अपने ‘एक्स’ हैंडल पर विशिष्टजनों से भेंट की तस्वीर पोस्ट करते हुए समय प्रदान करने के लिए उनका आभार भी जताया। उल्लेखनीय है कि महाकुम्भ प्रारंभ होने में अब कुछ ही समय शेष रह गया है।

पक्षियों के झुंड से विमान की टक्कर और चली गई 179 यात्रियों की जान

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता कन्हैया सिंह

नयी दिल्ली। दक्षिण कोरिया के मुआन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर दुर्घटनाग्रस्त हुए ‘जेजू एयर’ विमान में सवार 181 यात्रियों में से महज दो ही लोग जिंदा बच पाए हैं। दोनों चालक दल के सदस्य हैं। बाकी के 179 यात्रियों की दुखद घटना में मौत हो गयी है। सामने आयी जानकारी के अनुसार, अधिकारियों का मानना है कि विमान हादसा पक्षियों के टकराने की वजह से हुआ। पक्षियों के झुंड से टकरा जाने की वजह से विमान का लैंडिंग गियर खराब हो गया और वह रनवे से फिसलकर हवाई अड्डे की दीवार से टकराने के बाद आग की लपटों में घिर गया। जेजू एयर के सीईओ किम ई-बे ने एक बयान जारी कर दुख व्यक्त किया और पीड़ितों के परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त की। योनहाप समाचार एजेंसी के अनुसार, किम ने अपने बयान में कहा, कारण चाहे जो भी हो, मैं सीईओ के रूप में पूरी जिम्मेदारी लेता हूं।

दिल्ली में जो बदलाव केजरीवाल ने किए, वे अद्भुत हैं: आदित्य ठाकरे

मुंबई, एजेंसी। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले शिवसेना (यूबीटी) के नेता आदित्य ठाकरे ने राष्ट्रीय राजधानी में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी के प्रशासन और कामकाज की तारीफकी है। आदित्य ठाकरे यहां भगवान अय्यप्पा के दर्शन करने पहुंचे थे। उन्होंने कहा, इस मंदिर में मुझे दर्शन करना बहुत अच्छा लगता है, इसलिये यहां मैं अवसर आता रहता हूं। जब मीडिया ने उनसे दिल्ली में मतदाता सूची से छेड़छाड़ के आरोपों के बारे में पूछा तो उन्होंने सीधे तौर पर उस मुद्दे पर कोई टिप्पणी नहीं की। इसकी बजाय उन्होंने कहा, अगर आप देखें तो दिल्ली में जो बदलाव अरविंद केजरीवाल ने किया है। वह अद्भुत है। उन्होंने दिल्ली में बहुत काम किया है। वह ऐसे ही विकास करते रहे हैं। हम चाहते हैं कि वह आगे भी ऐसे ही काम करते रहें। उल्लेखनीय है कि आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने एक प्रेस कांफ्रेंस में भाजपा पर नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र में पिछले 15 दिन में लगभग पांच हजार मतदाताओं के नाम हटाने के लिए आवेदन देने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा भाजपा ने 7,500 नए नाम जोड़ने के लिए भी आवेदन दिया है।

बीपीएससी अभ्यर्थि प्रदर्शन

सीएम हाउस की ओर बढ़ रहे बीपीएससी अभ्यर्थियों पर पुलिस ने किया हल्का लाठीचार्ज

बिहार, एजेंसी। बिहार की राजधानी पटना में प्रदर्शन कर रहे बीपीएससी अभ्यर्थियों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने हल्का लाठीचार्ज किया। इस दौरान के कुछ वीडियो सामने आये हैं, जिनमें पुलिस अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज करती दिख रही है। अन्य वीडियो में, अभ्यर्थी पुलिस द्वारा लगाए गए बैरिकेट्स को तोड़कर आग बढ़ते नजर आ रहे हैं। बता दें, जन सुराज पार्टी के प्रमुख प्रशांत किशोर ने अभ्यर्थियों के इस प्रदर्शन का नेतृत्व किया। प्रदर्शन कर रहे अभ्यर्थी बिहार लोकसेवा आयोग की 70वीं प्रारंभिक परीक्षा को रद्द कराने की मांग कर रहे हैं। इसके लिए रविवार को अभ्यर्थी पटना के गांधी मैदान में प्रदर्शन करने के लिए इकट्ठा हुए थे। जिला प्रशासन ने अभ्यर्थियों को गांधी मूर्ति के पास जाने की अनुमति नहीं दी थी। अनुमति नहीं मिलने के बावजूद इसके प्रशांत किशोर ने बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों के साथ गांधी मूर्ति के पास पहुंचकर धरना प्रदर्शन किया।

जीवन में नई रोशनी ला रही विपिन शर्मा की ब्रज की रसोई

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता
लखनऊ

लखनऊ। सामाजिक सेवा का पर्याय बन चुके इण्डियन हेल्पलाइन सोसाइटी के संस्थापक विपिन कुमार शर्मा ने समाज सेवा को केवल एक विचार तक सीमित नहीं रखा, बल्कि अपने कर्मों से इसे एक आंदोलन का रूप दे दिया। अपने मजबूत इरादों और मानवता के प्रति निष्ठा के साथ, उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि सच्ची सेवा का अर्थ सिर्फ सहायता प्रदान करना नहीं, बल्कि जरूरतमंदों को आत्मसम्मान और बेहतर जीवन की राह दिखाना है। आज कार्यक्रम में आये अथिति पुलिस इस्पेक्टर प्रमोद सिंह जो कि गोरखपुर में धर्मशाला पर प्रत्येक मंगलवार को हम है न के नाम रसोई चलाते है उन्होंने कहा मानवता के प्रति अपने समर्पण और अटूट संकल्प के जरिए विपिन शर्मा द्वारा संचालित रसोई ने समाज सेवा को नई दिशा दी है। समाज के कमजोर और जरूरतमंद वर्गों के लिए उनकी पहल न केवल राहत प्रदान करती है, बल्कि उनके जीवन में आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना को भी पुनर्जीवित करती है। संस्था में आये एक और इंस्पेक्टर आरजू सिंह ने कहा आशियाना क्षेत्र में संचालित ब्रज की रसोई अब अकिंचन, निराश्रित, विक्षिप्त, गरीबों, बेसहारा, निराश्रित और भूखे लोगों के लिए आशा की किरण बन चुकी है। जिसमें सैकड़ों जरूरतमंदों को साफ-सुथरा और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाता है। वहीं संस्था की राष्ट्रीय महिलाध्यक्ष रजनी शुक्ला ने बताया भोजन में कभी गरम पूड़ी-सब्जी तो कभी दाल-चावल तो कभी सब्जी चावल परोसे जाते हैं, जो इन वंचित लोगों के लिए न केवल पेट भरने का जरिया बनता है, बल्कि यह उनके लिए एक स्नेहिल अनुभव भी है। संस्था के सदस्य आशीष श्रीवास्तव का कहना है, भूखे को खाना खिलाना केवल उसके पेट की भूख मिटाने का कार्य नहीं है, यह इंसानियत की भूख को भी शांत करता है। हमारा प्रयास है कि हर व्यक्ति को ऐसा महसूस हो कि वह समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। संस्था के एक और सदस्य विकास पाण्डेय ने कहा इण्डियन हेल्पलाइन सोसाइटी की यह पहल समाज के सभी वर्गों में प्रशंसा का पात्र बन चुकी है। जरूरतमंदों के चेहरे पर मुस्कान लाना और उन्हें सम्मानपूर्वक भोजन कराना समाज सेवा का एक आदर्श उदाहरण है। इसी पर संस्था के वरिष्ठ सदस्य देवांश रस्तोगी ने बताया इस प्रयास ने यह साबित कर दिया है कि सेवा का वास्तविक अर्थ केवल मदद करना नहीं, बल्कि आत्मसम्मान लौटाना और उन्हें मुख्यधारा में लाना है। सामाजिक कार्यकर्त्ता सुनील कुमार कहते है इस अनूठी पहल ने न केवल सैकड़ों भूखों का पेट भरा है, बल्कि लखनऊ के लोगों को यह संदेश भी दिया है कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं होता। समाजसेवी अमित बाजपेई कहते है ब्रज की रसोई की यह कहानी हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा है, जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का सपना देखता है। संस्था के सदस्य रंजीत कश्यप ने जानकारी दी कि आज के नि:शुल्क भोजन वितरण में आलू गोभी मिक्स व चावल जोन 8 के सामने की झुग्गियों व रतन खंड पानी टंकी के पास स्थित झुग्गियों एवं निर्माणाधीन विद्यालय के श्रमिकों और उनके परिवारों, में भोजन वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अभियान में करीब 760 लोगों को भोजन वितरित किया गया। इस नेक पहल में देवांश रस्तोगी, सुनील कुमार, आशीष श्रीवास्तव, विकास पाण्डेय, अमित बाजपेई, नवल सिंह, रंजीत कश्यप, अशोक कुमार, मुकेश कनौजिया, सुकांति कुमारी और संस्था की राष्ट्रीय महिलाध्यक्ष रजनी शुक्ला जैसे सभी समाज सेवियों का विपिन शर्मा ने हृदय से आभार व्यक्त किया।

सहयोग संस्था ने रेलवे स्टेशन पर किया चाय के साथ साथ कंबलो का वितरण

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता शाहजहांपुर

शाहजहांपुर। जनपद की चर्चित सहयोग संस्था शाहजहांपुर के सभी पदाधिकारियो ने महानगर के रेलवे स्टेशन पर पहुंचकर राहगीरों को ठंड से बचने के लिए गरमा गरम चाय पिलाई और बिस्किट खिलाएं और इसके साथ-साथ जरूरतमंदों को कंबल भी वितरित किये। संस्था के संरक्षक अनिल गुप्ता प्रधान एवं शाहनवाज़ खां एडवोकेट ने बताया कि हमारी संस्था पूरे सर्द मौसम में महानगर के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी चाय वितरण के साथ-साथ कंबल वितरण करती रहेगी। संस्था की वरिष्ठ उपाध्यक्ष तराना जमाल ने चाय वांटते हुए बताया कि सहयोग संस्था के सभी पदाधिकारी पूरी ईमानदारी ब लगन के साथ संस्था में काम कर रहे हैं, इसलिए हमारी संस्था इतना अच्छा कार्य कर पा रही है , और नर सेवा ही नारायण सेवा है इस बात को लेकर हम सभी को अपनी जिम्मेदारी अवश्य ही समझना चाहिए। कार्यक्रम में मोहम्मद जमाल, डॉक्टर पुनीत मनीषी,शालू यादव, विकास सक्सेना, शिवम वर्मा, सुधीर, आदि सभी उपस्थित रहे।

गरीब,निराश्रित,दिव्यांग जनों के बीच कंबल वितरण कर बढ़ा रहे हैं सेवा के हाथ।

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

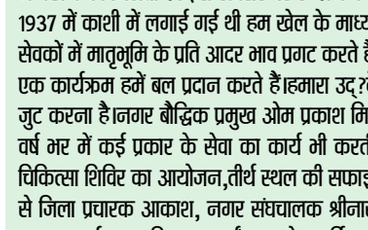

सीतापुर। जिले के लहरपुर क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम भवासीं में कंबल वितरण के साथ साथ विशाल भंडारे का किया गया आयोजन। मिली जानकारी के अनुसार क्षेत्र के ग्राम भवासीं मजरा नगई मल्लापुर में रविवार को जनार्दन वर्मा व देवेंद्र वर्मा के द्वारा एक कंबल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें गरीब,निराश्रित,दिव्यांग जनों को कंबल वितरित किये गये।इस मौके पर एक भण्डारे का भी आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित लोगों ने प्रतिभाग पर प्रसाद ग्रहण किया। इस मौके पर बोलते हुए जनार्दन वर्मा ने कहा कि क्षेत्र में पड़ रही कड़ाके की ठंड को लेकर क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों में सर्वे कराकर लगभग आठ सौ चिन्हित दिव्यांग निराश्रित महिलाएं बच्चे व गरीबों को कंबल वितरित किए गए व इस मौके पर उपस्थित सभी लोगों को आयोजित विशाल भंडारे में प्रसाद ग्रहण कराया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ भजन कीर्तन के साथ किया गया जिसमें लोगों ने श्रृद्धा पूर्वक प्रति भाग किया। इस मौके पर इंजीनियर देवेन्द्र वर्मा ने कार्यक्रम के आयोजन की प्रशंसा करते हुए कहा कि गरीबों की सेवा से बढ़कर दुनिया में कोई भी पुनीत कार्य नहीं है सभी सक्षम लोगों को इस पुनीत कार्य में आगे बढ़कर भाग लेना चाहिए। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से रमाकांत वर्मा,श्याम किशोर वर्मा,शिवम वर्मा,सतीश शर्मा,दिनेश पटेल,बिहारी लाल,रमेश वर्मा सहित भारी संख्या में लोग उपस्थित थे।

स्विमिंग एसोसिएशन द्वारा टेक्निकल ऑफिशियल क्लिनिक 2024 का सफल समापन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ

असम। स्विमिंग एसोसिएशन ने हर साल की तरह इस बार भी %टेक्निकल ऑफिशियल क्लिनिक% का दो दिवसीय कार्यक्रम के साथ आयोजन किया। राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जल खेलों का सुचारू संचालन करने के लिए प्रशिक्षित, अनुभवी और प्रमाणित तकनीकी अधिकारियों की आवश्यकता होती है। इसी के मद्देनजर असम स्विमिंग एसोसिएशन के महासचिव भास्कर रंजन दास और प्रचार सचिव मुकुटेश्वर गोस्वामी ने बताया कि इस वर्ष यह क्लिनिक दो दिवसीय कार्यक्रम के रूप में 28 और 29 दिसंबर को गुवाहाटी के असम ओलंपिक एसोसिएशन सभागार में आयोजित किया गया। इस क्लिनिक में राज्य के विभिन्न हिस्सों से आए 68 प्रतिभागियों ने भाग लिया। दो दिवसीय इस क्लिनिक में प्रतिभागियों को अखिल भारतीय स्विमिंग एसोसिएशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और अंतरराष्ट्रीय रेफरी कमलेश नानावटी, एक अन्य अंतरराष्ट्रीय जल खेल रेफरी संकेत सिंधे और द्रोणाचार्य अवार्डी तपन पाणिग्राही ने ऑनलाइन माध्यम से मार्गदर्शन दिया। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता हासिल करने के सरल तरीकों की व्याख्या की। असम के वरिष्ठ प्रशिक्षकों और रेफरियों, जैसे रवींद्र मोदक, बाबुल गुरंग और फरीद अली ने जल खेलों के नियम-कानून और उनकी बारीकियों पर विस्तार से चर्चा की। असम स्विमिंग एसोसिएशन के महासचिव भास्कर रंजन दास ने कहा कि एसोसिएशन का उद्देश्य असम से अंतरराष्ट्रीय तैराकों और रेफरियों का निर्माण करना है।

बाइक व ट्रक की हुई आमने-सामने टक्कर से बाइक सवार दो युवकों की मौत, साथी घायल

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। बंथरा इलाके में शनिवार देर शाम एक बाइक और ट्रक की आमने-सामने हुई टक्कर में बाइक सवार दो युवकों की मौत हो गई। जबकि उनका एक साथी घायल हो गया। जिसे ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया है। वहीं पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बंथरा के रतौली गांव निवासी रंजीत कुमार धीमान (33) गांव में ही रहने वाले अपने साथी रोहित रावत (27) और मोहित शर्मा (24) के साथ शनिवार करीब 7:30 बजे बाइक से बनी - मोहनलालगंज रोड स्थित भागू खेड़ा चौराहे से घर जा रहा था। तभी चौराहे से करीब 30 मीटर आगे बढ़ते ही बिजनौर - सिसेंडी रोड पर बिजनौर की ओर से सामने आ रही ट्रक (एचआर 38 एजी 0120) ने उनकी बाइक में जोरदार ठोकर मार दी। इस हादसे में रंजीत धीमान की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जबकि रोहित और मोहित गंभीर रूप से घायल हो गए। रोहित को पीजीआई स्थित ट्रामा 2 भेजा गया। जहां शनिवार देर रात उसने इलाज के दौरान दम तोड़ दी। वहीं मोहित शर्मा की केजीएमयू स्थित ट्रामा सेंटर में हालत नाजुक बनी हुई है। घटना के बाद ट्रक चालक अपना वाहन छोड़कर भाग निकला। घटना से गुस्साए ग्रामीणों ने ट्रक में आग लगाने की कोशिश की। लेकिन मौके पर पहुंची तीन थानोंबंथरा, बिजनौर और मोहनलालगंज पुलिस ने ग्रामीणों को किसी तरह समझा बुझाकर शांत किया। उधर पोस्टमार्टम के बाद रंजीत और रोहित के शव एक साथ रविवार दोपहर बाद करीब 3 बजे गांव पहुंचे तो गांव में मातम छा गया। बाद में पुलिस की मौजूदगी में दोनों का गांव के बाहर अंतिम संस्कार कर दिया गया। मृतक रंजीत प्लंबरिंग का काम करता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी प्रीति के अलावा चार बेटी दिव्यांशी, वंदना, नैना और सुनैना है। जबकि मृतक रोहित डीजे संचालक था। उसके परिवार में पत्नी किरन के अलावा दो बेटे पार्थव अयांश और एक बेटी अनन्या है।

प्राचीन हनुमान मंदिर पर संपन्न हुआ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संस्कार शाखा का वार्षिकोत्सव

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की संस्कार शाखा का वार्षिकोत्सव नगर क्षेत्र के प्राचीन हनुमान मंदिर पेरुवा ताल पर सम्पन्न हुआ। इस मौके पर संघ के अवध प्रांत के सह प्रांत प्रचारक संजय ने बताया कि संघ की शाखा पर व्यक्ति का निर्माण होता है। उन्होंने बताया कि डॉ हेड गेवार ने 1925 में शाखा के माध्यम से समाज को तैयार किया था जो आज विश्व में लगभग सभी देशों में किसी न किसी आयाम में फैला हुआ है उन्होंने कहा कि हम जो भी कार्य करते हैं उसका परिणाम समाज में देखने को मिलता है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में पहली शाखा 1937 में काशी में लगाई गई थी हम खेल के माध्यम से भी माँ भारती के प्रति स्वयं सेवकों में मातृभूमि के प्रति आदर भाव प्रगट करते हैं हम गीत भी गाते हैं,हमारे एक-एक कार्यक्रम हमें बल प्रदान करते हैं।हमारा उद्देश्य सम्पूर्ण हिंदू समाज को एक जुट करना है।नगर बौद्धिक प्रमुख ओम प्रकाश मिश्र ने बताया कि संस्कार शाखा वर्ष भर में कई प्रकार के सेवा का कार्य भी करती है जैसे गरीब बच्चों को पढ़ाना चिकित्सा शिविर का आयोजन,तीर्थ स्थल की सफाई आदि। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिला प्रचारक आकाश, नगर संघचालक श्रीनारायण मेहरोत्रा,संस्कार शाखा के शाखा कार्यवाह अनिल , सूर्यांश,आलोक,हर्षित संस्कार,सलिल,सर्वेश, विनीत व अन्य प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे।

निरसा में चोरों को पुलिस का नहीं है कोई डर। 10 लाख का केबल के साथ होमगार्ड का 30 जिंदा कारतूस भी ले गये

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

चिरकुंडा/ धनबाद। निरसा में चोरों का आतंक लगातार जारी है। लगभग 10 लख रुपए मूल्य के केवल और ट्रांसफार्मर का कॉपर के साथ-साथ झारखंड पुलिस होमगार्ड के जवान का 30 जिंदा कारतूस गोली भी लेकर चलते बने घटना बिती रात की है निरसा थाना अंतर्गत हाथ बाड़ी मोड स्थित इसीएल भिटी पंप में लगभग 25 से 30 की संख्या में हथियार से लैस चोरों ने धावा बोला, जमकर लूटपाट मचाई और आराम से घटना अंजाम दिया। इसीलिए के भीटी पंप में मौजूद सुरक्षा कर्मियों ने सारा मामला बताया भीटी पंप पर सुरक्षा में झारखंड पुलिस बल का होमगार्ड सरयू यादव और तूफानी राय ने बताया कि रात के लगभग 12:00 बजे 25 से 30 की संख्या में हथियार से लेस चोरों ने पीछे की दीवार से फनकार धावा बोला और उन लोगों को अपने कब्जे में ले लिया चोरों ने उन लोगों के सिर पर पिस्टल रख दिया और उनके हथियार तथा 30 गोली भी छीन लिया इसके बाद उन लोगों को पास के कमरे में बंद कर दिया ट्रांसफार्मर को आराम से खोलकर उसका सारा कॉपर लोहा निकाल लिए तथा सर्विस लाइन में लगा हुआ सारा केवल भी काट लिया और आराम से चलते बने सुबह के लगभग 6:00 बजे जब इसीलिए की सुरक्षा टीम उन्हें लेने आई तो उन लोगों ने दरवाजे के अंदर से उन्हें आवाज दी और उन लोगों ने दरवाजा खोलकर बाहर निकाल बाहर निकलने पर उन लोगों ने देखा कि कुछ दूरी पर झाड़ी में उनकी बंदूक फेंकी हुई है पर गोली नहीं मिले उसके बाद इसकी अधिकारी ने बताया कि बीती रात यह घटना घटी है जिसमें 30 गोली के साथ-साथ ट्रांसफार्मर और केवल की भी लूट हुई है और वे सभी निरसा थाने में जाकर इसका लिखित शिकायत भी दर्ज करवा रहे हैं। जब चोरों का मनोबल इतना बड़ा हुआ है कि उन लोगों ने केवल के साथ-साथ वहां तैनात सुरक्षा कर्मियों का हथियार भी लूट लिया इस पूरे लूट कांड में लगभग 10 लख रुपए की लूट बताई जा रही है पिछले दिनों चोरों द्वारा काली माता कॉलोनी में पांच घरों को निशाना बनाया और लगभग 15 लाख की संपत्ति चोरी कर ली। निरसा पुलिस इस चोरी को सुलझा पाती तबतक चोरों ने इस नई घटनाओं को अंजाम देकर उन्हें फिर से पुलिस को उलझा दिया।

ऑटो और ट्रैक्टर ट्राली की जोरदार टक्कर, 2 की मौत, 3 घायल

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। बिलग्राम थाना क्षेत्र में रविवार को रफ्तार का कहर फिर से देखने को मिला, जब एक ऑटो और ट्रैक्टर ट्राली से जोरदार टक्कर हो गई। हादसे में ऑटो सवार पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को सीएचसी में भर्ती कराया, जहां पर दो लोगों की मौत हो गई। दरअसल यह भीषण हादसा बिलग्राम क्षेत्र के परसोला गांव के पास हुआ। घटना के समय ऑटो पर इंदू सिंह, उनकी 4 वर्षीय पुत्री महक, संजय, अफसर, रामबक्स और अन्य लोग सवार थे। इंदू सिंह अपनी बेटी के साथ इलाज के लिए बिलग्राम जा रही थी, वहीं संजय भी उसी रास्ते पर था। अचानक तेज गति से आ रहे ट्रैक्टर ट्राली ने ऑटो को टक्कर मार दी, इस हादसे में इंदू सिंह, महक, संजय, अफसर और रामबक्स बुरी तरह से घायल हो गए। पुलिस व स्थानीय लोगों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने अफसर और रामबक्स को मृत घोषित कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक हादसा इतना भीषण था कि ऑटो के परखच्चे उड़ गए। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और हादसे की जांच शुरू कर दी है। बिलग्राम और हरदोई जिले में पिछले कुछ दिनों में कई बड़े सड़क हादसे हो चुके हैं, जिनमें दर्जनों लोगों की जान चली गई। इसके बावजूद प्रशासन की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। सड़क पर वाहनों की तेज गति और यातायात नियमों का उल्लंघन लगातार हादसों को बढ़ावा दे रहा है। स्थानीय लोगों ने जिला प्रशासन से सख्त कदम उठाने की मांग की है ताकि आगे इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके।

अपनी दयनीय हलात पर आसूं बहा रहा है कमुवा का अस्थाई गौशाला

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। निराश्रित पशुओं से किसान आह भर रहे हैं। जिम्मेदार बेपरवाह बने हुए हैं। निराश्रित पशुओं से बचाव के लिए हालांकि गौशाला निर्माण की पहल की गई है,लेकिन पशुओं के झुंड खेतों में पहुंचकर लगी फसलों को नष्ट कर रहे हैं। किसान फसलों की रख वाली में दिन-रात जुटे रहते हैं।इसके बावजूद भी अपनी गाढ़ी कमाई की फसलों को नहीं बचा पा रहे हैं शिकायत कर्ता भगवती पुत्र चक्कर निवासी ग्राम कमुवा ने बने गौशाला में प्रधान द्वारा रात में जानवर खोल दिए जाते हैं जिससे प्रार्थी के खेत में लगे आठ बीघा गेहूं निराश्रित गौवंश चर गए।ग्राम प्रधान द्वारा भूसा व दान गायब कर दिया जाता है अगर मौके पर देखा जाए तो चक्की में दाना व भूसा नहीं मिलेगा। लिखित में तो गौ आश्रय स्थल में चार केयर टेकर हैं लेकिन मौके पर दो ही केयर टेकर दिखते हैं। फिर भी रात में कोई केयर टेकर नहीं रहता है जिस कारण निराश्रित गौवंशों की हालत बहुत दयनीय है।समुचित देखरेख के अभाव में आए दिन रोजाना लगभग दो से चार गौवंश मर रहे हैं जिनको कुत्ते सियार नोच नोच कर खा रहे हैं। कमवा गांव निवासी राम पाल ने बताया कि रात में गेट खोलकर गौवंश निकाल दिए जाते हैं गौशाला में गौवंशों को चारा भूसा कुछ नहीं दिया जाता वहीं दूसरे किसान राम लखन ने बताया है दो दिन से कमवां के अस्थाई गौशाला स्थल का गेट खोलकर प्रधान के द्वारा रात में गौवंश बाहर छोड़ दिए जाते हैं।

नशामुक्त महिला फुल मैराथन दौड़ की एक लाख की भीड़ में सिधौली विधानसभा से लखनऊ पहुंचेंगे दस हजार लोग

वर्ष 2025 को नशा मुक्त बनाने के लिए 31 दिसम्बर 2024 को प्रातः 10:00 बजे से शुरू होगी महिला फुल मैराथन दौड़

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता
राकेश पाण्डेय

सीतापुर। देश की सबसे ज्यादा पुरुस्कार वाली नशा मुक्त महिला फुल मैराथन का आयोजन नशामुक्त भारत अभियान के तहत नशामुक्त समाज आन्दोलन अभियान कौशल का के तत्वाधान में लखनऊ के दुबग्गा से मिठौली रोड पर किया जा रहा है। इस महिला मैराथन में हिमांचल प्रदेश के राज्य पाल शिव प्रताप शुक्ला मुख्य अतिथि के रूप शामिल होकर मैराथन की प्रतिभागियों को हरी झंडी दिखाकर मैराथन की शुरुआत करेंगे। इस नशामुक्त महिला मैराथन के आयोजक एवं भारत सरकार के पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर ने जानकारी देते हुए कहा कि इस नशा मुक्त महिला फुल मैराथन का उद्देश्य आगामी आने वाले नए वर्ष 2025 में नई पीढ़ी के लड़के व लड़कियां जो अभी नशे की शुरुआत नहीं किए हैं उनको नशे की शुरुआत करने से रोकने का है यदि नई पीढ़ी के लोग नशा नहीं शुरू करेंगे तो नशे के ग्राहकों की संख्या घटती जाएगी और नशे के सौदागर नशे का कारोबार अपने आप खत्म कर देंगे। पूर्व केन्द्रीय मंत्री कौशल किशोर ने यह भी जानकारी दी कि इस मैराथन में जो महिला प्रथम आएगी उसको पांच लाख का पुरस्कार व द्वितीय आने वाली महिला को तीन लाख रुपये का पुरस्कार व तृतीय स्थान पर आने वाली महिला को डेढ़ लाख रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा अन्य पचास महिलाओं को भी मिलाकर कुल पच्चीस लाख रुपये का पुरष्कार दिया जाएगा। सबसे खास बात यह है कि इस नशामुक्त महिला मैराथन का आयोजन के सभी पुरस्कार जनसहयोग से किए जा रहे हैं जिसमें लगभग पांच हजार महिलाएं इस मैराथन में भाग ले रही हैं इस महिला मैराथन में शिक्षक, वकील,डॉक्टर,व्यापारी, कर्मचारी,शिक्षा मित्र,शिक्षा प्रेरक,विद्यालय प्रबंधक समिति के लोग सहित सभी वर्ग व सभी समुदाय के लोग शामिल हो रहे हैं।सभी का एक ही मकसद है अपने बच्चों व पड़ोस के बच्चों तथा भारत को नशे से बचाना इस अभियान में सभी लोग शामिल होकर नशामुक्त परिवार व नशामुक्त भारत बनाने में आगे आयें। विधानसभा सिधौली के प्रभारी दुर्गेश सिंह ने बताया सिधौली विधानसभा से दस हजार लोग कार्यक्रम में शामिल होंगे।

जिलाधिकारी ने जिला शिक्षा अनुश्रवण समिति, मिड-डे-मील टास्क फोर्स के साथ समीक्षा बैठक की

मध्यान्ह भोजन में खाने की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए, निर्धारित दिवस को फल, दूध उपलब्ध कराया जाए-जिलाधिकारी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी

मैनपुरी। जिलाधिकारी अंजनी कुमार सिंह ने जिला शिक्षा अनुश्रवण समिति, मिड-डे-मील टास्क फोर्स बैठक की समीक्षा के दौरान खंड शिक्षाधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अपने-अपने क्षेत्र के विद्यालयों का नियमित रूप से निरीक्षण करें, शिक्षक समय से उपस्थित हों, विद्यालय में पंजीकृत सभी छात्र प्रतिदिन विद्यालय आएं, शिक्षक बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करें, विद्यालयों के शैक्षणिक वातावरण में सुधार दिखे, जो बच्चे नियमित रूप से विद्यालय नहीं आ रहे हैं, उनके अभिभावकों से संवाद कर बच्चों को प्रतिदिन विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने समीक्षा के दौरान असंतोष व्यक्त करते हुए कहा कि खंड शिक्षाधिकारी क्षेत्र कुरावली, सुल्तानगंज में विद्यालयों का मानक के अनुसार ब्लॉक स्तरीय टास्क फोर्स समिति द्वारा निरीक्षण नहीं किया जा रहा है, खंड विकास अधिकारी सुल्तानगंज द्वारा एवं जिला स्तरीय टास्क फोर्स में अपर मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला विकास अधिकारी द्वारा मानक के अनुसार विद्यालयों का निरीक्षण नहीं किया गया है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को हिदायत देते हुए कहा की प्रतिमाह कम से कम 05-05 विद्यालयों का निरीक्षण कर प्रेरणा पोर्टल पर निरीक्षण अख्या अपलोड करें। उन्होंने जिला बेसिक शिक्षाधिकारी से कहा कि विद्यालयों का नियमित रूप से निरीक्षण करें। बी.एस.ए. ने बताया कि निरीक्षण में विद्यालय से अनुपस्थित पाए जाने वाले 143 शिक्षकों का वेतन रोका गया है, जबकि 02 शिक्षकों को प्रतिकूल प्रविष्टि प्रदान की गई है। उन्होंने जिला बेसिक शिक्षाधिकारी, खंड विकास अधिकारियों, खंड शिक्षाधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि जनपद के समस्त परिषदीय विद्यालय ऑपरेशन कायाकल्प के तहत 19 बिंदुओं से संतृप्त कराये जायें, जानकारी करने पर पाया कि अधिकांश विद्यालय 16 बिंदुओं से संतृप्त हो चुके हैं, अभी कुछ विद्यालयों में फर्नीचर, विद्युतीकरण, दिव्यांग शौचालय, बाउंड्री-वॉल का निर्माण नहीं हुआ है, विकास खंड करहल के 03 विद्यालयों में विद्युतीकरण का कार्य अवशेष है, विद्युत विभाग को उक्त विद्यालय में विद्युतीकरण हेतु उपलब्ध कराए गए इस्टीमेट का भुगतान भी किया जा चुका है, जिस पर उन्होंने अधिशासी अभियंता विद्युत को निर्देशित करते हुए कहा कि तत्काल अवशेष विद्यालयों में विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। श्री सिंह ने समीक्षा के दौरान पाया कि अभी जनपद में 12570 छात्रों के आधार वेरिफिकेशन का कार्य अपूर्ण है, जिसमें सर्वाधिक पेंडेंसी विकास खंड कुरावली, करहल में है, जिस पर उन्होंने संबंधित खंड शिक्षाधिकारियों को आदेशित करते हुए कहा कि उप जिलाधिकारी, खंड विकास अधिकारी से समन्वय स्थापित कर अवशेष छात्रों के जन्म संबंधी प्रमाण पत्र जारी कराकर आधार कार्ड बनवाना सुनिश्चित करें ताकि पंजीकृत छात्रों को शासन की योजना का लाभ मिल सके। उन्होने कहा कि परिषदीय विद्यालयों में बच्चों को मध्यान्ह भोजन निर्धारित मीनू के अनुसार पूर्ण गुणवत्ता के साथ उपलब्ध कराया जाये, निर्धारित दिवस को निर्धारित मात्रा में शुद्ध, ताजा दूध एवं ताजे फल छात्रों को उपलब्ध कराये जायें, किचिन में साफ-सफाई के बेहतर प्रबन्ध हों। बैठक में मुख्य चिकित्साधिकारी डा. आर.सी. गुप्ता, परियोजना निदेशक डी.आर.डी.ए. सत्येन्द्र सिंह, उपायुक्त मनरेगा शोकत अली, जिला समाज कल्याण अधिकारी अशोक कुमार, जिला पूर्ति अधिकारी क्यामुद्दीन असांरी, बाल विकास परियोजना अधिकारी हरीओम बाजपेयी, खंड विकास अधिकारी, खंड शिक्षाधिकारी, अधिशाषी अधिकारी नगर निकाय आदि उपस्थित रहे, बैठक का संचालन जिला बेसिक शिक्षाधिकारी दीपिका गुप्ता ने किया।

मुकाबला-ए-हुस्ने किरात का भव्य आयोजन,मिर्जा मोहम्मद अब्बास तजवीद-ओ-किरात) - प्रथम स्थान

❑ कार्यक्रम का शुभारंभ क़ारी नदीम नजफी ने कुरान पाक की तिलावत से किया
❑ मुख्य अतिथियों ने इस आयोजन को अपनी तरह का अलग और उच्च स्तरीय कार्यक्रम बताया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। शिया कॉलेज, विक्टोरिया स्ट्रीट में मजलिसे उलमा शिया कॉलेज की निगरानी और शिया अरबी कॉलेज के तत्वावधान में मुकाबला-ए-हुस्ने किरात का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ क़ारी नदीम नजफी ने कुरान पाक की तिलावत से किया। मौलाना यासूब अब्बास ने प्रारंभिक संबोधन में आए हुए मेहमानों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में कई प्रमुख हस्तियों ने शिरकत की, जिनमें मौलाना सैय्यद जाहिद अहमद रिज़वी, मौलाना जाफर अब्बास, मौलाना सैय्यद पयाम हैदर रिज़वी, और मौलाना जहीर अब्बास (मुंबई) शामिल थे। प्रबंधक अब्बास मुर्तुजा शमसी ने अपनी तकरीर में कुरआन और अहलेबैत की शिक्षाओं पर चर्चा की और आयोजनकर्ताओं को बधाई दी। मुख्य अतिथियों ने इस आयोजन को अपनी तरह का अलग और उच्च स्तरीय कार्यक्रम बताया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं युवाओं में कुरान के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उसकी गहराइयों को समझने का माध्यम हैं। मुकाबले में प्रतिभागियों ने अपनी बेहतरीन तिलावत का प्रदर्शन किया। निर्णायक मंडल, जिसमें मौलाना कारी ताहिर जाफरी, कारी सैय्यद अबू इफ्तेखार जैदी, और मौलाना मोहम्मद इब्राहीम शामिल थे, ने निम्नलिखित विजेताओं की घोषणा की गई जिसमे कारी मिर्जा मोहम्मद अब्बास (मदरसा तजवीद-ओ-किरात) - प्रथम स्थान, कारी मौलवी सैय्यद मोहम्मद तकी जाफरी (मदरसा तंजीमुल मकातिब) - द्वितीय स्थान, तो वहीं कारी मौलवी सैय्यद नकी अब्बास रिज़वी (मदरसा तंजीमुल मकातिब) - तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। वहीं विजेताओं और अन्य प्रतिभागियों को उलेमा-ए-कराम के हाथों से प्रमाणपत्र और पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मौलाना सैय्यद इस्हाक रिज़वी (प्रिंसिपल, सुल्तानुल मदारिस), मौलाना मिर्ज़ा रजा अब्बास, मौलाना सैय्यद मुम्ताज जाफर, और मौलाना शबीहुल हसन आज़मी सहित कई प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाग लिया। इनके साथ शिया कॉलेज के प्रिंसिपल प्रो. सैय्यद शबीहे रजा, शिया लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. सादिक आब्दी, वरिष्ठ पत्रकार ज़हीर मुस्तफा, और बड़ी संख्या में मोमिनीन ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम का समापन मेजबानों द्वारा सभी मेहमानों और प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए किया गया। मुकाबला-ए-हुस्ने किरात ने कुरआन पाक के महत्व और इसकी तिलावत की परंपरा को मजबूती से प्रस्तुत किया।

जलियांवाला बाग नाटक का मंचन ,एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की मनमोहक प्रस्तुतियां हुई

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। जलियांवाला बाग नाटक का मंचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति डॉक्टर एल पी लाल स्कूल लखनऊ के विद्यार्थियों द्वारा किया गया नाटक की जीवंत प्रस्तुति से वातावरण देशभक्ति के माहौल सरावोर हो गया। साथ? ही मराठा गौरव पर आधारित नाटक तानाजी का भी प्रस्तुतीकरण किया गया। डॉक्टर एल.पी. लाल स्कूल के 30 वा वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम में सर्वप्रथम सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ इसके उपरांत कार्यक्रम में स्वागत गीत प्रस्तुति पूर्वी यादव ,कीर्ति ,जयंती संपदा पांडे ने दी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक नीरज बोरा ने सभी उपस्थित जनों को शुभकामनाएं दी। और श्रेष्ठ 15 माता एवं पिता तीन श्रेष्ठ शिक्षक चार समाज सेवी को सम्मानित किया गया। विद्यालय के निदेशक शैलेंद्र नाथ श्रीवास्तव मैनेजर प्रतिमा श्रीवास्तव ने विद्यालय के चार मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित विद्यार्थियों को भी सम्मानित एवं उत्साह वर्धन किया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में कार्यक्रम में अप लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य एस के श्रीवास्तव, पूर्व आईपीएस डॉक्टर जी एस खन्ना, पूर्व अपर आयुक्त आबकारी हरिश्चंद्र एवं पूर्व शशि शेखर श्रीवास्तव ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति देकर विद्यार्थियों की प्रतिभा की प्रशंसा की। ,पापा कहते हैं समूह नृत्य कक्षा 2 ए एवं वन के नन्हे मुन्ने बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों से उपस्थित सभी महानुभावों को मंत्र मुक्त कर दिया। कक्षा 8 की छात्रा आर्या सिंह और कक्षा 9 के छात्र आयुष्मान मिश्रा द्वारा दी गई अटल जी पर विशेष प्रस्तुति दी गई। हास्य नाटक कक्षा 4 के विद्यार्थी साहिल यादव ,अंश मिश्रा ,कृष्णा गोस्वामी ,पल्लवी ,मुदित मौर्य, किशन पांडे ने दर्शकों को हंसी से गुदगुदाया। डॉक्टर एल.पी.लाल स्कूल का 30 वर्षों का सफर का वार्षिकोत्सव बड़े ही से धूमधाम संपन्न हुआ।

कार्पोरेट क्रिकेट लीग- रोमांचक मैच मे एमसीसी ने लखनऊ किंग को तीन रन से हराया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। रागधानी मे चल रही कार्पोरेट क्रिकेट लीग अंतर्गत खेले गये मैच मैच मे मशकगंज क्रिकेट क्लब एमसीसी ने लखनऊ किंग इलेवन को आखरी गेंद तक चले एक बेहद रोमांचक और संघर्षपूर्ण मैच मे तीन से हरा दिया। शिया पीजी कालेज ग्राउंड पर टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मशकगंज क्रिकेट क्लब एमसीसी ने निर्धारित 20 ओवरो मे 9 विकेट के नुकसान पर 138 रन बनाए। प्रारम्भिक बल्लेबाज क़म्बर चार रन बनाकर जलदी आउट होगये किन्तु दूसरे विकेट के लिए शीबू तथा बासू ने 25 रन की साझेदारी कर टीम को संभाला, शीबू ने तीन चौकों की मदद से 20 गेंदो में 17 तथा बासू ने 11 गेंदो पर एक चौके तथा एक छक्के की मदद से 12 रन बनाए। मध्यक्रम में दानिश ने 27 बालों पर तीन चौकों की मदद से 25 रनो की उमदा पारी खेली रिशी उपाध्याय ने 9 रन तथा नूरैन ने दस गेंदो पर एक चौके की मदद से 12 रन बनाए। लखनऊ किंग की ओर से आदिल रिजवी ने शानदार बालिंग करते हुए चार ओवरों मे मात्र 9 रन देकर चार विकेट लिए, आदर्श मिश्रा, बास सत्यद, प्रनाथ तथा श्रीवत्स द्विवेदी ने एक एक विकेट हासिल किया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी लखनऊ किंग इलेवन एमसीसी की कसी हुई गेंदबाज़ी तथा उत्कृष्ट क्षेत्ररक्षण के चलते लक्ष्य से तीन रन पीछे रह गयी। आदित्य कुमार ने एक छोर पर जमकर बल्लेबाजी करते हुए 56 गेंदो पर पांच चौकों तथा दो छक्को की मदद से सर्वाधिक 58 रन बनाए, आदिल रिजवी ने 7 गेंदो पर तीन चौकों की मदद से 13, मयंक शुक्ला ने 18 गेंदो पर एक छक्के की मदद से 14 अनुज ने 17 गेंदो पर एक चौके तथा एक छक्के की मदद से 20 रन बनाए। एमसीसी की ओर से कसी हुई गेंदबाजी करते हुए रिषी उपाध्याय ने चार ओवरों मे मात्र 12 रन देकर तीन विकेट, मोहम्मद यूसुफ ने दो ओवर मे 27 रन खर्च कर के एक विकेट हिमांशु ने चार ओवरों मे 26 रन पर एक, तथा नूरैन ने दो ओवर मे मात्र 9 रन देकर एक विकेट लिया। इसके अतिरिक्त मध्य के ओवरो मे अतहर ने कसी हुई गेंदबाज़ी करते हुए चार ओवरों मे मात्र बीस रन दिए तथा अनुभवी विनोद कुमार ने चार ओवरों मे 28 रन जरूर दिए किन्तु अंतिम ओवर मे सात रन का बाखूबी बचाव कर अपना अनुभव एव कौशल प्रस्तुत किया।

महफिल-ए-मसालमा का आयोजन

❑ शायरी और सांस्कृतिक सौहार्द्र का एक बेहतरीन उदाहरण
❑ महफिल में देश के विभिन्न हिस्सों से आए शायरों ने अपने उम्दा कलाम पेश किए

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ रविवार को सिरसी के मोहल्ला शर्की में शायरिस्तान फाउंडेशन के तत्वाधान में आयोजित महफिल-ए-मसालमा का यह आयोजन शायरी और सांस्कृतिक सौहार्द्र का एक बेहतरीन उदाहरण था। इस महफिल में देश के विभिन्न हिस्सों से आए शायरों ने अपने उम्दा कलाम पेश कर महफिल को यादगार बनाया। मसालमा का आगाज मौलाना जुहैब रज़ा ने हदीसे किसा पढ़कर किया, और संचालन फाउंडेशन के को-फाउंडर अब्बास सिरसीवी ने किया। इस महफिल की अध्यक्षता विकार मेहदी सिरसीवी ने की। दिए गए मिसरे जो बा अमल हो वो रुसवा कभी नहीं होता पर आधारित शायरी ने महफिल में चार चांद लगा दिए। शायरों ने अपने कलाम के जरिए न केवल गहरी भावनाओं को व्यक्त किया, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक संदेश भी दिए। जैसे, सबा सिरसीवी ने ज़िंदगी और इरादे की बात की, तो राना सिरसीवी ने कर्बला की घटना को अपने शेर में ढाला।महफिल में विभिन्न शायरों द्वारा पढ़े गए शेर हुसैनी इश्क़, इंसानी मूल्यों और आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत थे। इसके अतिरिक्त, हुनैन सिरसीवी और अन्य ने नाते पाक पढ़कर समा बांध दिया। कार्यक्रम के अंत में आयोजक शमीम सिरसीवी, फाउंडेशन के डायरेक्टर दानिश ग़दीरी, और सेक्रेटरी मेहदी सिरसीवी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। विकार मेहदी साहब ने कार्यक्रम का समापन देश में सुख-शांति की दुआ के साथ किया। यह आयोजन साहित्य और सांस्कृतिक परंपरा के संवर्धन का एक अनुकरणीय प्रयास रहा।

दुबग्गा क्षेत्र में चोरी की घटनाओं में बढ़ोतरी, पुलिस को मिल रही चुनौती

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। दुबग्गा थाना क्षेत्र में चोरी की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है, जिससे पुलिस के लिए समस्या खड़ी हो गई है। स्थानीय लोग अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं, वहीं पुलिस की ओर से कोई ठोस कार्रवाई न होने पर नाराजगी भी बढ़ रही है। बीते बुधवार रात आम्रपाली स्वीट हाउस के पास स्थित एक डायग्नोस्टिक सेंटर के डॉक्टर की स्प्लेंडर मोटरसाइकिल चोरों ने चोरी कर ली। यह घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई, जिसमें चोर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। बावजूद इसके, अब तक पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की है, जिससे स्थानीय लोग असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। क्षेत्र में पहले भी कई चोरी की घटनाएं हो चुकी हैं, जिसमें बुलेट बाइक और चार पहिया वाहन भी चोरी हो चुके हैं।

समाचार

सुन्नी इंटर कॉलेज का 78वां वार्षिक उत्सव संपन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। शिक्षा क्षेत्र में राजधानी शहर के सबसे चर्चित और पुराने संस्थानो में से विक्टोरिया गंज स्थित सुन्नी इण्टर कॉलेज का आज दिनांक 28 दिसम्बर 2024 को 78वां वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया। जिसमे मुख्य अतिथि राज्यमंत्री माननीय दानिश आज़ाद की उपस्थिति भी इस कार्यक्रम में चार चांद लगा रही थी। समारोह में मैनेजर एडवोकेट साद सिद्दीकी और प्रधानाचार्य शकील अहमद ने आए हुए लोगो का स्वागत किया। कार्यक्रम का सफल संचालन उप-प्रधाचार्य अनवर कादिर द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कॉलेज के छात्र मो. ताल्हा ने कलाम पाक की तिलावत करके की। इसके बाद मो. यासिर और उनकी टीम ने कव्वाली पेश की। इसके बाद शिक्षा के लिए बच्चों ने एक कार्यक्रम पेश किया। मशहूर लेखक शयर इरशाद राही ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा की पढ़ाई में आगे बढ़ना है अपना और अपने देश का नाम रोशन करना है। छात्र - छात्राओं द्वारा मोबाइल की बढ़ती हुई आदत और उसके दुष्प्रभाव पर कार्यक्रम पेश किया गया साथ ही बच्चों ने अनेक सामाजिक संदेश कार्यक्रम पेश किए। कॉलेज के अध्यापक व पिछले साल कॉलेज में टॉप करने वाले छात्रों को अवॉर्ड और सर्टिफिकेट से नवाजा गया व टीचर्स को भी अवॉर्ड से नवाजा गया। इस कार्यक्रम में कॉलेज के मैनेजमेंट के पदाधिकारी और कॉलेज के सभी अध्यापक, अध्यापिकाएं और ऑफिस के स्टाफ के सभी लोग उपस्थित थे। इस मौके पर मो. अहमद खान अदीब, जियाउद्दीन, वक़ी सिद्दीकी, शफी सिद्दीकी, रफीक सिद्दीकी, मो. अनीस, आरिज़ बेग, इम्तियाज़, अब्दुल वहीद फारूकी, पार्षद राजू बाजपेई, शहरोज कुरैशी, जहीर सिद्दीकी, एडवोकेट सैय्यद अकील, जुल्करनैन, मुशर्रफ आदि उपस्थित थे।

एडीओ पंचायत का पद नाम खंड पंचायत राज अधिकारी करने की मांग

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सहायक विकास अधिकारी पंचायत सेवा संघ की महत्वपूर्ण बैठक आज दिनांक 29 दिसम्बर 2024, रविवार को लोहिया भवन सभागार में संपन्न हुई। बैठक में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार किया गया। प्रदेश भर से आए एडीओ पंचायत ने अलग-अलग बिंदुओं पर अपनी राय रखी। बैठक की अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष मैनेजर सिंह द्वारा की गई। संघ के महामंत्री कमल किशोर शुक्ल ने कहा की पदनाम परिवर्तन होना अति आवश्यक है सरकार से मांग है एडीओ पंचायत का पद नाम बदलकर खंड पंचायत राज अधिकारी किया जाए तथा बढ़े हुए कार्यों को देखते हुए विकास खंड स्तर पर नया राजपत्रित अधिकारी का पद सृजित किया जाए। 2016 के शासनादेश को या तो पूर्ण रूप से लागू किया जाए या इसे रद्द किया जाए। अपर जिला पंचायत राज अधिकारी पद पर प्रोन्नति की अवधि 12 वर्ष से घटाकर 3 वर्ष किया जाए जो की पूर्व में था। संघ के अध्यक्ष मैनेजर सिंह द्वारा बैठक में उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा अपने संबोधन में बताया कि संगठन द्वारा सभी मांगों पर प्रत्यावेदन दिए गए हैं, जिन्हें शीघ्र ही पूर्ण कराए जाने का प्रयास किया जाएगा। जनपदों से अन्य जिला अध्यक्षों ने अपने-अपने सुझाव से संगठन को अवगत कराया। बैठक में प्रदेश के करीब 50 जिलों के एडीओ पंचायत उपस्थित रहे। इनमें मनोज कुमार सिंह, शंभू नाथ पाठक, जितेंद्र सिंह, आनंद सिंह, शिव शंकर सिंह, अनिल मिश्र, नरेश द्विवेदी, शशांक सक्सेना, अशोक सिंह, राजकमल, अनिल बाजपेई प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

सीमेंट डीलर्स एसोसिएशन का शपथग्रहण संपन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सीमेंट डीलर्स एसोसिएशन (रजि.) का शपथग्रहण समारोह हरदोई बाईपास बुद्धेश्वर चौराहा के निकट द एलीट कन्वेंशन होटल में प्रदेश महामंत्री सुभाष अग्रवाल के आयोजन एवं जिला ईकाई संरक्षक मनीष अग्रवाल जी के संयोजन में किया गया। लखनऊ सीमेंट व्यापारियों ने उ प्र सीमेंट व्यापार संघ के संरक्षक नरेश जैन, प्रदेश अध्यक्ष श्याममूर्ति गुप्ता, वरिष्ठ महामंत्री मनीष मोदी, कार्यवाहक अनिल जैन आदि प्रदेश पदाधिकारियों का एवं व्यापारी नेता सुनील कुमार गुप्ता तथा अजय त्रिपाठी मुन्ना और लोहा व्यापार मंडल अध्यक्ष विशाल अग्रवाल जी का सहर्ष स्वागत किया और उनके द्वारा शपथग्रहण कराने का निवेदन किया। प्रदेश अध्यक्ष श्याममूर्ति गुप्ता ने उपस्थित कई कम्पनियों के अधिकारियों का शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया और कुछ पदाधिकारियों को शपथ कराने के लिए उन्हें भी आमंत्रित किया। प्रिज्म, अल्ट्राटेक और डालमिया सीमेंट की ओर से अध्यक्ष अभिषेक जी को पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया। जिला ईकाई संरक्षक मनीष अग्रवाल, जिला अध्यक्ष अभिषेक मंसानी, जिला वरिष्ठ महामंत्री जिम्मी गर्ग, जिला कोषाध्यक्ष निर्मल गुप्ता, जिला कार्यवाहक अध्यक्ष आकाश हूजा, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष अर्पित जैन जी के साथ संगठन मंत्री महेंद्र गोयल एवं अंकुर जैन और जीएसटी प्रभारी सीए सार्थक जैन, लीगल प्रभारी आई एम पांडे, मल्टीमीडिया संयोजक अंशुल अग्रवाल और परिवहन प्रभारी सागर वर्मा एवं रवि यादव के साथ दस उपाध्यक्ष और दस महामंत्री विजय साहू, सुरेंद्र सचदेव, मुदस्सर नज़र, विवेक सिंह, भास्कर गुप्ता, निखिल सिंह, मो.सलाउद्दीन, ज्ञानेन्द्र अवस्थी, अम्बुज कुमार, मनीष यादव, कमल अग्रवाल, डी के मिश्रा आदि को दायित्व देने के साथ शपथ दिलाई गई। सभी पदाधिकारियों ने हर समय समस्या पर विचार करने और संगठन हित में काम करने का वादा किया। श्याममूर्ति गुप्ता एवं सुनील कुमार गुप्ता तथा अजय त्रिपाठी मुन्ना ने संयुक्त रूप से शासन से मांग करी कि सीमेंट को विलासिता वस्तुओं से अलग करके अठारह प्रतिशत की दर में किया जाये और यह जीएसटी लागू कर्ता स्व अरुण जेटली जी का वादा भी था जिसे सरकार ने अभी तक पचपनवीं बैठक तक पूरा नहीं किया। सभी ने सुभाष अग्रवाल जी को संयोजन के लिए धन्यवाद दिया और पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी के निधन पर शोक प्रस्ताव देकर दो मिनट के लिए मौन रखा गया और फिर डिनर के लिए सभी को मनीष अग्रवाल जी ने आग्रह किया। सभी मीडिया बन्धुओं को सभी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त जानकारी आज उत्तर प्रदेश सीमेंट डीलर्स एसोसिएशन की ओर से प्रदेश मीडिया प्रभारी मनोज सिंह एवं प्रवीण खंडेलवाल ने उपलब्ध कराई ।

नगर निगम कर्मियों और बांग्लादेशी सफाई कर्मियों से घमासान, महापौर ने पुलिस को लगाई फटकार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। रविवार को इंदिरा नगर थाना क्षेत्र में इंदिरा प्रियदर्शनी वार्ड में नगर निगम कर्मियों और अवैध रूप से काम कर रहे बांग्लादेशी सफाई कर्मियों के बीच मारपीट की घटना से हड़कंप मच गया। यह घटना उस समय हुई जब नगर निगम कर्मी क्षेत्र में अवैध ठेलों पर कार्रवाई कर रहे थे। मारपीट की खबर सुनकर लखनऊ पूर्वी के विधायक ओपी श्रीवास्तव ने तुरंत हस्तक्षेप किया और पुलिस के उच्च अधिकारियों, नगर आयुक्त, और महापौर को मौके पर बुलाया। विधायक ने मौके पर ही अवैध अतिक्रमण और नगर निगम कर्मियों पर हुए हमले को लेकर पुलिस की कार्यप्रणाली पर कड़ी फटकार लगाई। घटना पर नाराजगी जाहिर करते हुए महापौर ने कहा, अगर लखनऊ के नगर निगम कर्मियों को इस तरह पीटा जाएगा, तो मेरे मेयर पद पर रहने का क्या मतलब है? उन्होंने पुलिस पर आरोप लगाया कि उनकी सहमति से अवैध अतिक्रमण करवाया जा रहा है। घटना के बाद मौके पर पहुंचे पुलिस के उच्च अधिकारियों और नगर आयुक्त ने तत्काल कार्रवाई का भरोसा दिलाया। यह मामला कैसे शुरू हुआ बताते हैं यह बवाल तब शुरू हुआ जब नगर निगम कर्मियों द्वारा अवैध ठेलों पर कार्रवाई की जा रही थी। इस दौरान अवैध रूप से क्षेत्र में काम कर रहे बांग्लादेशी सफाई कर्मियों ने नगर निगम कर्मियों के साथ झगड़ा शुरू कर दिया। वही पुलिस और नगर निगम के अधिकारियों ने आश्वासन दिया है कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और क्षेत्र में अवैध अतिक्रमण को पूरी तरह से हटाया जाएगा। यह घटना नगर निगम कर्मियों की सुरक्षा और क्षेत्र में अवैध गतिविधियों पर प्रशासन की प्रभावी कार्यवाही की आवश्यकता को उजागर करती है।

छात्रों ने शिक्षात्मक व सांस्कृतिक कार्यक्रम किए पेश

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सीएमएस इन्दिरा नगर कैम्पस की ओर से आयोजित एनुअल पैरेन्ट्स डे समारोह में छात्रों ने एक से बढ़कर एक शिक्षात्मक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देकर अभिभावकों का दिल जीता। सीएमएस गोमती नगर विस्तार में आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि विधायक ओपी श्रीवास्तव ने कहा कि अभिभावकों को समर्पित यह कार्यक्रम संदेश देता है कि अभिभावक अपने बच्चों का नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास कर सामाजिक विकास में रचनात्मक भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों को बचपन से ही एकता व शान्ति के विचार देने चाहिए। विश्व एकता प्रार्थना में छात्रों ने विभिन्न देशों के राष्ट्रीय ध्वज हाथों में लेकर %सारे विश्व में शान्ति हो का जयघोष किया। %वर्ल्ड पार्लियामेन्ट कार्यक्रम की ओर से छात्रों ने विश्व संसद की आवश्यकता की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया। इन्दिरा नगर कैम्पस के छात्रों ने लोकनृत्य, क्रिसमस कैरल्स, म्युजिकल ड्रामा, परकुशन बैण्ड, लघु नाटिक, कव्वाली आदि विभिन्न रंगारंग कार्यक्रम पेश किये। सीएमएस संस्थापिका-निदेशिका डॉ. भारती गांधी ने कहा कि इस प्रकार के समारोह भावी पीढ़ी की बहुमुखी प्रतिभा को निखारने के साथ ही उनमें जीवन मूल्यों व चारित्रिक उत्कृष्टता का विकास करने में बहुत महत्वपूर्ण है।

अलौकिक नगर कीर्तन में गुरु गोबिंद सिंह जी की गौरव गाथा एवं जयकारों से गूंजी राजधानी

➢ नगर कीर्तन में उमड़ा आस्था का सैलाब, जगह - जगह हुआ नगर कीर्तन का स्वागत
➢ नगर कीर्तन के गुरुद्वारा साहिब पहुंचने पर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शाही सवारी को पेश किया गया गार्ड ऑफ ऑनर

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सनातन धर्म एवं राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर देने वाले सरवंश दानी, महान जरनैल एवं सिक्खों के दसवें गुरू साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व पर एक भव्य अलौकिक नगर कीर्तन पांच प्यारों की अगुवाई एवं फूलों से सुसज्जित भव्य पालकी साहिब में विराजमान श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की छात्रछाया में निकाला गया। श्रद्धालुगण पालकी साहिब के आगे मार्ग की सफाई करके श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की शाही सवारी के लिये मार्ग पर पुष्प बिछा रहे थे। जगह जगह पुष्प वर्षा कर श्रद्धालुओं द्वारा नगर कीर्तन का स्वागत किया जा रहा था। सिक्ख सेवक जत्थे, दलजीत सिंह बग्गा (कार्यालय सचिव) सुरिंदर पाल सिंह मोनू बख्शी (कोषाध्यक्ष) तथा अन्य सदस्यों के नेतृत्व में गुरूद्वारा नाका हिण्डोला से चलकर यह नगर कीर्तन नाका हिंडोला चौराहा, चारबाग, गुरूनानक मार्केट, गौतम बुद्ध मार्ग, बांसमंडी चौराहा, लाटुश रोड, श्रीराम रोड, मोहन मार्केट, अमीनाबाद, गनेशगंज, नाका हिंडोला होता हुआ गुरूद्वारा साहिब वापस पहुंचकर सांय लगभग सात बजे सम्पन्न हुआ ,जहां श्री गुरूग्रन्थ साहिब जी की शाही सवारी को ''गार्ड ऑफ ऑनर'' पेश किया गया। सम्पूर्ण मार्ग पर पंजाब हसदा बैंड ने फौजी अन्दाज में अपने बैंड बजाने की कलाओं एवं शहीद बाबा दीप सिंह गतका ग्रुप अमरोहा वालों ने युद्ध कलाओं का प्रदर्शन किया। श्रद्धालुओं द्वारा स्टाल लगाकर समोसे, बिस्कुट व चाय इत्यादि प्रसाद के रूप में वितरित किये गये। दीवान हाल में रागी जत्था भाई राजिन्दर सिंह जी द्वारा गायन गुरबाणी कीर्तन के उपरान्त ज्ञानी गुरजिंदर सिंह जी ने कथा व्याख्यान कर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन दर्शन एवं सनातन धर्म व मनवाधिकारों की रक्षा हेतु उनके सर्वस्व कुर्बान करने पर विस्तार से प्रकाश डाला । अरदास के उपरान्त समूह साध संगत में गुरू का लंगर वितरित किया गया। इस नगर कीर्तन में कई निष्काम जत्थे बंदियों सिख यंग मैन्स एसोसियेशन, सिमरन साधना परिवार, सुखमनी साहिब सेवा सोसाइटी, माता गुजरी सत्संग सभा, यूथ खालसा एसोसियेशन, पंजाबी यूथ एसोसियेशन, शिव शान्ति आश्रम के अतिरिक्त लखनऊ स्थित सिंह सभाओं ने हिस्सा लिया। अपनी-अपनी वर्दी और बैण्ड बाजों के साथ गुरु नानक गर्ल्स इंटर कालेज, गुरू नानक डिग्री कालेज, गुरु नानक विद्यालय चन्दर नगर की छात्राओं एवं खालसा इण्टर कालेज के एनसीसी केडेट्स एवं स्काउट्स के छात्रों ने कदम - ताल से सभी का मन मोहा। नगर कीर्तन में एक ओर जहां रंग बिरंगी आकर्षक पौशाक में खालसा इंटर कॉलेज की छात्राओं ने डीजे पर चल रही श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की गौरव गाथा से सम्बंधित गुरुबाणी पर अपनी सामूहिक प्रस्तुति द्वारा आकर्षण का मुख्य केन्द्र बनी हुई थी वही दूसरी ओर 3 यू.पी. नवल यूनिट एन.सी.सी. के केडेट्स एवं स्काउट्स के छात्र बैंड बाजे की धुन पर कदम - ताल से नगर वासियों का मन मोह रहे थे 7 गुरु सिंह सभा के पदाधिकारियों ने नगर कीर्तन में सहयोग के लिए कॉलेज के प्रधानाचार्य स. वीरेंद्र सिंह एवं उप प्रधानाचार्य नीरज श्रीवास्तव को गुरु घर की बख्शीश सिरोपा से सम्मानित किया 7 5 जनवरी की सायं गुरुद्वारा नाका हिंडौला में सजेगा कवि दरबार गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष स. राजेन्द्र सिंह बग्गा एवं गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष डा.अमरजोत सिंह ने साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज के प्रकाशोत्सव पर बधाई दी 7 डॉ. अमरजोत सिंह ने बताया कि दिनांक 05.01.2025 सांय 6:00 बजे से 11:00 बजे तक दीवान सजेंगे जिसमें 9:00 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक कवि दरबार का आयोजन गुरूद्वारा नाका हिण्डोला में किया गया है 7 कवि दरबार में पंथक कवि सरदार रछपाल सिंह, पाल जालंधर वाले, इजीं. करमजीत सिंह नूर जालंधर वाले, डॉक्टर हरी सिंह जाचक लुधियाना वाले, सरदार चरनजीत सिंह चंन लुधियाना वाले, जमीर अली जमीर मलेरकोटला वाले विशेष रूप से पधार रहे हैं जो अपनी जोशीली कविताओं द्वारा समूह संगत को निहाल करेंगे। 6 जनवरी को प्रातः 10 बजे से सांय 4-45 तक डीएवी इंटर कॉलेज एवं सांय से देर रात्रि तक गुरुद्वारा यहिया गंज में सजेगा विशेष दीवान दिनांक 06.01.2025 को प्रातः 6:00 से 10:00 तक गुरुद्वारा नाका हिंडोला में एवं प्रातः 10:00 बजे से सांय 4:45 बजे तक डी.ए.वी. इंटर कालेज ऐशबाग रोड एवं शाम 6:00 बजे से रात्रि 01:30 बजे तक गुरूद्वारा श्री गुरु तेग बहादुर साहब यहियागंज लखनऊ में दीवान सजेगा जिसमें रात को 1:00 से 1:30 बजे फूलों की वरखा के साथ कार्यक्रम का समापन होगा। धार्मिक सचिव सरबजीत सिंह ने बताया कि इस अवसर प्रकाश उत्सव में प्रसिद्ध रागी जत्था भाई अरविंदर सिंह नूर जी हजूरी रागी श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर, भाई सुखजीत सिंह जी हजूरी श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर, ज्ञानी अंग्रेज सिंह जी मुख्य ग्रंथी गुरूद्वारा सीस गंज साहिब दिल्ली वाले विशेष रूप से पधार रहे हैं। भाई राजिंदर सिंह जी हजूरी रागी गुरुद्वारा नाका हिंडोला भाई करनैल सिंह जी हजूरी रागी गुरुद्वारा यहियागंज शबद कीर्तन गायन एवं ज्ञानी जगजीत सिंह जी जाचक एवं ज्ञानी गुरजिंदर सिंह जी कथा व्याख्यान द्वारा समूह संगत को निहाल करेंगे गुरू का लंगर भी श्रद्धालुओं में वितरित किया जायेगा।

संपादकीय

प्रदेश में हो अपना क्रीड़ा संस्थान

भूपिंदर सिंह

खेल नीति में उन राष्ट्रीय पदक विजेताओं के लिए वजीफे की बात की गई है जो खेल छात्रावास के बाहर हों। उन्हें भी खेल छात्रावास के अंतर्गत दैनिक खुराक भत्ता व अन्य सुविधाओं के ऊपर खर्च होने वाली राशि के बराबर वजीफा देने की वकालत हो। खेल नीति में प्रदेश का अपना खेल संस्थान हो, ऐसी बात कही गई है। इसे अमलीजामा पहनाने की जरूरत है

हिमाचल प्रदेश में यूरोप व अमेरिका की तरह जलवायु होने के कारण यहां पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए एक उच्च स्तरीय खेल संस्थान की जरूरत है क्योंकि बेहतर आबोहवा में प्रशिक्षण के लिए करोड़ों खर्च करके हमारे खिलाड़ी विदेश जाते हैं। देश में राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान पटियाला बहुत बढ़िया प्रशिक्षण स्थल है मगर वहां गर्मियों में ट्रेनिंग करना बहुत मुश्किल है। जब हम राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान पटियाला में प्रवेश करते हैं तो गेट से सौ मीटर आगे चल कर बायीं ओर एक शिला पर लिखा है विश्वविद्यालयों के ग्रंथकीट नहीं, वरिष्ठ लिपिक नहीं, अपितु हमें ऐसे महापुरुष निकालने चाहिए जो विश्व पटल पर भारत को गौरव प्रदान कर सकें। खेल संस्थान का मतलब विश्व स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कराने वाला संस्थान है। हिमाचल प्रदेश सरकार की खेल नीति को नया स्वरूप मिल चुका है। इस नीति में स्तरीय ढांचे की बात तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम को खिलाड़ी के अनुरूप करने की कोशिश की है जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कड़ी प्रतिस्पर्धा देकर खिलाड़ी प्रदेश व देश को पदक जीतकर तिरंगे को सबसे ऊपर उठा कर जन-गण-मन की धुन पूरे विश्व को सुना सके। हिमाचल प्रदेश के तत्कालीन हुक्मरानों ने खेल विभाग को कभी खेल प्राधिकरण तो कभी खेल संस्थान बनाने की वकालत की है, मगर हिमाचल प्रदेश में खेलों की हकीकत सबके सामने है। नई खेल नीति में राज्य खेल संस्थान का भी जिक्र है। हिमाचल प्रदेश में कई खेलों के लिए विश्व स्तरीय खेल ढांचा तो बनकर तैयार हो चुका है, मगर प्रशिक्षकों व अन्य सुविधाओं के अभाव में यहां पर उस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ नहीं हो पाया है। हिमाचल प्रदेश में अभी तक भी खेल संस्कृति का अभाव साफ देखा जा सकता है। धूमल सरकार में बनी खेल नीति में हिमाचल के खिलाड़ियों को सरकारी

नौकरी में तीन प्रतिशत आरक्षण बहुत बड़ी सौगात है। अब दो दशक बाद विभिन्न पहलुओं के ऊपर नयी खेल नीति में सुधार किया गया है, मगर देखते हैं इसका जब जमीनी हकीकत से सामना होगा तो वास्तव में सरकारी तंत्र व खेल संस्थान इसे कितना सही कार्यान्वित करवा पाते हैं। खेलों में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित हो, इससे जब हजारों विद्यार्थी फिटनेस कार्यक्रम से गुजरेंगे तो उनमें कुछ अच्छे खिलाड़ी भी मिलेंगे। खेल नीति में हिमाचली खिलाड़ियों से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता प्रदर्शन के लिए राज्य में अधिक से अधिक खेल अकादमियां व शिक्षा संस्थानों में खेल विंग, स्थान की सुविधा व प्रतिभा को देखते हुए सरकारी व खेल संघों के माध्यम से खोलने को कहा गया है तथा भविष्य में विभिन्न बड़ी कंपनियों से सीआरएस के माध्यम से राज्य में खेल ढांचे को सुदृढ़ करने की मंशा भी है। मनरेगा से भी ग्रामीण क्षेत्रों में प्ले फील्ड की सुविधा जुटाने की बात कही गई है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न खेलों का स्तर राज्य में खेल छात्रावासों के खुलने के बाद भी अभी तक सुधरा नहीं है। यह अलग बात है कि कुछ जुनूनी प्रशिक्षकों के बल पर कभी-कभी अच्छे परिणाम जरूर आए हैं। इसके बावजूद हिमाचल प्रदेश राष्ट्रीय स्तर पर कुछ एक खेलों को छोड़ कर अधिकांश बार पिछड़ा ही रहा है। हिमाचल हो या देश को कोई अन्य राज्य, उत्कृष्ट प्रदर्शन करवाने के लिए केवल प्रशिक्षक ही मुख्य किरदार दिखाई देता है। यही कारण है कि भारत के खेल मंत्रालय व कई राज्यों ने भी अपने यहां हाई परफॉर्मेंस प्रशिक्षण केन्द्र खोलने पर जोर दिया है तथा वहां पर वे उत्कृष्ट प्रदर्शन करवाने वाले प्रशिक्षकों को अनुबंधित कर रहे हैं। खेलो इंडिया, गुजरात व पंजाब के उच्च खेल परिणाम दिलाने वाले प्रशिक्षण केन्द्रों की तरह ही हिमाचल प्रदेश में भी अधिक से अधिक इस तरह के हाई परफॉर्मेंस केंद्र व अकादमियां खोलनी होंगी। इन प्रशिक्षण केन्द्रों पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता प्रदर्शन करवाने वाले अनुभवी प्रशिक्षकों को उत्कृष्ट प्रदर्शन करवाने की शर्तों पर पांच वर्षों के लिए अनुबंधित करना चाहिए, ताकि हिमाचल प्रदेश की संतानों को भी हिमाचल प्रदेश में रह कर ही बेहतर प्रशिक्षण सुविधा मिल सके। केन्द्र व केरल सरकार की तर्ज पर प्रशिक्षकों को भी खिलाड़ी की तरह नकद ईनामी राशि व अवार्ड का प्रावधान किया गया है। आप अगर हर विद्यार्थी को फिटनेस के लिए खेल मैदान में ले जाएंगे, तो उनमें से जरूर कुछ अच्छे खिलाड़ी भी मिलेंगे। प्रतिभा खोज के बाद पढ़ाई के साथ-साथ प्रशिक्षण के लिए अच्छी खेल सुविधाएं मुहैया कराई जानी चाहिएं। इसके लिए राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान की तर्ज पर अपना राज्य क्रीड़ा संस्थान हो। इसके लिए खेल मंत्री कृतसंकल्प नजर आते हैं। जल्द ही इसे अमलीजामा पहनाया जा सकता है। खेल संस्थान में हिमाचल प्रदेश के खिलाड़ियों को वैज्ञानिक आधार पर लंबी अवधि के प्रशिक्षण शिविर लगें तथा प्रदेश के शारीरिक शिक्षकों व पूर्व राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के लिए सेमिनार व कम अवधि के प्रशिक्षक बनने के कोर्स हों। साथ ही साथ यहां पर राष्ट्रीय प्रतियोगिता के पूर्व लगने वाले कोचिंग कैम्प भी अनिवार्य रूप से लगाए जाएं ताकि पहाड़ के लोगों को भी वही सुविधा उपलब्ध है जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर के उत्कृष्ट प्रदर्शन किए जा सकें। खेल नीति में उन राष्ट्रीय पदक विजेताओं के लिए वजीफे की बात की गई है जो खेल छात्रावास के बाहर हों। उन्हें भी खेल छात्रावास के अंतर्गत दैनिक खुराक भत्ता व अन्य सुविधाओं के ऊपर खर्च होने वाली राशि के बराबर वजीफा देने की वकालत हो। खेल प्राधिकरण बनने से पहले राष्ट्रीय स्तर पर यह कार्य राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान पटियाला करता था। खेल नीति में प्रदेश का अपना खेल संस्थान हो, ऐसी बात कही गई है। हिमाचल प्रदेश में खेल संस्थान बनता है तो यह यहां के खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पदक विजेता बनाने में जहां सहायक सिद्ध होगा, वहीं साथ ही गर्मियों के लिए देश के पास एक अच्छा प्रशिक्षण केन्द्र हो जाएगा।

अंबेडकर के आह्वान से संविधान नहीं सुधरेगा

भानु धमीजा

अंबेडकर के दोनों आकलन ज शक्तियों का केंद्रीकरण और बहुसंख्यकवाद ज सही थे, जैसा भारत के इतिहास ने दिखाया। शक्तियों के केंद्रीकरण ने प्रधानमंत्रियों को मनमाने निर्णय लेने की अनुमति दी। जैसे कि मोदी का विमुद्रीकरण, और मर्जी से संविधान संशोधन, जैसे नेहरु का प्रथम संशोधन, जिसने कानूनों को न्यायिक समीक्षा से बचाने के लिए नई अनुसूची तैयार की, या इंदिरा गांधी का 42वां संशोधन, जिसने राष्ट्रपति को प्रधानमंत्री का मातहत बना दिया। इंदिरा गांधी के आपातकाल को भी न भूलें। संविधान की 'बहुसंख्यक का सब कुछ' वाली विशेषता भारत के सामाजिक सौहार्द को कमजोर करती जा रही है

"भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म उस अवधि में हुआ, जब भारत में साम्राज्यवाद विरोध संघर्ष ने जुझारू आयाम ग्रहण कर लिया था"

हाल ही में भारत की संसद ने चर्चा की कि क्या देश का 74 वर्ष पुराना संविधान अभी भी प्रभावी है और क्या इसका पालन हो रहा है। हालांकि बहस जल्द ही कीचड़ उछालने में बदल गई। बहस के दौरान जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भाजपा सरकार द्वारा संविधान के कथित उल्लंघनों की सूची प्रस्तुत की, तो प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस नेताओं जवाहर लाल नेहरु और इंदिरा गांधी के कार्यकाल में हुए विभिन्न उल्लंघनों को याद करा इसका जवाब दिया। चर्चा बिल्कुल उदासीन और निष्फल थी। परंतु जब दोनों दलों ने संविधान के मुख्य प्रारूपकार बीआर अंबेडकर का नाम लिया, तो संसद में उत्पात और राष्ट्रव्यापी विवाद की चिंगारी भड़क उठी। राहुल गांधी ने अंबेडकर द्वारा 1950 में की टिप्पणी, ''अगर देश में सामाजिक और आर्थिक समानता नहीं हैज्तो राजनीतिक समता नष्ट हो जाएगी'', को सरकार को सुनाया। इसके उत्तर में गृहमंत्री अमित शाह ने ताना मारा ः ''अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर कहना फैशन बन गया हैज। अगर उन्होंने (कांग्रेस) इसी प्रकार भगवान का नाम लिया होता, तो स्वर्ग प्राप्त कर लिया होता।'' इस टिप्पणी का व्यापक विरोध हुआ और देश भर में विपक्षी दलों ने शाह पर अंबेडकर का अपमान करने का आरोप जड़ना शुरू कर दिया। संविधान के मूल्यांकन के लिए यह घटनाक्रम बेशक कोई मायने न रखता हो, लेकिन इसने भारत की राजनीति का एक घिनौना चेहरा सामने रख दिया है। विभिन्न राजनीतिक पार्टियां दलित वोट, जो भारत की जनसंख्या का लगभग 17 फीसदी है, पाने के लिए अंबेडकर के नाम का इस्तेमाल करती हैं। ये पार्टियां अंबेडकर ज्जो अभी भी सर्वाधिक श्रद्धेय दलित नेता हैं ज्को एक परमात्मा सदृश व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करती हैं, जिन्होंने भारत का संविधान बनाया, जिसे वे पवित्र और परिपूर्ण बताती हैं। हर पार्टी दलितों को विश्वास दिलाना चाहती है कि वही अंबेडकर की विरासत की मुख्य रक्षक है, और उनकी प्रमुख हितरक्षक। भारत के विभाजित राजनीतिक परिदृश्य में दलित वोट इतना महत्त्वपूर्ण है कि ऐसी परिस्थितियां बन गई हैं जिनसे देश का किसी भी सूरत में भला नहीं हो सकता। यदि भारत संविधान की त्रुटियों को

संबोधित करने के लिए खुला रवैया रखता तो देश कहीं अधिक तरक्की कर पाता। परंतु यदि कोई भी पार्टी इस दस्तावेज की आलोचना करने का साहस करेगी, उसका राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना असंभव है। विडंबना यह है कि यह गतिरोध दलितों को ही सर्वाधिक हानि पहुंचाता है, क्योंकि वे हमारे संविधान द्वारा निर्मित अत्यधिक केंद्रीकृत व्यवस्था में सर्वाधिक उत्पीड़ित समूहों में एक बनकर रह जाते हैं। फिर भी, सभी पार्टियों ने वर्षों से दलितों को यही कहा है कि अंबेडकर का संविधान सर्वोत्तम है और इससे कोई छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए। दलितों को यह समझने की आवश्यकता है कि अंबेडकर ने दरअसल संविधान के मूलभूत ढांचे और प्रावधानों का निर्माण नहीं किया, बल्कि यह नेहरु ने किया। अंबेडकर को संविधान निर्माण सभा, जो नेहरु के नेतृत्व के अधीन कांग्रेस के नियंत्रण में थी, ने प्रारूपण समिति का अध्यक्ष बनाया था। कालातीत में कई पुस्तकों और लेखों से पता चला कि वह नेहरु थे जिन्होंने संविधान के मूल ढांचे को आकार दिया। वर्ष 1997 में अपनी पुस्तक, 'वर्शिपिंग फॉल्स गॉड ः अंबेडकर एंड द फैक्ट्स व्हिच हैव बीन इरेज्ड' (नकली भगवान की पूजा ः अंबेडकर और वे तथ्य जो मिटा दिए गए), में अरुण शौरी ने विस्तार से बताया है कि किस प्रकार अंबेडकर की मुख्य भूमिका सभा के निर्णयों को लागू करने की थी। सुधींद्र कुलकर्णी ने भी इस पर विस्तृत रूप से लिखा है। इसमें उनका वर्ष 2024 का लेख है, 'हू कान्ट्रिब्यूटेड मोर टू द कांस्टीट्यूशन एंड इट्स प्रीएम्बल? नेहरु, नॉट अंबेडकर' (संविधान और इसकी प्रस्तावना में किसका योगदान अधिक था? अंबेडकर का नहीं, नेहरु का)। वह लिखते हैं, ''संविधान की प्रस्तावना और अधिकतर अन्य निर्धारक विशेषताएं कांग्रेसज्मुख्यतः नेहरु की देन हैं।'' सच्चाई यह है कि अंबेडकर का भारत के संविधान के लिए एक अलग दृष्टिकोण था और उन्होंने संविधान सभा द्वारा अंगीकृत दस्तावेज का पूरा समर्थन नहीं किया था। मेरे वर्ष 2016 के लेख, 'अंबेडकर का संयुक्त राज्य भारत', में मैंने उनकी इस परिकल्पना का उल्लेख किया है, जो उन्होंने प्रारूपण समिति का अध्यक्ष नियुक्त किए जाने से सात महीने पहले संविधान सभा की मूलभूत अधिकारों पर गठित उपसमिति को सौंपी थी। अंबेडकर का प्रस्ताव था कि भारत को संयुक्त राज्य अमरीका के समान संघ बनना चाहिए।

मीट और समोसे की सियासत में फंसा विपक्ष

अगर हम बात करें असल मुद्दों की, जो हिमाचल के भोले-भाले लोगों से सरोकार रखते हैं, तो हिमाचल के दूरदराज के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं की जरूरत है, लेकिन भाजपा इन पर कोई ठोस कदम उठाने की बजाय फालतू विवादों को हवा दे रही है। राज्य की जनता के असली मुद्दों को नजरअंदाज कर भाजपा सिर्फ राजनीति का खेल, खेल रही है। आज हिमाचल जैसे छोटे राज्यों के सामने सबसे बड़ी समस्या साधन जुटाना है। सरकार एवं विपक्ष को इस पर विचार करना चाहिए। सवाल यह है कि कब तक हम केंद्र और ऋणों के सहारे राज्य चलाते रहेंगे। विपक्ष को अपनी भूमिका स्पष्ट करनी चाहिए कि वह प्रदेश हित में काम कर रहा है या नहीं

हिमाचल प्रदेश अपने शांत एवं स्वच्छ वातावरण के लिए जाना जाता है। हिमाचल की राजनीति सौम्यता व गंभीरता के लिए प्रख्यात है। पिछले कुछ समय से विपक्ष मीट और समोसे की राजनीति में फंसा हुआ नजर आ रहा है। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू द्वारा आयोजित एक डिनर पार्टी में जंगली मुर्गे का मीट परोसे जाने को लेकर एक नया विवाद उभरा है। इस घटना के बाद भाजपा ने मुख्यमंत्री से माफी की मांग की है, दावा करते हुए कि यह हिमाचल की सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाओं के खिलाफ है। हालांकि, यह विवाद कोई वास्तविक मुद्दा नहीं है, बल्कि एक राजनीतिक शोरगुल का हिस्सा भर है, जो केवल ध्यान भटकाने का एक तरीका बन गया है। मुख्यमंत्री सुक्खू का डिनर था, जिसमें राज्य के अधिकारियों और नेताओं को आमंत्रित किया गया था। इस भोज में देशी मुर्गे का मीट परोसा गया और जैसे ही यह बात सामने आई, भाजपा ने इसे एक धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दा बना दिया। भाजपा नेताओं का आरोप है कि यह कदम जानबूझकर धार्मिक भावनाओं को आहत करने के लिए उठाया गया। उनका यह कहना कि हिमाचल एक हिंदू बहुल राज्य है, और ऐसे भोज से धार्मिक मान्यताओं को ठेस पहुंची है, बेहद अतिरंजित और निराधार है। इस मुद्दे को उठाते हुए भारतीय जनता पार्टी ने यह भी दावा किया है कि 'जंगली मुर्गा' वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 और वन्यजीव (संरक्षण) संशोधन अधिनियम 2022 की अनुसूची एक के तहत एक लुप्तप्राय प्रजाति है और इसका शिकार करना एवं खाना अवैध है। इस विवाद पर जवाब देते हुए सीएम सुक्खू ने कहा कि बीजेपी इसको बिना वजह मुद्दा बना रही है। सीएम ने अपनी सफाई में कहा कि मांसाहारी खाना गांवों में जीवन का एक तरीका है।

मैं तेलयुक्त भोजन और नॉनवेज खाता नहीं। यह आरोप लगाकर बीजेपी ग्रामीणों का अपमान कर रही है। कुछ दिन पहले कुपवी के टिक्कर गांव में ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री और अन्य अतिथियों के लिए रात्रि भोज रखा। इस रात्रि भोज के दौरान सीएम सुखविंद्र सिंह सुक्खू और अन्य लोगों के बीच बातचीत का एक कथित वीडियो और मेन्यू सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। इसी को आधार बनाकर नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर सहित कई अन्य नेताओं ने इसे मुद्दा बना लिया है। हालांकि, इस पर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह

सुक्खू ने कहा कि भाजपा के नेताओं ने इससे गांववासियों को बदनाम करने का रास्ता चुना। विपक्ष के नेताओं के पास अब कोई मुद्दा नहीं है। पहाड़ के जीवन में नॉन वेज भोजन है। इससे ग्रामीणों की छवि खराब हो रही है। हालांकि यहां एक बात कहनी होगी की चीफ मिनिस्टर को भी बोलते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए जिससे कि बिना मतलब की कंट्रोवरसी क्रिएट न हो। इस विवाद को लेकर भाजपा की तरफ से सख्त बयान आए हैं, जिसमें मुख्यमंत्री से माफी की मांग की गई है। भाजपा ने इसे हिमाचल की पारंपरिक संस्कृति के खिलाफ बताते हुए माफी की बात की। क्या यह वास्तव में एक गंभीर मुद्दा है या फिर भाजपा का यह आरोप राजनीतिक लाभ हासिल करने के लिए उठाया गया कदम है? विधानसभा सत्र के दौरान जब बीजेपी विधायक मुर्गे लगी प्लाकार्ड्स लेकर कुकडूकुं की आवाजें निकाल रहे थे, वह सच में राजीतिक मूल्यों और मुद्दों को भुलाकर प्रदेश बीजेपी का दिवालियापन दिखाता है। असल में ये दोनों ही मुद्दे इतनी छोटी बातें हैं कि इन पर बहस करने से प्रदेश की जनता के असल मुद्दों से ध्यान हटता है। सही होता अगर विपक्ष रोजगार, गेस्ट टीचर भर्ती और महंगाई के मुद्दे प्राथमिकता से उठाता। इसके अलावा अगर हम बात करें असल मुद्दों की, जो हिमाचल के भोले-भाले लोगों से सरोकार रखते हैं, तो हिमाचल के दूरदराज के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं की जरूरत है, लेकिन भाजपा इन पर कोई ठोस कदम उठाने की बजाय फालतू विवादों को हवा दे रही है। राज्य की जनता के असली मुद्दों को नजरअंदाज कर भाजपा सिर्फ राजनीति का खेल, खेल रही है। आज हिमाचल जैसे छोटे राज्यों के सामने सबसे बड़ी समस्या साधन जुटाना है। सरकार एवं विपक्ष को इस पर विचार करना चाहिए। सवाल यह है कि कब तक हम केंद्र और ऋणों के सहारे राज्य चलाते रहेंगे। विपक्ष को अपनी भूमिका स्पष्ट करनी चाहिए कि वह प्रदेश हित में काम कर रहा है? कभी परिवहन की बसों में अतिरिक्त सामान को ले जाकर कटे टिकट पर हो हल्ला, कभी समोसे, तो कभी मुर्गे पर शोर मचाना विपक्ष की भूमिका नहीं है। विपक्ष को संविधान के दायरे में रह कर जनहित के मुद्दों को विधानसभा और जनता के बीच उठाना होता है। केवल मीडिया में बने रहने के लिए मुर्गे और समोसे जैसे मुद्दों से बचना चाहिए।

नए साल के नए संकल्प

दोस्तो यह साल तो बीत रहा है और मैं इसे किक आउट कर रहा हूं। इस साल मैंने तीन संकल्प लिए थे और तीनों ही संकल्पों पर राहु-केतु की बुरी नजर लग गई। एक भी संकल्प पूरा नहीं हो पाया। फालतू फंड में पूरा साल बीत गया। मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है कि कैसे बंदे हो, अपना संकल्प पूरा नहीं कर पाए। मैं अपनी अंतरआत्मा से नजर नहीं मिला पा रहा। वैसे नजर तो मैं कई बार अपनी पत्नी से भी नहीं मिला पाता। खासकर जब मैं रात को लेट घर आता हूं तो मैं इधर-उधर देखते हुए चुपचाप बिस्तरे में घुस जाता हूं और ऊपर से चादर ओढ़ लेता हूं। फिर पत्नी की घूरती हुई आंखें मुझे दिखाई नहीं देती और मैं सुकून महसूस करता हूं। खैर बात अंतरआत्मा की हो रही थी कि मैं उससे नजर नहीं मिल पा रहा। क्यों नहीं मिला पा रहा और कौन से मेरे ऐसे संकल्प थे जो पूरे नहीं हुए, इस बारे में दुनिया को बताना जरूरी समझता हूं। आपको बताने के साथ-साथ फिर से संकल्प ले रहा हूं कि नए साल में अपने संकल्प पूरे करके रहूंगा। इस जाते हुए साल में जो तीन संकल्प लिए थे, उनमें पहला संकल्प था कि अपने विरोधी की डिबरी टाइट करके रख दूंगा। उसकी खटिया खड़ी कर दूंगा। उसकी कुर्सी हिला दूंगा। उसके पाए उखाड़ फेंकुंगा। उसके पीछे ईडी और सीबीआई जैसी एजेंसियां लगा दूंगा। उसके सारे कारनामे उजागर कर दूंगा। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। एजेंसियां अभी तक तफ्तीश में उलझी हैं और संकल्प की आउटपुट जीरो है। दूसरा संकल्प यह था कि इस साल अपनी छत ऊपर से खोल दूंगा और दुनिया को बताऊंगा कि देखो, कैसे छप्पर फाड़ कर धन आया है। दुनिया के बड़े-बड़े खरबपति भी फोन लगाकर मुझसे पूछेंगे कि धन की इतनी बरसात कैसे हो गई। लेकिन यह संकल्प भी पूरा नहीं हुआ। जिन लोगों के मैंने दो नंबर के काम करवाए थे और जिन काले कारनामे करने वालों का मैंने काला धन गोरा करवाया था, उन्होंने फूटी कोड़ी भी नहीं दी और उधर बेकार में मैंने अपने घर की छत तोड़ डाली। तीसरा संकल्प था कि खानदान का नाम रोशन करूंगा। लेकिन इधर खानदान का ही एक सज्जन अफीम बेचता पकड़ा गया और उसका नाम रोशन हो गया। मैं देखता रह गया। इस बार फिर से नया साल आया है। मैंने फिर से संकल्प लिया है। यह संकल्प थोड़ा लीक से हटकर है। पहला संकल्प यह है कि अपने विरोधी को पहले मित्र बनाऊंगा और फिर मौका लगते ही उसे लंगड़ी लगा दूंगा। वह चारों खाने चित्त हो जाएगा। और अपना रास्ता आसान हो जाएगा। रास्ते ऐसे ही बनाए जाते हैं। दूसरा संकल्प भी थोड़ा तगड़ा है। मैंने ठान लिया है कि अपने ऑफिस के बॉस को खुश रखूंगा। खुश रखने के लिए उनकी हर बात पर 'वाह सर, क्या दिमाग पाया है आपने!' कहना शुरू कर दूंगा। यहां तक कि उन्होंने चाय में चीनी डालने की जगह नमक डाल दिया, तो मैं इसे भी इनोवेशन कहकर उनकी तारीफ के पुल बांधूंगा। उनसे सरकार को अपनी प्रमोशन की सिफारिश करवाऊंगा। जैसे ही बॉस रिटायर होंगे, उनके पीछे वाले कमरे को मैं अपना बना लूंगा। और उनके कुर्सी छोड़ते ही उस पर बैठकर ऐसा स्टाइल मारूंगा, जैसे इस कुर्सी के साथ मेरा सात जन्मों का रिश्ता हो। तीसरा और सबसे अहम संकल्प है कि मैं समाज सेवकों की कतार में शामिल हो जाऊंगा।

बाबासाहेब अम्बेडकर : हिन्दू दक्षिणपंथी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

आलेख ः राम पुनियानी

हाल (दिसंबर 2025) में संसद में चर्चा के दौरान गृहमंत्री अमित शाह ने अपने भाषण में एक ओर बाबासाहेब अम्बेडकर का अपमान किया, तो दूसरी ओर यह साबित करने का प्रयास भी किया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अम्बेडकर के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया था। शाह को उनकी टिप्पणियों का माकूल जवाब मिला। कई विरोध प्रदर्शन हुए और उनके इस्तीफे की मांग भी की गई। उन्हें उनके इस कथन के लिए माफ़ी मांगने के लिए कहा गया कि अम्बेडकर का नाम लेना एक फैशन बन गया है। इस तीखी प्रतिक्रिया से शायद उनके अहंकार और राजनैतिक वजन में कुछ कमी आई हो। अपने भाषण में अपनी पीठ खुद थपथपाते हुए शाह ने बताया कि उनकी पार्टी ने कैसे बाबासाहेब के साथ न्याय किया। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी की सरकारों ने जगह-जगह अम्बेडकर की मूर्तियाँ लगवाईं। क्या एक सीमा के बाद बाबासाहेब इसे पसंद करते? शाह ने अपनी पार्टी को यह श्रेय भी दिया कि उसने बाबासाहेब के जन्मदिन को 'सामाजिक समरसता दिवस' के रूप में मनाना शुरू किया। 'सामाजिक समरसता' की भाजपाई परिकल्पना, बाबासाहेब के सपनों के एकदम खिलाफ है। बाबासाहेब जातियों की बीच समरसता की नहीं, बल्कि जाति के विनाश के हामी थे। %सामाजिक समरसता% अभियान के जरिये संघ-भाजपा जो एजेंडा आगे बढ़ा रहे हैं, वह अम्बेडकर के जातिविहीन समाज की स्थापना के सपने को धूल में मिलाने वाला है। यह एजेंडा जाति प्रथा को बनाये रखते हुए विभिन्न जातियों के बीच सद्भाव की स्थापना की बात करता है। वैसे भी, भाजपा दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानवतावाद' में यकीन रखती है, जिसके अनुसार हिन्दू समाज का उद्भव परमब्रह्म से हुआ -- ब्राह्मण उसके मुख से निकले, क्षत्रिय उसकी बाहुओं से, वैश्य उसकी जंघा से और शूद्र उसके पैरों से। संघ-भाजपा के अनुसार यह सामाजिक विभाजन, समाज को मजबूती देता है। अगर संघ-भाजपा सचमुच अम्बेडकर का सम्मान करते होते, तो उनकी सरकार आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर वर्गों के लिए आरक्षण का प्रावधान नहीं करती, क्योंकि इससे दलित-आदिवासी (एससी-एसटी) कोटा में कमी आई है और उनकी सरकार दलितों पर अत्याचार की घटनाओं में कमी लाती, महिलाओं के खिलाफ हिंसा में कमी लाती। जहाँ तक संघ-भाजपा के इस दावे का प्रश्न है कि कांग्रेस ने अम्बेडकर को नज़रअंदाज़ किया और उनके साथ न्याय नहीं किया, इसकी गहराई से पड़ताल करनी होगी। मगर एक बात तो पक्की है -- सामाजिक न्याय के लिए अम्बेडकर की लड़ाई में हिन्दुत्व राष्ट्रवादी ताकतों ने अम्बेडकर का न तो साथ दिया और न उनकी मदद की। भारत के राष्ट्रीय नेतृत्व ने अछूत प्रथा और जाति व्यवस्था के मुद्दों को गंभीरता से लिया था -- विशेषकर 1930 के दशक के बाद से। सन 1932 के बाद से महात्मा गाँधी ने अछूत और जाति प्रथा के उन्मूलन को इतनी गंभीरता से लिया कि अगले कुछ वर्षों तक उनका ध्यान केवल इन्हीं मुद्दों पर केन्द्रित रहा। उन्होंने तय किया कि वे ऐसे किसी विवाह में नहीं जाएंगे, जो अंतर्जातीय न हो। उन्होंने एक दलित परिवार को अपने साबरमती आश्रम में सम्मानपूर्वक रखा। इससे नाराज़ होकर दानदाताओं ने आश्रम को चंदा देना बंद कर दिया और आश्रम में ताले लगने की नौबत आ गई, मगर गांधीजी नहीं झुके। यह सही है कि कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव में अम्बेडकर के खिलाफ अपना उम्मीदवार खड़ा किया था, मगर यह भी सही है कि इस चुनावी लड़ाई में हिन्दू महासभा भी अम्बेडकर के खिलाफ थी। बाद में बाबासाहेब को राज्यसभा में नामांकित किया गया। महात्मा गाँधी ने यह सुनिश्चित किया कि अम्बेडकर को अंतरिम सरकार में मंत्री बनाया जाए। गांधीजी की सलाह पर ही अम्बेडकर को संविधान सभा की मसविदा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। अमित शाह यह प्रचार भी कर रहे हैं कि अम्बेडकर ने केन्द्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा इसलिए दिया था, क्योंकि वे कांग्रेस सरकार की विदेश नीति और संविधान के अनुच्छेद 370 के खिलाफ थे। वे जिस कैबिनेट के सदस्य थे, वह प्रजातांत्रिक तौर-तरीकों से काम करती थी। कश्मीर के मामले में अम्बेडकर की राय थी कि कश्मीर घाटी, जम्मू और लद्दाख में अलग-अलग जनमत संग्रह करवाए जाएँ, ताकि जम्मू-कश्मीर की आतंरिक नस्लीय विविधता के साथ न्याय हो सके। यह कहना पूरी तरह गलत है कि उन्होंने इस मुद्दे पर मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया था। उनके इस्तीफे का असली कारण यह था कि हिन्दू कोड बिल को संसद ने उसके मूल स्वरुप में स्वीकृति नहीं दी। हिन्दू कोड बिल का मसविदा तैयार करने का अनुरोध नेहरु ने अम्बेडकर से किया था। इस मसविदे को तैयार करते समय आंबेडकर ने सबसे ज्यादा जोर महिलाओं की समानता सुनिश्चित करने पर दिया। इस बिल की पृष्ठभूमि में यह तथ्य था कि विभिन्न धार्मिक समुदायों के अपने-अपने पर्सनल लॉ थे। पर्सनल लॉ शादी, तलाक, उत्तराधिकार और बच्चों की अभिरक्षा के मामलों में लागू होता है। इस बिल का मसविदा सार्वजनिक होते ही तूफ़ान मच गया। आरएसएस और उसके संगी-साथियों ने यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि इस बिल का उद्देश्य सनातन धर्म का खात्मा करना है। विशाल विरोध प्रदर्शन आयोजित किये गए और आरएसएस के अनुयायियों ने 12 दिसंबर 1949 को अम्बेडकर और नेहरु के पुतले जलाये। ढेर सारी आमसभायें आयोजित की गईं और अम्बेडकर व हिन्दू कोड बिल के खिलाफ वातावरण बनाने का भरपूर प्रयास किया गया। कांग्रेस के भीतर भी इस बिल के कई विरोधी थे। बिल पारित नहीं हो सका और इससे अम्बेडकर को इतना धक्का पहुंचा कि उन्होंने मंत्रिमंडल से इस्तीफा देने का निर्णय कर लिया। ऐसे में, यह कहना कि उन्होंने इस्तीफा इसलिए दिया, क्योंकि कांग्रेस उन्हें नज़रअंदाज़ और अपमानित कर रही थी, सफ़ेद झूठ है। वैसे भी, अम्बेडकर और संघ परिवार की विचारधाराएँ एक-दूसरे की धुर विरोधी हैं। पिछले कुछ दशकों से आरएसएस-भाजपा दलितों और आदिवासियों को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं और इसके लिए उन्होंने कुछ सतही कदम उठाए हैं। मगर इस कवायद का उद्देश्य केवल और केवल चुनाव जीतना है। दलितों का एक बहुत बड़ा वर्ग संविधान का सम्मान करता है, क्योंकि उसे मालूम है कि संविधान ने ही दलितों को जातिगत गुलामी से मुक्ति दिलाई है। और यही कारण है कि 2024 के आम चुनाव में कुछ हद तक दलित मतदाताओं ने कांग्रेस का समर्थन किया था। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि भाजपा के पितृ संगठन आरएसएस ने भारत के संविधान -- जो भारत को अम्बेडकर की सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण भेंट हैं -- का जम कर विरोध किया था। आरएसएस के मुखपत्र 'आर्गेनाइजर' ने 30 नवम्बर 1949 के अपने अंक में लिखा था, भारत के नए संविधान के बारे में सबसे बुरी बात यह है कि उसमें कुछ भी भारतीय नहीं है ज. भारत के प्राचीन संवैधानिक कानूनों, नामकरणों और भाषा का इसमें नामोनिशां तक नहीं है। हिंदुत्व की राजनीति के पितामह सावरकर ने भी कहा था कि भारत के संविधान में कुछ भी भारतीय नहीं है। अमित शाह की पार्टी बाबासाहेब के बनाये संविधान और हिन्दू कोड बिल दोनों की विरोधी थी। मगर इसके बावजूद उनका दावा है कि भाजपा ने उन्हें उचित सम्मान दिया। दरअसल, भाजपा ने जो कुछ भी किया है, वह केवल प्रतीकात्मक है। उसने बाबासाहेब के सपनों को पूरा करने के लिए कोई ठोस काम नहीं किया है। अपनी पुस्तक थॉट्स ऑन पाकिस्तान के संशोधित संस्करण में अम्बेडकर ने लिखा था कि पाकिस्तान का निर्माण हम सबके लिए एक बड़ी त्रासदी होगी, क्योंकि उससे हिन्दू राज की राह खुलेगी, जिसमें दलित गुलाम होंगे। हिन्दू राष्ट्र की स्थापना, अमित शाह और उनके साथियों का केन्द्रीय एजेंडा है, जो बाबासाहेब के स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय के आदर्शों के ठीक विपरीत है।

भाकियू ने तहसीलदार को सौपा ज्ञापन

महराजगंज-रायबरेली। शुक्रवार को भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक ब्लॉक इकाई महराजगंज और शिवगढ़ ईकाई के पदाधिकारियों द्वारा एसडीम महराजगंज को संबोधित एक ज्ञापन नायब तहसीलदार सफीकुद्दीन को सौपा। किसान नेताओं ने भू-माफियाओं द्वारा क्षेत्र में सरकारी सुरक्षित जमीनों पर लगातार अवैध कब्जे का मुद्दा प्रमुख रूप से उठाया गया। किसान नेताओं ने कहा कि, भूमाफियाओं द्वारा शिवगढ़ और महराजगंज क्षेत्र में तालाब और चारागाह आदि सुरक्षित जमीनों पर अवैध कब्जा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि, भू-माफियाओं द्वारा कब्जा की गई सुरक्षित जमीनों को कब्जा मुक्त कराया जाए, इसके अलावा क्षेत्र के संपर्क मार्गो, कच्ची सड़कों आदि जनहित से जुड़े मुद्दों को उठाया गया। इस मौके पर दीपू चौधरी, जिला उपाध्यक्ष राजेश सिंह, ब्लॉक अध्यक्ष महराजगंज लवकुश, महिला ब्लॉक अध्यक्ष नसरीन और महामंत्री मंजू आदि मौजूद रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेसियों ने अर्पित किए श्रद्धा-सुमन

महराजगंज-रायबरेली। देश के पूर्व प्रधानमंत्री, अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ डॉ0 मनमोहन सिंह के निधन पर पूरा देश शोक मना रहा है। शनिवार को महराजगंज ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय में एक शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें कांग्रेसियों ने डॉ मनमोहन सिंह की प्रतिमा पर फूल माला चढ़ा कर श्रद्धा-सुमन अर्पित कर उन्हें याद किया। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रदीप चौधरी ने कहा कि, डॉ मनमोहन सिंह को अपने शासनकाल में देश की जनता को भोजन-शिक्षा, सूचना और मनरेगा, भूमि अधिग्रहण कानून जैसे अधिकार देने वाले प्रधानमंत्री के रूप में हमेशा जाना जाएगा। इस अवसर पर कांग्रेसी नेता दिनेश मिश्रा, राहुल सिंह, कार्यवाहक नगर अध्यक्ष अंकुर जायसवाल, प्रिन्सू वैश्य, भरत मिश्रा, भगवान दीन फौजी, गया प्रसाद चौरसिया, हनुमान जायसवाल, रवि चंद सिंह, हौसला प्रसाद तिवारी सहित कांग्रेसजन उपस्थित रहे।

एसपी के आदेश पर शिक्षक के विरुद्ध छेड़छाड़ की रिपोर्ट दर्ज

बछरावां-रायबरेली। क्षेत्र के स्कूल में पढ़ाने वाली शिक्षिका ने पुलिस अधीक्षक को दिए गए शिकायती पत्र में आरोप लगाया है कि उसके ही एक स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षक ने उसे बाथरूम में जबरन पकड़ लिया और गलत नियत के इरादे से उसके साथ अश्लील हरकतें की। पीड़िता का आरोप है कि उक्त शिक्षक उसके साथ कई बार ऐसी हरकत कर चुका है साथ ही सोशल मीडिया में अश्लील गाने तथा अन्य तरह से अपमानित कर चुका है जिससे उसके अंदर भय एवं डर का माहौल बना हुआ है, वह काफी डरी और सहमी हुई है। पुलिस अधीक्षक के आदेश पर आरोपी शिक्षक दयाराम यादव के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज की है। इस बारे में थानाध्यक्ष ओमप्रकाश तिवारी ने बताया कि मामले के रिपोर्ट दर्ज की गई है जांच की जा रही है।

दिव्यांग महिला ने सीएचसी के बाहर नवजात को जन्म दिया

बछरावां-रायबरेली। जहां एक और सूबे के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक द्वारा लगातार तूफानी दौड़े करके स्वास्थ्य महकमें को सुधारने का लगातार प्रयास किया जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ राजधानी से सटे बछरावां सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में अव्यवस्थाओं का बोलबाला है। अव्यवस्थाएं थमने का नाम ही नहीं ले रही है। मामला बीते शनिवार की रात का है जब एक दिव्यांग महिला जय देवी उम्र 20 वर्ष पत्नी विशाल निवासी ग्राम हसनगंज नीम टीकर थाना बछरावां जनपद रायबरेली को रात 11 बजे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बछरावां प्रसव पीड़ा पर होने पर प्रसव के लिए लाया जाता है। मौके पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कोई भी महिला चिकित्सक मौजूद नहीं मिली। वहां पर स्टाफनर्स द्वारा उपचार किया गया। प्रसूता की जेठानी के अनुसार स्टाफनर्स ने बच्चों के धड़कन न होने की बात कही और वहां से कहीं और ले जाने के लिए सलाह दिया लेकिन प्रसूता के घर वाले नहीं माने बाहर ही बेंच पर लिटा दिया प्रसव पीड़ा तेज होने पर पुनः स्वास्थ्य कर्मियों के पास उपचार के लिए गुहार लगाई लेकिन कोई नहीं आया। जब वहां पर कोई रास्ता नहीं दिखाई पड़ा तो रात 3रू40 पर दिव्यांग पति विशाल अपनी दिव्यांग पत्नी को लेकर अस्पताल के बाहर निकला जैसे ही वह सड़क पर आया प्रसव पीड़ा और तेज हो गई। वहीं पर उसकी पत्नी का प्रसव भी हो गया आसपास के लोगों ने किसी तरह जच्चा और बच्चे को संभाला जैसे इसकी जानकारी स्वास्थ्य कर्मियों को हुई उनके हाथ पांव फूल गए। तुरंत जच्चा और बच्चा को भर्ती किया यही नहीं दिव्यांग पति ने सुबह चाय की दुकान पर बताया कि स्वास्थ्य कर्मियों ने इसके बाद भी 500 रुपए लिए और 1200 रुपए और देने की बात की गई बछरावां का यह स्वास्थ्य केंद्र लूट का अड्डा भी बना हुआ है तमाम बार शिकायतों के बावजूद भी महिला विभाग पूरी तरह निरंकुश है। इन पर लगाम लगाने में अधीक्षक अनिल कुमार जैसल पूरी तरह से फेल नजर आ रहे हैं।

हत्या या फिर एक्सीडेंट, बुजुर्ग की मौत में उलझी महराजगंज पुलिस

महराजगंज-रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के लोधवा मऊ में एक चक्की कारखाने पर काम कर रहे 62 वर्षीय मजदूर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। चक्की का मलिक जब रात 9रू00 बजे कारखाना पहुंचा तो मजदूर अंग-भंग अवस्था में खून से लतपत पड़ा मिला। बिना पुलिस सूचना के चक्की मलिक ने 108 एम्बुलेंस पर लादकर मजदूर को अनन-फानन जिला चिकित्सालय पहुंचाया। जहां इलाज के दौरान घायल मजदूर ने दम तोड़ दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना महराजगंज कोतवाली क्षेत्र के लोधवा मऊ गांव की है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक शनिवार को शाम लगभग 7रू00 बजे चक्की मलिक केतार लाल पुत्र अहरवा ने मजदूर किरशन (62) पुत्र गुर प्रसाद को चक्की पर छोड़कर अपने घर खाना खाने चला गया था, रात लगभग 9रू00 बजे जब वह खाना खाकर चक्की पर वापस लौटा तो मजदूर अंग-भंग अवस्था में घायल जमीन पर पड़ा कराहता मिला। आनन-फानन चक्की मलिक केदार लाल ने मजदूर को 108 एंबुलेंस द्वारा जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक के पुत्र रामू ने महराजगंज पुलिस को घटना की लिखित जानकारी दी है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उधर मृतक किरशन (62) निवासी लोधन का पुरवा की पुत्र वधू ने भी रविवार दोपहर लगभग 12रू00 बजे पुलिस को दूसरी तहरीर देकर हत्या की आशंका जताई, और मामले में कार्यवाही की मांग की है। मामले में कोतवाल जगदीश यादव ने बताया कि, अस्पताल की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची शव को कब्जे में लेकर पोस्ट मार्टम के लिए भेज भेजा गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के असली कारणो का पता चल सकेगा।

बसौढ़ी ग्राम पंचायत मे फर्जी मजदूरों की हाजिरी चढ़ाने का सिलसिला बदस्तूर जारी

मवई-अयोध्या। क्षेत्र कि बसौढ़ी गांव का भ्रस्टाचार से जुड़ा एक मामला पकड़ता जा रहा है तूल। मनरेगा मजदूरी के नाम पर चल रहे फर्जीवाड़े पर क्षेत्रीय अधिकारी अंकुश लगाने मे नाकाम।मनरेगा योजना मे सरकारी धन का जमकर हो रहा बंदरबांट।कार्यवाही न होने से प्रधान पुत्र के हौसले बुलंद। बसौढ़ी प्रधान पुत्र मो.शाकिब के बिगड़े बोल।पत्रकार के जानकारी लेने पर आज तीसरे दिन भी कहा फर्जी चल रही 92 मजदूरों की हाजिरी। तारीक27,28,29,/12/2024 की कवरेज के दौरान अपरान्ह 03 बजे.92 ऑनलाइन चल रहे मजदूरों के सम्बन्ध मे जानकारी लेने पर प्रधान पुत्र हुआ आग बबूला। पत्रकार से कहा जो करना है करो। खबर का मेरे ऊपर नही होगा कोई असर।आखिर किसकी सह पर प्रधान पुत्र कर रहा सरकारी धन का बंदरबांट। आज भी मौके पर नही मिले एक भी मजदूर। सिर्फकागजों पर ही चलता है मनरेगा मजदूरी का कार्य।किसानों की गेंहू की उगी हुई फसल को खोदकर कराया जा रहा मार्ग पटाई का कार्य। न खाता न बही जऊँन प्रधान करै वहै सही। पत्रकार को धमकाते हुए प्रधान पुत्र का ऑडियो भी हो रहा वायरल। पूरा मामला मवई विकास खंड के बसौढ़ी गांव का है। वहीं जब इस संबन्ध मे डी.सी मनरेगा अयोध्या से बात करने की कोशिश की गई तो उनका सेल फोन नहीं रिसीव हुआ।

गाय की मौत पर 65 हजार रुपये चुकाए बीमा कंपनी

डलमऊ-रायबरेली। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग ने साढ़े छह साल पुराने एक मामले का निस्तारण करते हुए गाय की मौत पर बीमा कंपनी को 65 हजार रुपये चुकाने का आदेश दिया है। आदेश जारी होने के बाद 45 दिन में क्लेम की धनराशि पशुपालक को न चुकाने पर बीमा कंपनी को सात प्रतिशत ब्याज भी देना होगा। डलमऊ तहसील के ग्राम मधुकरपुर निवासी हरि प्रताप सिंह ने 28 मार्च 2017 को जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग में नेशनल इंश्योरेंस कंपनी के खिलाफपरिवाद दाखिल किया था। इसमें बताया कि माइक्रो कामधेनु योजना के तहत 25 लाख का ऋण बैंक ऑफ बड़ौदा रेल कोच शाखा शेखवापुर से लिया था।बैंक से मिली पहली किस्त से 12 गायों की खरीद की गई और दूसरी किस्त की धनराशि से 13 गायों को खरीदा गया।

एसडीएम ने अफीम के खेतों पर मारा छापा, किसानों में मचा हड़कम्प

● शराब की दुकानों का निरीक्षण कर लाइसेंस की जांच की ● रेट लिस्ट न मिलने पर सेल्समैन को लगायी कड़ी फटकार

महराजगंज-रायबरेली। एसडीएम सचिन यादव ने मादक पदार्थ पर शिकंजा कस दिया है। इसके तहत उन्होंने तहसील क्षेत्र के बेड़ारू एवं देहली के दो अफीम के लाइसेंसी किसानों के खेत पर छापा मारा। छापे के दौरान पुलिस बल मौजूद रहा। छापामारी के दौरान एसडीएम ने लाइसेंसी किसान के खेत पर लगे अफीम की फसल के क्षेत्रफल की क्षेत्रीय लेखपाल से मौके पर जांच कराई। अफीम की खेती कर रहा लाइसेंसी निर्धारित लाइसेंस के अनुसार ही मौके पर काबिज मिला।एसडीएम ने मौके से ही बाराबंकी जनपद के जिला अफीम अधिकारी करुण बिलग्रामी से अफीम के लाइसेंसी किसान के लाइसेंस की जांच पड़ताल की। इसके बाद उप जिलाधिकारी ने क्षेत्र के मनऊ खेड़ा व शिवली की शराब की दुकानों का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण में मदिरा की दुकानों पर रेट लिस्ट न होने पर उन्होंने सेल्समैन को कड़ी फटकार लगाई।उन्होंने मौके पर ही मदिरा दुकानदारों पर जुर्माना लगाकर धनराशि भी जमा कराई। एसडीएम की इस कार्यवाही से अफीम लाइसेंसी एवं मदिरा दुकानदारों में हड़कंप रहा। मादक पदार्थों पर शिकंजा कसने के उद्देश्य से की गई जांच में शुक्रवार को तहसील क्षेत्र के बेड़ारू गांव निवासी जमुना प्रसाद पुत्र महादेव गाटा संख्या 1772 रकबा 0.100 हेक्टर एवं क्षेत्र के देहली गांव निवासी रामचरन पुत्र ननकऊ गाटा संख्या 1563 रकबा 0.100 हेक्टर भूमि पर अफीम की खेती कर रहे हैं। यह दोनों किसान बाराबंकी जनपद के जिला अफीम अधिकारी से अफीम की खेती के लिए लाइसेंस धारक हैं। एसडीएम सचिन यादव ने बताया कि, शुक्रवार को दोनों अफीम उत्पादन के लाइसेंसी किसानों के खेत पर क्षेत्रीय लेखपाल के साथ मौके पर जाकर जांच की गई। उन्होंने बताया कि, मौके पर अफीम लाइसेंसी किसान लाइसेंस के अनुसार ही भूमि पर अफीम की फसल तैयार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि, बाराबंकी जनपद के जिला अफीम अधिकारी से दोनों अफीम किसानों के लाइसेंस की पुष्टि की गई है। एसडीएम ने मौके पर ही दोनों लाइसेंसी किसानों को निर्देशित किया है कि, वह लाइसेंस के मानक के अनुरूप ही अफीम के फसल का उत्पादन करें, अनियमितता मिली तो बक्से नहीं जाएंगे। इसके बाद उन्होंने क्षेत्र के मनऊ खेड़ा व शिवली की मदिरा की दो दुकानों पर छापा मारा, जहां उन्हें दोनों दुकानों पर रेट लिस्ट नहीं मिला। रेट लिस्ट ना मिलने पर उन्होंने सेल्समैन को कड़ी फटकार लगाई और मौके पर मदिरा दुकानदारों को चेतावनी देते हुए अर्थ दंड कर जुर्माना भी वसूला गया। एसडीएम के इस औचक निरीक्षण से अफीम लाइसेंसी किसानों एवं मदिरा दुकानदारों में हड़कंप रहा।

कड़ाके की ठंड से बचाने के लिये विद्यालय प्रबंधन ने गरीबों को बांटे कम्बल

महराजगंज-रायबरेली। गुरुकुल ग्रुप ऑफइंस्टिट्यूशन की ओर से समाज हित में लगातार कार्य किए जा रहे हैं, विद्यालय प्रबंधन द्वारा प्रत्येक वर्ष गरीब जरूरतमंदो को ठंड से बचाव के लिए कम्बल वितरित किए जाते हैं। उसी क्रम में स्वर्गीय रामदत्त मिश्रा की पुण्यतिथि पर आज शनिवार को विद्यालय प्रबंधन द्वारा ग्राम पंचायत मुरैनी में कम्बल वितरण का आयोजन किया गया। विद्यालय के प्रबंधक आर डी मिश्र व उपाध्यक्ष पूजा मिश्रा द्वारा मुरैनी ग्राम पंचायत के करीब 200 जरूरतमंदो को ठंड से निजात के लिए कम्बल वितरित किए। इस दौरान उपाध्यक्ष पूजा मिश्रा ने कहा कि, गरीब और जरूरतमंदो की सेवा करने पर ईश्वर पुण्य प्रदान करता है, और सेवाभाव के कारण एक अलग प्रकार की आत्मसंतुष्टि मिलती है। उन्होंने कहा कि, हर किसी को आगे आकर गरीबों की मदद करने चाहिए। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि, कोई गरीब भूखा ना रहे। सर्दी से बचाव के लिए भी गरीबों की मदद करनी चाहिए। प्रधान प्रतिनिधि रणविजय सिंह एडवोकेट ने कहा कि, गुरुकुल ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन की उपाध्यक्ष पूजा मिश्रा द्वारा उनकी ग्राम पंचायत मुरैनी के हर धर्म और समुदाय के जरूरतमंदों को कंबल दिया गया, जिन्हें वास्तविक में कंबल की जरूरत थी उन्हें ढूंढ कर दिया गया है। धर्म और जाति बंधन से दूर हटकर ठंड के मौसम में गर्म कपड़े और कंबल का वितरण किया जाता है। निश्चित तैर पर गुरुकुल ग्रुप ऑफइंस्टिट्यूशन के सभी पदाधिकारियों का इस ठंड के मौसम में पुनीत कार्य के लिए सराहनीय कदम है। इस मौके पर मुरैनी प्रधान दीपू, कल्पेश शुक्ला पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य, अध्यापक अमित पांडेय, महेश सिंह, राम सिंह, शिवमोहन सिंह, रविंद्र सिंह, सुशील मिश्रा, गुड़ई तिवारी, शेर बहादुर, अश बहादुर, सत्यम सिंह, मुकेश सिंह, राहुल मिश्रा, कप्तान सिंह, नान पांडेय, अजय शुक्ला, भानु सिंह, राकेश, करन सिंह, महेंद्र, कमलेश पासी आदि मौजूद रहे।

पैतीस फीसदी राशन कार्ड धारकों ने नही कराया केवाईसी, कैसे मिलेगा राशन

महराजगंज-रायबरेली। राशन कार्ड में दर्ज सभी यूनिटों की ई-केवाईसी पिछले कई महीनों से चल रही है। इसके बाद भी करीब 35 फीसदी राशन कार्ड धारक ऐसे हैं जिन्होंने ई-केवाईसी नहीं कराई है। अब इनको 31 दिसम्बर तक का समय दिया गया है। जितनी यूनिटों की ई-केवाईसी नहीं होगी, उनका राशन मिलना जनवरी से बंद हो जाएगा। पूर्ति निरीक्षक महराजगंज एवं शिवगढ़ अविनाश चंद्र पांडेय और अमित सिंह यादव ने बताया कि, राशन कार्ड धारक कार्ड में दर्ज सभी यूनिटों की ई-केवाईसी अपनी कोटे की दुकान पर जाकर करा लें। राशन कार्ड में दर्ज सभी सदस्यों (यूनिट) की ई-केवाईसी कराने का निर्देश शासन ने दिया। महराजगंज में पिछले कई महीने से ई-केवाईसी की प्रक्रिया चल रही है। इसके बाद भी अब तक 65 फीसदी काम पूरा हो सका है। राशन कार्ड में दर्ज करीब 35 प्रतिशत यूनिटों की ई-केवाईसी अब तक नहीं कराई गई है। जिनकी ई-केवाईसी नहीं हुई है, उनका राशन मिलना जनवरी महीने से बंद हो जाएगा।

महाकुम्भ की तैयारियों जोरों पर बछरावां हाइवे की सजावट जारी

☐ सड़क के किनारे फैले अतिक्रमण की भी हो रही सफाई

बछरावां-रायबरेली। महाकुंभ की तैयारियां प्रसाशन द्वारा जोरों शोरो से की जा रही है कुछ दिन पूर्व सरकारी बिल्डिंगो के आसपास के अतिक्रमड़ों को हटाया गया था, अब उन्ही बिल्डिंगों की दीवारों पर पोस्टर लगना शुरू हो गये है। बछरावां विकास खंड जो कि लखनऊ प्रयागराज हाईवे पर स्थित है जिसकी दीवार के किनारे पूरी तरह से रेहड़ी दुकानदारों ने कब्जा कर रक्खा था जिसके हटने के बाद उन दीवारों पर अब कुम्भ स्नान के लिये जा रहे स्नानार्थियों के लिये बधाई संदेश लिखे पोस्टर लगे दिखे। वही दूसरी ओर नगर के मुख्य चौराहै के अवैध अतिक्रमण पर शासन का पीला पंजा खूब चला। विदित हो कि बछरावां कस्बे के लखनऊ प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग पर महाकुंभ के पर्व को लेकर प्रशासन ने बछरांवा में चौराहे पर दोनों तरफ अवैध अतिक्रमणकारियों से यातायात को बाधित कर जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए पूर्व में अतिक्रमणकारियों को चेतावनी दी गयी थी लेकिन दबंग अतिक्रमणकारियो ने प्रशासन के आदेश को अनसुना कर दिया, जिस पर जिलाधिकारी के निर्देश पर नगर पंचायत एवं पुलिस प्रशासन ने रविवार को सुबह अवैध अतिक्रमणकारियों के अतिक्रमण को हटवाया। प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार में प्रशासन अपने पूरे रौब में रहा, पूरी तरीके से बछरावां चौराहे को अतिक्रमण मुक्त कर दिया गया। वही एक और इस कार्यवाही को लेकर जहां व्यापारी संगठन आक्रोश व्यक्त कर रहे हैं तो दूसरी ओर आम जन मानस प्रशासन की इस कार्यवाही को जायज ठहरा रही है।

युवा अधिवक्ता अतुल पांडेय को मातृशोक

महराजगंजं-रायबरेली। युवा अधिवक्ता अतुल पाण्डेय की मां शान्ति राजा देवी (76) के निधन पर महराजगंज बार एसोसिएशन महराजगंज व तहसील वार एसोसिएशन महराजगंज के पदाधिकारियों ने गहरा जताया है। शोक व्यक्त करने वालों में अध्यक्ष देवी प्रसाद, अध्यक्ष छोटेलाल, सुरेंद्र श्रीवास्तव, वरिष्ठ अधिवक्ता शिवसागर अवस्थी, पूर्व अध्यक्ष विद्यासागर अवस्थी, पूर्व महामंत्री ज्योति प्रकाश अवस्थी, प्रेस क्लब संरक्षक व अधिवक्ता अजय श्रीवास्तव, अधिवक्ता व प्रेस का अध्यक्ष मुकेश श्रीवास्तव, मोहन त्रिवेदी, मोहन सिंह, अतुल श्रीवास्तव, रणविजय सिंह, अमित सिंह, प्रेम सिंह, राधेश्याम, सत्य प्रकाश मिश्रा, इम्तियाज अली, मोनू अवस्थी आदि हैं।

तहसील के युवा अधिवक्ता अतुल पांडेय की वयोवृद्ध माँ एवं युवा अधिवक्ता शिवम पांडेय की दादी ष्शांति राजा देवीष् का लंबी बीमारी के दौरान शुक्रवार की रात लगभग 9रू00 बजे हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। युवा अधिवक्ता अतुल पांडेय ने शनिवार को दोपहर बाद अपने निवास गृहग्राम मऊ स्थित पैत्रक बगीचे की मोक्ष भूमि में पूरे रीति रिवाज के साथ अंतिम संस्कार किया गया। इस दौरान हजारों की तादाद लोग उनके अंतिम दर्शन को पहुंचे। शांति राजा देवी की शवयात्रा में तहसील भर के गणमान्यजन, अधिवक्ता सहित स्थानीय लोग शामिल हुए। सभी ने अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से मृत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देने की प्रार्थना की। शव यात्रा में प्रमुख रूप से शिव प्रकाश पांडेय, देव प्रकाश पांडेय, लोकनाथ पांडेय, अजीत प्रताप सिंह प्रधानाध्यापक, भोलू सिंह, अरुण कुमार मिश्रा, डीडी मिश्रा, भोलानाथ तिवारी, अरुण

सिख समुदाय ने 'सफर ए शहादत दिवस' पर गुरु गोविंद सिंह के साहिबजादों को किया याद

महराजगंजं-रायबरेली। सिख समाज 21 दिसंबर से 29 दिसंबर तक गुरु गोविंद सिंह के चार साहिबजादों और माता की शहादत दिवस मना रहा है। इसी क्रम में रविवार को कस्बे के रायबरेली रोड पर सिख समुदाय के लोगों द्वारा लंगर लगाया गया। प्रेस क्लब महराजगंज के समीप बिस्कुट चाय का लंगर लगाया गया।पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष सरदार पन्ने सिंह ने बताया कि, गुरु गोबिंद सिंह के चार साहिबजादों और माता गुजरी कौर की शहादत पर सिख समाज द्वारा कोई खुशी नहीं मनाई जाती। इस दिन कोई विवाह, ग्रह प्रवेश, घर में मीठे पकवान, जन्मदिन आदि नहीं मनाते। इसके अलावा गर्म दूध व लंगर की व्यवस्था संगत के लिए की जाती है। इन दिनों सभी सिख परिवार अमृत समय में बच्चों के साथ प्रभु सिमरन करते है। इस दौरान 21 से 29 दिसंबर यानी आज तक कस्बे के विभिन्न स्थानों व शैक्षणिक संस्थाओं में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करवाए गए हैं। इसमें संगत को चार साहिबजादों की शहादत के बारे में बताया गया। आज रविवार को महराजगंज रायबरेली रोड पर प्रेस क्लब के समीप में भी सफर ए शहादत दिवस को समर्पित बिस्कुट चाय कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें सरदार जगजीत सिंह, समरजीत सिंह, सरदार मनमोहन सिंह, सरदार सुरजीत सिंह, सरदार अमन सिंह, सरदार प्रितपाल सिंह, सरदार विक्की, सरदार दलजीत सिंह के अलावा पूर्व प्रत्याशी नगर पंचायत सोमनाथ गुप्ता, प्रेमनाथ गुप्ता, भूपेंद्र सिंह, अचिन गुप्ता, देवेंद्र चौरसिया आदि सेवा भाव में लगे रहे। सरदार जगजीत सिंह ने सभी को बताया कि, युवा पीढ़ी को चार साहिबजादों के अविस्मरणीय बलिदान को याद रखना चाहिए। उन्होंने युवाओं को साहिबजादों के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। सरदार समरजीत सिंह ने युवाओं को चमकौर का युद्ध पर वाचन कर सभी को उस पल के साथ एकाग्र कर दिया। उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह और साहिबजादों के इतिहास से सबको रूबरू कराया।

महिला ने पति, सास और देवर पर दर्ज कराया केस

महराजगंज-रायबरेली।रू कोतवाली क्षेत्र के रामपुर मजरे हलोर गांव में एक महिला ने अपने पति, देवरा तथा सास पर मारपीट कर घर से भागने का मुकदमा दर्ज कराया है। महराजगंज पुलिस नें महिला की तहरीर पर तीन के खिलाफ केस दर्ज कर अग्रिम कर्यवाही कर रही है। घटना 23 दिसम्बर की है। गांव निवासिनी संगीता पत्नी गुड्डू ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि, घर में पारिवारिक विवाद चल रहा हैं। पहले तो उसके पति, देवर और सास ने उसे घर से भागने का प्रयास किया। जब वह घर से नहीं भागी तो सभी ने एक राय होकर उसके साथ लाठी डंडों से मारपीट करी, जिसमें वह चोटिल हो गई है।

भाजपा जिला उपाध्यक्ष ने सैकड़ो समर्थकों के साथ सुनी प्रधानमंत्री के मन की बात

बछरावां-रायबरेली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने रेडियो कार्यक्रम श्मन की बातश् के जरिए लोगों को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने लोगों को नए साल की शुभकामनाएं दीं। पीएम मोदी ने संविधान पर भी बात की। मन की बातश् के 117वें एपिसोड में पीएम मोदी ने कहा कि, 2025 में 26 जनवरी को हमारे संविधान को लागू हुए 75 वर्ष होने जा रहे हैं। हम सभी के लिए बहुत गौरव की बात है। हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें जो संविधान सौंपा है, वो समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है। संविधान हमारे लिए दिशा दिखाने वाली रोशनी है, हमारा मार्गदर्शक है। यह भारत का संविधान ही है जिसकी वजह से वह आज यहां हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का रेडियो कार्यक्रम मन की बात को भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष जनमेजय सिंह ने मंडल महराजगंज के बूथ संख्या 294 पर बूथ के लोगो के साथ सुना। जिला उपाध्यक्ष ने मीडिया को बताया कि, मन की बात कार्यक्रम के माध्यम से प्रत्येक महीने के आखिरी रविवार को प्रधानमंत्री सीधे देश वाशियों के साथ जुड़ते है। प्रयागराज में हो रहे महाकुंभ की चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि महाकुंभ का संदेश, एक हो पूरा देश, गँगा की अविरल धारा, न बंटे समाज हमारा। इस महाकुंभ में चौट बाट के माध्यम से 11 भारतीय भाषाओं में सवांद स्थापित किया जा सकता है। आज कैंसर के इलाज में भी भारत को बड़ी सफलता मिली है। मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि, कैंसर मरीजों के इलाज में आयुष्मान कार्ड बड़ी भूमिका निभा रहा है। जिला उपाध्यक्ष श्री सिंह ने बताया कि, प्रधानमंत्री ने ओडिशा के काला हांडी की चर्चा करते हुए कहा कि, वहाँ के लोगो ने जो नई सब्जी क्रांति लायी है, निश्चित ही बहुत ही सराहनीय है। इनसे साफहोता है कि, दृढ़ संकल्प और सामूहिक प्रयास से सफलता निश्चित है। प्रधानमंत्री के ष्मन की बातष् कार्यक्रम का रेडियो प्रसारण सुनने वालों में प्रधान डब्बू सिंह, पूर्व प्रधान मथुरा पासी, सुरेंद्र शर्मा, राम प्रकाश पासी बीडीसी, जगत वर्मा, रिंकू पांडेय, तीरथ प्रजापति, रामकुमार वर्मा, रमेश मौर्य, राजन मौर्य, शिव बालक गुप्ता, मोहम्मद इद्रीस, रामतीरथ पासी आदि बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

कोहरे व सर्दी से अपने घरों में दुबके रहे लोग, सड़कों पर रेगते नजर आये वाहन

रायबरेली। रविवार की सुबह पूरा आसमान कोहरे की चादर से ढका रहा। लोग घरों से काफी देर बाद ही बाहर निकले। कड़ाके की ठंड ने सामान्य जनजीवन को प्रभावित किया है। इसकी वजह से लोग कपकंपा उठे। सुबह 12 बजे के बाद सूर्यदेव का दर्शन हुआ, तब जाकर लोगों ने राहत की सांस ली। कोहरे की वजह से जनजीवन पूरी तरह प्रभावित रहा। रात में कभी-कभार कोहरा भी दिखाई पड़ रहा था। लेकिन ठंड का मिला जुला असर था। रविवार को अचानक मौसम का मिजाज बदला और आठ बजने के बाद पूरा आसमान कोहरे की चादर से ढक गया। सड़कों पर चलने वाले वाहन धीमी गति से लाइट जला कर चल रहे। अचानक ठंड बढ़ने से सुबह तक आम जनजीवन घरों में कैद रहा। मौसम के करवट बदलते ही रविवार को कोहरे ने पूरे षहर को अपने आगोष में ले लिया जिससे सड़कों पर वाहन रेंगते रहे। जो सफर कुछ मिनटों का था, उसे पूरा करने में घंटों लग गए। सर्दी के तेवर से लोग बेहाल रहे। ठंड से बचने के लिए अलाव का सहारा लिया और घरों में ही दुबके रहे। दोपहर के समय कुछ देर के लिए हल्की धूप निकली तो लोगों ने राहत की सांस ली। मंगलवार रात नौ बजे तक मौसम साफ रहा। बुधवार की सुबह लोगों की नींद खुली तो कोहरा छाया रहा। कोहरा इस कदर घना था कि चंद कदम की दूरी पर आने-जाने वाले लोग या वाहन भी बड़ी मुश्किल से दिखे। करीब 10 बजे तक सड़कों पर वाहनों की रफ्तार बेहद धीमी रही। दोपहर में कोहरा छंटा। दो से तीन घंटे ही सकून रहा। इसके बाद धीरे-धीरे सर्दी ने असर दिखाना शुरू कर दिया। इधर, हर दिन सर्दी का सितम बढ़ता जा रहा है, जिससे लोगों की मुश्किलें भी बढ़ रही हैं। सर्दी के कारण बाजारों में चहल-पहल कम हो गई है। सर्दी को देखते हुए नगर पालिका ने जिला अस्पताल, डिग्री कॉलेज, सिविल लाइंस समेत अन्य चौराहों पर अलाव जलवाए। घने कोहरे के के चलते कई घंटे तक विभिन्न राजमार्गों पर वाहनों की रफ्तार काफी धीमी रहीं। हाइवे पर वाहनों का आवागमन थमने लगी। कुछ वाहन हेड लाइट जलाकर आते-जाते रहें। हाइवे पर घने कोहरे छाए रहने से लंबे रूट वाले वाहनों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। सुबह नौ बजे के बाद कोहरे छंटने शुरू हुए तो हाइवे पर वाहनों की आवागमन किसी तरह बहाल हुआ। ठंड ने लोगों की दिनचर्या को भी प्रभावित कर दिया है।

उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त पत्रकार समिति की बैठक मे उठाये गये अहम मुद्दे

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त पत्रकार समिति सुलतानपुर की एक बैठक प्रेस क्लब में आयोजित की गयी। समिति के जिला संयोजक अरुण कुमार जायसवाल ने संगठन की रूपरेखा पर चर्चा करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त पत्रकार समिति अब अपने संगठन का विस्तार करते हुए प्रत्येक जनपदों में कार्यकारिणी का गठन कर रही है। इसी क्रम में रविवार को सुलतानपुर जनपद ईकाई की बैठक सभी मान्यता प्राप्त पत्रकार साथियों के साथ आयोजित की गयी। अब हम अपने इस संगठन के माध्यम से जनपद में कार्यरत मान्यता प्राप्त पत्रकारों की समस्याओं के निराकरण एवं शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं को सरलता से उपयोगी हो इसके लिए हम सब मिलकर कार्य करेंगे। बैठक में वरिष्ठ पत्रकार सत्यदेव तिवारी ने कहा कि पत्रकार शासन-प्रशासन एवं आमजन के बीच सेतु का कार्य करता है, हमें अपनी विश्वसनीयता को कायम रखते हुए कार्य करना चाहिए। पत्रकार अनिल द्विवेदी ने कहा कि आज भी शासन प्रशासन के निर्देश पर स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराने में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। कई पत्रकार साथियों के आयुष्मान कार्ड अभी भी नहीं बनें है, इसके लिए संगठन आगे आये और अपनी भूमिका का निर्वहन करे। जिला संयोजक अरुण कुमार जायसवाल ने उपस्थित पत्रकारों साथियों को यह भरोसा देते हुए कहा कि अब मान्यता प्राप्त पत्रकार साथियों के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। आवश्यकता पड़ी तो हम हर स्तर से पत्रकार साथियों के हितों की रक्षा, सुरक्षा करने में कोई हिचकिचाहट नहीं की जायेगी। बैठक में दर्शन साहू, दयाशंकर गुप्ता, श्याम चन्द्र श्रीवास्तव, अंकित राय, ज्ञानेंद्र विक्रम सिंह रवि, उमेश कुमार तिवारी, नीरज तिवारी, अवधेश गुप्ता सहित अनेक पत्रकार उपस्थित रहे।

उत्कृष्ट समाज सेवक सम्मान से सम्मानित हुए समाजसेवी कुलदीप

गोरखपुर। समाज सेवा के क्षेत्र मे अपने आपको समर्पित किये गोरखपुर शहर के सुप्रसिद्ध युवा समाजसेवी एवं युवा जनकल्याण समिति के प्रमुख व अध्यक्ष कुलदीप पाण्डेय को पूर्वांचल फ़िजियोथेरेपिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा आयोजित एक समारोह मे उत्कृष्ट समाजसेवी सम्मान से सम्मानित किया गया। संस्था के चेयरपर्सन कार्यक्रम आयोजक डॉ. राकेश कुमार सिंह फ़िजियोथैरेपिस्ट व को-चेयरपर्सन डॉ. एम. एल. यादव फ़िजियोथेरेपिस्ट, सचिव डॉ.रवि राव तथा डॉ.अनूप मिश्रा,डॉ. सोभित श्रीवास्तव,डॉ. डिके कुशवाहा एवं कवियत्री डा. सरिता सिंह द्वारा मोमेण्टो भेट कर सम्मानित किया गया। गोरखपुर शहर के राजेन्द्र नगर पश्चिमी गोकुलधाम निवासी पं बृजेश पाण्डेय ज्योतिषाचार्य के पुत्र कुलदीप पाण्डेय पिछले दस वर्षों से समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते चले आ रहे हैं,समाज में शिक्षा का अलख,भूखमरी से बचाने हेतु असहाय जरूरतमंदों कि सेवा, सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के प्रति अग्रसर है। समाजसेवी कुलदीप पाण्डेय पिछले कई वर्षों में जिलास्तर से राज्य स्तर तक के सैकड़ों सामाजिक संगठनों व संस्थाओं से लगभग पाँच सौ से अधिक एवार्ड व सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। कुलदीप ने कहा कि सम्मान के लिए एसोसिएशन के सभी पदाधिकारियों का सहृदय आभार जिन्होंने मेरे सामाजिक कार्यों कि सराहना किये।

उत्तर प्रदेश जनहित व्यापार मंडल ने सरोजिनी नगर क्षेत्र के सबसे बड़े बाजार गौरी में अपने संगठन का किया विस्तार

• दिलीप रावत बने गौरी बाजार जनहित व्यापार मंडल के अध्यक्ष

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजिनीनगर। उत्तर प्रदेश जनहित व्यापार मंडल ने आज दिनांक 29 दिसंबर 2024 को गौरी बाजार के जेपी लान में एक आयोजित समारोह में प्रदेश अध्यक्ष ओम प्रकाश शर्मा की अध्यक्षता में गौरी बाजार जनहित व्यापार मंडल का किया गया गठन इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राम सिंह यादव अध्यक्ष ग्रुप ऑफ हीरालाल कॉलेजेस विशिष्ट अतिथि शिवकुमार सिंह चंचू जिला अध्यक्ष अरविंद भाई खखेडी के साथ प्रदेश महासचिव विनोद सिंह रवीश कुमार श्रीवास्तव प्रदेश उपाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह डॉक्टर एके सिंह के साथ लखनऊ जिला प्रभारी गोविंद मणि तिवारी एयरपोर्ट व्यापार मंडल नादरगंज व्यापार मंडल शांति नगर व्यापार मंडल सरोजिनी नगर के अध्यक्ष महामंत्री एवं पदाधिकारी सहित पूर्व पार्षद सुरेश रावत हरिनाम यादव सहित कई पदाधिकारी और व्यापारी उपस्थित रहे इस अवसर पर प्रदेश

जिले वह विधानसभा कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए प्रदेश अध्यक्ष माननीय ओम प्रकाश शर्मा जी ने दिलीप द्विवेदी अमरीश यादव को प्रदेश के संगठन मंत्री डॉ राधेश्याम को प्रदेश का मंत्री का कार्यभार सौपा साथ ही साथ शांति नगर के अर्चना चतुर्वेदी को सरोजिनी नगर विधानसभा महिला प्रकोष्ठ का विधानसभा प्रभारी व रेखा तिवारी जी को सरोजिनी नगर विधानसभा स्तर का महिला प्रकोष्ठ का उपाध्यक्ष बनाया गया तथा जितेंद्र हजेला शेरू को सरोजिनी नगर का विधानसभा प्रभारी बनाया गया मुकेश यादव जी को विधानसभा समीक्षा प्रभारी बनाया गया गौरी बाजार में अध्यक्ष दिलीप रावत के साथ-साथ गौरी बाजार के प्रभारी के रूप में विनोद कुमार महामंत्री पद पर सूरज कुमार कोषाध्यक्ष पर गौरव वर्मा वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर राजेश सिंह उपाध्यक्ष अनुज यादव अभिषेक वर्मा मोहित शुक्लाअवधेश सिंह गोल्डी संगठन मंत्री के रूप में अमित कुमार साहू गौतम कुमार नगर सुधीर मिश्रा संतोष कुमार यादव संगठन मंत्री के रूप में गोलू कनौजिया सुशील राजभर विजेंद्र कुमार संदीप यादव और विधिक सलाहकार के रूप में प्रमोद कुमार जी को मनोनयन किया गया इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष ओम प्रकाश शर्मा जी ने बताया की गौरी बाजार का संगठन सरोजिनी नगर क्षेत्र का सबसे बड़ा बाजार के रूप में या बहुत ही बड़ा संगठन तैयार किया गया है और यह संगठन बड़ी ईमानदारी के साथ जनहित व्यापार मंडल को आगे बढ़ने का कार्य करेगा सभी पदाधिकारी को फूलमाला पहनाकर उनका सम्मान किया गया एवं उनके उज्जवल भविष्य के कामना की गई, पूरे कार्यक्रम का संचालन अजय कुमार यादव बिन्नू के द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय बैटल स्पोर्ट्स डांस प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ी चयनित

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। महाराष्ट्र में 4-5 जनवरी को होने वाली राष्ट्रीय बैटल स्पोर्ट्स डांस चैंपियनशिप के लिए यूपी टीम का चयन कर लिया गया है। चयनित टीम 2 जनवरी को महाराष्ट्र के लिए रवाना होगी। रवाना होने वाली यूपी टीम के लिए के.डी. सिंह बाबू स्टेडियम में सेंड ऑफ सेरेमनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यूपी बैटल स्पोर्ट्स डांस के अध्यक्ष डॉ नीरज जैन, भारतीय खेल प्राधिकरण की पूर्व कार्यकारी निदेशक रचना गोविल (अर्जुन पुरस्कार विजेता, अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाज और एथलीट), डॉ. कीर्ति विक्रम सिंह, बैटल स्पोर्ट्स डांस एसोसिएशन ऑफ उत्तर प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष, सीईओ के वी पंत, उपाध्यक्ष सदन कुमार यादव, चेयरमैन रामानुज दीक्षित, विनय कुमार, संगठन के सचिव कमल जोशी एवं टीम कोच एवं मैनेजर ऋचा सिंह एवं प्रतिभा ने सभी खिलाड़ियों को आशीर्वाद देते हुए यूपी के लिए अधिक से अधिक पदक लाने के लिए उत्साहवर्धन किया।

यूपी की चयनित टीम: गार्गी द्विवेदी, गौरवी बंसल, वैदेही श्रीवास्तव, शिखा अग्रवाल, उदिशा, आशिका अवस्थी, जान्हवी आनंद अंशिका शर्मा, सुशिक्षा कश्यप, काशवीन कौर, अयांश कटोच, जगनूर कौर, रेयांश राठौड़, मोहल्लिका सिंह, नील श्रीवास्तव, अदिति आनंद, वर्षा मिश्रा, ओम कनौजिया, अनन्या रावत, अंकित कनौजिया, प्रखर त्रिपुदीप, शिव वर्मा, एकता गुप्ता, स्नेहलता, अभिज्ञ मिश्रा, कृषिव बत्रा, शनाया मेहता, दृष्टि हरसवानी, प्रिया सिंह, अंश, सविता,अनिशा मिश्रा, अविजित वैश्य, आराध्या पांडे, दीया पन्त, त्रशा बंसल, वैष्णवी पाण्डेय,रिया मौर्य, मिहिर राज गुप्ता, वैभव जयसवाल, उपलक्ष जायसवाल, शिवन्या श्रीवास्तव, आरना ग्रोवर, सौम्या तिवारी, कौशिकी मिश्रा, रीता जोशी, शनि कुमार, युगल, दिव्यांशु एवं अनन्या, नैमिष गुप्ता एवं मिहिर राज, प्रिशा रस्तोगी एवं शांभवी अग्रवाल, सिद्धिमा जैन एवं आरना जैन, चैतन्य प्रताप एवं कियारा, साहिल खान और मनीष त्रिपाठी, भावना एवं स्वाति, श्रेया बंसल, श्रेया बंसल एवं योग्या वर्मा, अविका अग्रवाल एवं समूह में है।

1. दीपाली, ईशान, आरुष, कंचन, रिषभ, काव्या, अन्नपूर्णा
2. आर्य सिंह, तमन्ना, समृद्धि, विधि, सैयद मरियम, दिव्यांशी, फातिमा, कुरलुताइन
3. सुजाता ,रश्मि, किरण, सुमन, सरिता, प्रोबोधिनी

अस्थायी गौशाला में भूख-प्यास से तड़प तड़प के गोवंश मर रहे है

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले के विकास खण्ड बिसवां के ग्राम पंचायत रामपुर घेरवा क्षेत्र के अस्थायी गौ आश्रय स्थल में बंद गोवंश की स्थिति काफी दयनीय होती जा रही है। यहां कई-कई दिन तक गौवंश को खाने के लिए चारा तक नहीं मिल रहा। वो भूख से तड़पने को मजबूर हैं।आश्रय स्थल पर पीने के लिए पानी तक नहीं है। इससे उनकी स्थिति बिगड़ती जा रही है।बीमार और घायल गोवंशों के उपचार तक की व्यवस्था नहीं है वह किसानों की फसलों को बर्बाद कर रहे हैं और सड़कों पर आवारा घूम रहे गोवंश के लिए ग्राम पंचायत ने पिछले दिनों अस्थायी रूप से आश्रय स्थल बनाया था। ब्लॉक की टीमें यहां विभिन्न क्षेत्रों से गोवंश को पकड़-पकड़ कर छोड़ जाती हैं।इन रखवाली के लिए चार कर्मचारी अस्थायी रूप से रखे गए हैं।मगर,यहां आने के बाद गोवंश की भूखा रखा जा रहा है। क्षेत्रीय लोगों का कहना है कि पहले आसपास घूमकर ये अपना पेट भर लेते थे लेकिन जब से चार दीवारी में कैद हुए हैं,तब से भूख से तड़प रहे हैं। वर्तमान में इस गौ आश्रय स्थल में दो सौ तीस से अधिक गोवंश को यहां बंद करके रखा गया है।इनमें से कई गोवंश गंभीर रूप से घायल हैं और कुछ बीमार हैं,लेकिन इसको भी कोई देखने वाला नहीं है।

स्टोर से लाखों का सामान चोरी रिपोर्ट दर्ज

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता इदरीश खान

सरोजनीनगर । प्रयागराज के आंख लैंड रोड स्थित डीके बिल्डर के सुपरवाइजर रुद्र प्रताप यादव ने बीती 22 नवंबर को बिजनौर स्थित स्टोर से कीमती सामान चोरी होने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। रुद्र प्रताप का कहना है कि वह बिजली का काम करते हैं और उनका बिजनौर के छुआरा खेड़ा, औरंगाबाद जागीर में स्टोर है। रुद्र प्रताप का कहना है कि उनके स्टाफ के घर पर शादी होने के कारण स्टाफ छुट्टी पर चला गया था। तभी 22 नवंबर को स्टोर से काफी सामान चोरी हो गया। जब 26 नवम्बर को स्टाफ वापस आया तो स्टोर का ताला टूटा होने के साथ 150 स्कायर एमएम के सात ड्रम बिजली केबिल और लगभग 7 टन स्क्रैप गायब मिला। आसपास जानकारी करने पर पता चला कि कुछ लोग 22 नवंबर को दोपहर 12 बजे से शाम 7 बजे तक पिकअप से सामान उठा ले गए हैं। यह जानकारी होने के बाद पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दी गई। तब पुलिस जांच कर चली गई। इसके बाद बिजनौर पुलिस को मामले से अवगत कराया। पुलिस रिपोर्ट दर्ज सीसीटीवी कैमरों के जरिए चोरों का सुराग लगाने में जुट गई है।

प्रदूषण के खिलाप नागरिकों ने की बैठक

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

झरिया/ धनबाद। कोयलांचल नागरिक मंच की आवश्यक बैठक आज लक्ष्मण वाटिका में किया गया , राजकुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में झरिया की प्रमुख समस्या प्रदूषण, विस्थापन , मोटेशन, सरकारी एजेंसियों के द्वारा अवैध टैक्स वसूली के विरोध में बैठक किया गया, । राजकुमार अग्रवाल ने कहा झरिया हित की लड़ाई झरिया की जनता कोयलांचल नागरिक मंच के बैनर तले लड़ती रही है और इन सारी समस्याओं के लिए फिर से झरिया की जनता ने कमर कस लिया है । एक जुट होकर हम लड़ाई को लड़ेंगे इसके लिए हम सभी सरकारी तंत्र , बीसीसीएल सीएमडी , धनबाद उपायुक्त को कोयलांचल नागरिक मंच के प्रतिनिधि इन लोगों से मिलकर पत्राचार करेंगे और उसके बाद 4 जनवरी 2025 को पुन बैठक कर झरिया में आंदोलन का बिगुल फूंकेंगे। झरिया में रोड से हाईबा बंद हो , प्रदूषण बंद हो, अब डंप को मानक के अनुसार किया जाए मुद्दे सहित जिम्मेवार अधिकारी को ज्ञापन देने कानिर्णय लिया गया । 31 दिसंबर 2024 को साल के आखिरी क्षण हम लोग पर्यावरण के नाम एक जन जागरूकता कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया। बैठक में राजकुमार अग्रवाल, डॉ मनोज सिंह, चंद्र प्रकाश चोखानी, अमित साहू दीपू, सत्यनारायण भोजगढ़िया, उमा भट्टाचार्जी आर सी पासवान, अखलाक अहमद, देवी साव, अजीत कुमार साव,नवीन केशरी, अजय वर्मा, आलोक गोस्वामी, शैलेन्द्र सिंह,रामनाथ पाठक, लखन प्रसाद,नंद किशोर सिंह आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे ।

बच्चों के बीच स्वेटर वितरण

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

तिसरा/ धनबाद। बढ़ती ठंड एवं शीतलहर के प्रकोप को देखते हुए झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की ओर से बाल विकास परियोजना बलियापुर ने रविवार को आंगनवाड़ी मुंडा थोड़ा गोल्डन पहाड़ी में 33 छात्र छात्राओं को स्वेटर वितरण किया गया इस अवसर पर मुकुंदा पंचायत के मुखिया रिंकू देवी प्रतिनिधि हीरालाल गोराई, पंचायत समिति सदस्य हीरालाल मोदक की ओर से वितरित किया गया। 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के बच्चों को कार्यक्रम के अंतर्गत स्वेटर का वितरण किया गया है। आंगनबाड़ी सेविका पार्वती देवी सहायिका तेतरी देवी पोषण सखी जोशना देवी मुख्य रूप से उपस्थित थे उन लोगों ने बताया कि हम लोगों का उद्देश्य पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों का सुरक्षा।

चार साहिबजादो के याद में जोड़ाफाटक में गरीबों के बीच कंबल वितरण

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। चार साहिबजादो के याद में रविवार को शरबत दा भला सेवा सोसाइटी की ओर से जोड़ाफाटक स्थित छोटा गुरुद्वारा प्रांगण में कंबल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया- कार्यक्रम में विशेष रूप से विधायक राज सिन्हा, पूर्व विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह,समाजसेवी दिलीप सिंह उपस्थित हुए। अतिथियों के हाथों जरूरतमंदो के बीच कंबल का वितरण किया गया ।शरबत दा भला सेवा सोसाइटी की ओर से करीब तीन सौ कंबल बांटा गया ।इस अवसर पर विधायक राज सिन्हा ने कहा कि इस तरह का आयोजन न केवल जरूरतमंदों की मदद का उदाहरण है, बल्कि समाज में आपसी सद्भाव और सेवा की भावना को भी दर्शाता है। पूर्णिमा नीरज सिंह ने कहा कि सर्द मौसम में जरूरतमंदों के लिए यह आयोजन एक प्रेरणादायक पहल साबित हो रही है। ऐसे आयोजनों से समाज में सेवा और सहयोग का संदेश प्रसारित होता है। दिलीप सिंह ने शरबत दा भला सेवा सोसाइटी की इस पहल की सरहाना करते हुए कहा कि वे सोसायटी के साथ हर समय खड़े हैं और इस तरह के आयोजनों में बढ़चढ़कर मदद के लिये सदैव साथ खड़े रहेंगे।धर्म और जाति बंधन से दूर हटकर ठंड के मौसम में गर्म कपड़े और कंबल का वितरण करना इनका प्रयास काबिले तारीफ है।

मंगल भवन अमंगल हारी, नारायणी थारो नाम सुखारी

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। मंगल भवन अमंगल हारी, नारायणी थारो नाम सुखारी .. धोये - धोये आंगने में आओ म्हारी दादी जी.. जैसे सुमधुर भजनों के बीच धनसार स्थित होटल सिद्धिविनायक में मंगल पाठ व ज्योत का आयोजन हुआ। मौका था श्री नारायणी परिवार झरिया धनबाद द्वारा राणी सती दादी जी के दो दिवसीय महोत्सव का । मंगल पाठ में 601 सुहागन महिलाएं शामिल हुई। राणी दादी के जन्म से लेकर सती होने तक की गाथा का बखान मंगल पाठ में किया गया। गणेश वंदना से पाठ की शुरुआत हुई। पाठ का वाचन कोलकाता से आए कथावाचक देविका बाजोरिया व श्वेता सरावगी मंगल पाठ एंड पार्टी ने किया। चुनरी व मेहंदी उत्सव भी मनाया गया। राणी सती दादी मां का भव्य श्रृंगार किया गया है। पूजन पंडित पवन चौबे ने कराया। मेवा व फल का भोग लगा। महोत्सव को लेकर कार्यक्रम सल को फूलों व विद्युत लाइट से आकर्षक तरीके से सजाया गया। रात 8. 30 बजे छप्पन भोग दादी जी को लगाया गया।इस दौरान झरिया के कलाकार पंकज मोदी व मनीष ने एक से बढ़कर भजन प्रस्तुत किया।गायकों ने 'सारे घर में डंका बाजे मां राणी सती कीज, दे दे थोड़ा प्यार दादी जीज,दादी खोल दे दरवाजे म्हे झुंझुनु आवनगाज आदि भजनों से भक्तों को बांधे रखा। राणी सती दादी जी किया गया श्रृंगार आरती के पश्चात महोत्सव का समापन किया गया। इससे पूर्व रविवार की सुबह श्रृंगार, चरण पादुका पूजा आरती व बूंदिया भोग लगाया गया। दादी जी की महाआरती के पश्चात महाप्रसाद वितरण किया गया. कार्यक्रम को सफल बनाने में गोपाल अग्रवाल, प्रवीण भिवानीवाला, प्रदीप तुलस्यान, राजेंद्र गोयल, आनंद बुसानिया, सुशील भिवानीवाला के अलावा नारायणी परिवार के सदस्यों का योगदान रहा।

राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने किया सोनितपुर जिले में सरकारी योजनाओं की समीक्षा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ

असम। राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने सोनितपुर जिले में आज विभिन्न सरकारी योजनाओं की समीक्षा करने के अलावा विभिन्न कार्यों के प्रगति और कार्यान्वयन का जायजा लिया। राज्यपाल आचार्य को जिला आयुक्त अंकुर भराली ने योजनाओं के कार्यान्वयन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। राज्यपाल ने मनरेगा के तहत योजनाओं के लक्ष्यों को समय पर पूरा करने की आवश्यकता पर जोर दिया। अमृत सरोवर मिशन के तहत जल निकायों का जीर्णोद्धार किया जाता है। राज्यपाल आचार्य ने संबंधित अधिकारियों को इसका भौतिक निरीक्षण करने का निर्देश दिया। हरियाली के महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने अधिकारियों को सार्वजनिक स्थानों पर वृक्षारोपण अभियान शुरू करने और इस कार्य में जनता की भागीदारी को प्रोत्साहित करने की सलाह दी। राज्यपाल आचार्य ने शिक्षा विभाग को स्कूल छोड़ने वालों की दर को कम करने के लिए रणनीति तैयार करने का भी निर्देश दिया। राज्यपाल ने पीएम किसान सम्मान निधि, पीएम फसल बीमा योजना, पीएमएवाई (जी) ओर जल जीवन मिशन जैसी योजनाओं की प्रगति की भी समीक्षा किया । इसके अलावा राज्यपाल आचार्य ने टीबी मुक्त भारत अभियान की समीक्षा के दौरान राज्यपाल ने लोगों से 'निक्षय मित्र' बनने और टीबी को पूरी तरह से खत्म करने के मिशन में योगदान देने का आग्रह किया। अपनी इस यात्रा के दौरान उन्होंने अपने पत्नी कुमुद देवी और तेजपुर के विधायक पृथ्वीराज राभा के साथ महाभैरव मंदिर दर्शन करते हुए राज्य के लोगों की समृद्धि के लिए भी प्रार्थना किया ।

नगर पंचायत हरगांव ने चलाया प्लास्टिक उन्मूलन के अन्तर्गत जुर्माना व जन –जागरण अभियान

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता राकेश पाण्डेय

सीतापुर। जिले की आदर्श नगर पंचायत हरगांव के अन्तर्गत नगर पंचायत के जिम्मेदारों द्वारा प्लास्टिक उन्मूलन अभियान चलाया गया। बताया गया कि नगर पंचायत हरगांव के अधिशाषी अधिकारी के नेतृत्व में नगर क्षेत्र में नगर पंचायत के कर्मचारियों ने अभियान के अन्तर्गत प्लास्टिक उन्मूलन अभियान चलाकर जांच कार्य करते हुए प्लास्टिक जप्तीकरण करके उसके हानि लाभ के बारे में विस्तार से जागरूक किया। मिली जानकारी के अनुसार जिले की आदर्श नगर पंचायत हरगांव के अधिशाषी अधिकारी श्रीश मिश्र ने शासन के द्वारा चलाए जा रहे सत्ताइस दिसम्बर से तीस दिसम्बर तक प्लास्टिक उन्मूलन महाभियान के अन्तर्गत नगर पंचायत के कस्बा हरगांव में नगर पंचायत के कर्मचारी अतुल कुमार, सुशील कुमार मिश्र, अहिबरन लाल,सुयस श्रीवास्तव,दीपक कुमार, अनूप गुप्ता,अभिषेक मिश्र, मो.कामरान,राकेश अवस्थी ने दुकान दुकान जाकर दुकानदारों के पास प्लास्टिक जप्तीकरण करते हुए उसके हानि लाभ के बारे में विस्तार से समझाया। इसके साथ ही चेतावनी भी दी कि अगर किसी के पास दुबारा प्लास्टिक थैली पायी गयी तो उसके खिलाफ कड़ी कार्यवाही कर पांच हजार रुपए का जुर्माना भी वसूला जायगा। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक हमारे स्वास्थ्य के लिए कितनी खतरनाक है इसकी भी जानकारी दी गई।

मदन कुमार आनंद होंगे जमुई के नए एसपी

☐ नया साल में संभालेंगे जमुई का कमान

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता कन्हैया सिंह

जमुई पटना। बिहार सरकार गृह विभाग आरक्षी शाखा ने जमुई पुलिस अधीक्षक चंद्र प्रकाश का तबादला कर दिया है। उन्हें बिहार विशेष सशस्त्र बल 03 , बोध गया का समादेष्टा बनाया गया है। वहीं आर्थिक अपराध इकाई के एसपी पद पर आसीन मदन कुमार आनंद को जमुई का नया पुलिस अधीक्षक बनाया गया है। गृह विभाग ने अदला-बदली की अधिसूचना जारी कर दी है। उधर अंत:पुर के नारद मुनि बताते हैं कि नवागत और स्थानांतरित एसपी के प्रभार का लेन-देन नए साल में संभव है। स्थानांतरित पुलिस अधीक्षक चंद्र प्रकाश फिलहाल छुट्टी पर हैं। 31 दिसंबर को उनके जमुई पहुंचने की उम्मीद है। इसके चलते प्रभार का आदान-प्रदान साल के अंतिम दिन यानी 31 दिसंबर अथवा नए साल में 01 जनवरी को हो सकता है। अंकित करने वाली बात है कि मदन कुमार आनंद का जमुई में दूसरा पदस्थापन है। इसके पहले वे यहां डीएसपी मुख्यालय के पद पर सेवा दे चुके हैं। उन्हें पराक्रमी पुलिस पदाधिकारी के रूप में जाना जाता है।

कदाचार मुक्त व शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई चौकीदार पद पर नियुक्ति की परीक्षा, 4517 परीक्षार्थी हुए उपस्थित

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। चौकीदार पद पर नियुक्ति के लिए योग्य अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा रविवार को जिले के खालसा हाई स्कूल बैंक मोड़, डीएवी हाई स्कूल दरी मोहल्ला, डीएवी पब्लिक स्कूल कुसुंडा, अपग्रेडेड हाई स्कूल लोवाडीह, एसएसएनएमएस इंटर कॉलेज सिजुआ, एसएसएलएनटी महिला कॉलेज धनबाद, बीएसएस महिला महाविद्यालय धनबाद, डीएवी पब्लिक स्कूल कोयला नगर, सरस्वती विद्या मंदिर भूली, पीके रॉय मेमोरियल कॉलेज सरायढेला एवं अभय सुंदरी गर्ल्स स्कूल धनबाद में आयोजित की गई। परीक्षा संपन्न होने के बाद एडीएम लॉ एंड ऑर्डर श्री पीयूष सिन्हा ने कहा कि सभी सेंटरों पर कदाचार मुक्त व शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा संपन्न हुई। परीक्षा के लिए 5080 में 4517 परीक्षार्थी उपस्थित हुए एवं 563 अनुपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि सुबह 9:00 बजे से पुराने समाहरणालय स्थित ट्रेजरी से प्रश्न पत्र लेकर प्रतिनियुक्त टीम अपने-अपने सेंटर के लिए रवाना हुई और समय पर सेंटर पहुंची। परीक्षा संपन्न होने के बाद उत्तर पुस्तिका लेकर सभी टीम समाहरणालय पहुंची। उन्होंने बताया कि सभी केंद्रों पर परीक्षार्थियों की अच्छे से जांच की गई। उनके एडमिट कार्ड के साथ उनके चेहरे का मिलान किया गया। एडमिट कार्ड एवं कलम के अलावा मोबाइल फोन सहित अन्य सभी प्रतिबंधित वस्तुओं को सेंटर से बाहर रखा गया। डेढ़ घंटे की परीक्षा सुबह 11:00 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक आयोजित की गई। सभी सेंटरों पर स्टेटिक मजिस्ट्रेट, गश्ती सह उड़न दस्ता दंडाधिकारी के साथ-साथ पुलिस पदाधिकारियों व पुलिस फोर्स मौजूद रहे। साथ ही अनुमंडल पदाधिकारी राजेश कुमार के प्रभार में जिला नियंत्रण कक्ष भी कार्यरत रहा। कदाचार मुक्त एवं शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा संपन्न कराने के लिए सभी परीक्षा केन्द्रों के 100 मीटर परिक्षेत्र में परीक्षा अवधि तक धारा-163 भा.ना.सु.सं. के तहत निषेधाज्ञा जारी की गई थी।

बसपा और बामसेफ के संयुक्त तत्वाधान में एकदिवसीय विचार गोष्ठी का हुआ आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। बहुजन समाज पार्टी एवं बामसेफ के संयुक्त तत्वाधान में रविवार को एकदिवसीय विचार गोष्ठी सर्किट हाउस सभागार,धनबाद में संपन्न हुई। यह विचार गोष्ठी गृह मंत्री अमित शाह द्वारा पिछले दिनों बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी पर किए गए आपत्तिजनक टिप्पणी के खिलाफ आयोजित किया गया था। बहुजन समाज पार्टी इस मामले लगातार आंदोलन करते रही है। जिला मुख्यालय पर पहले पुतला दहन कार्यक्रम किए थे फिर अपने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन कुमारी मायावती के आदेश अनुसार राष्ट्रव्यापी आंदोलन के तहत गत 24 दिसंबर 2024 को रणधीर वर्मा चौक पर धरना प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रपति के नाम उपायुक्त को ज्ञापन भी दिए थे, मगर आज तक गृह मंत्री से अमित शाह को नहीं हटाए जाने तो दूर अभी तक इस मामले माफी भी नहीं मांगने के खिलाफ लोगों में काफी रोष व्याप्त है और इसको लेकर आगे जुझारू आंदोलन के मूड में बसपा कार्यकर्ता है। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बहुजन समाज पार्टी के केंद्रीय राज्य प्रभारी डॉक्टर लालजी मेधांकर ने कहा कि भाजपा शुरू से ही अलोकतांत्रिक व तानाशाही रही है। ये कभी भी बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर एवं संविधान पर आस्था नहीं रखी है और यही कारण है कि अभी तक इस मामले अमित शाह के द्वारा माफी तक नहीं मांगा गया है। उन्होंने आने वाले नए साल 2025 संघर्ष का वर्ष बनाने एवं देश के बहुसंख्यक दलित, शोषित, वंचित बहुजन समाज एवं लोकतंत्र व संविधान पर आस्था रखने वाले लोगों के हित में संघर्ष तेज करने का आह्वान किया।विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रदेश अध्यक्ष,जोन प्रभारी सुबल दास ने कहा कि बहुजन समाज पार्टी सदैव ही बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर के सम्मान में आंदोलनरीत रही है। उनके सपनों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ती रही है तथा झारखंड समेत देश के बहुसंख्यक बहुजन समाज के हित में आगे भी संघर्ष जारी रखेगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष अभय कुमार ने जबकि संचालन जिला उपाध्यक्ष गणेश भारती ने किया। कार्यक्रम में जिला महासचिव मनोज दास, पूर्व प्रदेश सचिव गौतम कुमार, बाबूराम मांझी, सिंदरी विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी बाबूलाल दास, धनबाद विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी अनवरी खातून, धनबाद लोकसभा के पूर्व प्रत्याशी मोहन सिंह यादव, पुनीत अंबेडकर, अशोक रजक, अजीत दास, राजीव कुमार, अशोक कनौजिया, सुभाष, राजकुमार, भोला प्रसाद, नंदलाल राम, सुदेश रविदास, संजय दास, लालमोहन राम, नसरीन परवीन, शबनम परवीन, नसीमा खातून, रामेश्वर राम, हीरालाल राम, कमलेश प्रसाद, अखिलेश कुमार, शंकर यादव, कैलाश दास, मोहित राम, मनोज कुमार, अजय रजवार, मोहित कुमार, सकीना खातून, परमेश्वर रविदास, अनिल दास समेत काफी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जनता और सरकार के बीच मजबूत कड़ी है आपका विधायक – आपके द्वार जन संवाद शिविर – डॉ. राजेश्वर सिंह

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सरोजनीनगर से भाजपा विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीणों को उनके द्वार तक पहुंचाने तथा मेधावियों व गाँव के वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित करने के उद्देश से शुरू की गयी %आपका विधायक - आपके द्वार% जन संवाद शिविर की साप्ताहिक पहल 100 से अधिक आयोजनों का कीर्तिमान स्थापित कर चुकी है। रविवार को सरोजनीनगर विधानसभा क्षेत्र के कूडाईंटगांव, मजरा असरखेड़ा में 101वें %आपका विधायक - आपके द्वार% जनसुनवाई शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर में सैकड़ों ग्रामीणों ने भाग लिया और अपनी समस्याओं एवं सुझावों को साझा किया। शिविर के दौरान ग्रामवासियों ने आवास, स्ट्रीट व सोलर लाइट, निराश्रित महिला पेंशन और किसान सम्मान निधि से संबंधित 30 से अधिक आवेदन प्रस्तुत किए। इन सभी समस्याओं पर विधायक की टीम द्वारा प्रभावी कार्रवाई का आश्वासन दिया गया। शिविर के दौरान %गाँव की शान% पहल के तहत गाँव के होनहार विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने केसतत संकल्प क्रम में इंटरमीडिएट परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 2 मेधावियों अनामिका सिंह (79.8त्न), नैतिक पाल (71.8त्न) तथा हाईस्कूल परीक्षा में सबसे ज्यादा अंक लाने वाले 2 मेधावियों मोहिनी (79.17त्न) और धीरज पाल (72.17त्न) को साइकिल, दीवार घड़ी एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित करने तथा युवाओं को खेल संसाधन उपलब्ध कराने के क्रम में लगातर यूथ क्लबों की स्थापना भी की जा रही है, रविवार को आपका विधायक - आपके द्वार जन सुनवाई शिविर के दौरान 56 वें गर्ल्स यूथ क्लब का गठन कर कैरम, वॉलीबॉल, फुटबॉल आदि खेलों की स्पोर्ट्स किट प्रदान की गयी। शिविर के दौरान ग्राम प्रधान राम चन्द्र, सकरा प्रधान दिलीप मौर्या, बूथ अध्यक्ष बाबू पाल, समूह अध्यक्ष मधु सिंह, रेखा, गीता, सखी सोनी वर्मा एवं विमला, तथा वरिष्ठ नागरिक छोटे लाल एवं भगवती को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। शिविर के दौरान सभी उपस्थित क्षेत्रवासियों को विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा शुरू की गयी ताराशक्ति नि:शुल्क रसोई के माध्यम से ताजा एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया गया। गहरवारा पहुंची डॉ. राजेश्वर सिंह की विकास दर्शन रथयात्रा, उत्साहित नजर आये ग्रामीण - विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा विधानसभा क्षेत्र में संचालित विकास योजनाओं का लाभ ग्रामीण क्षेत्रों के अंतिम छोर तक पहुंचाने, हर लाभार्थी को योजनओं से जोड़ने तथा जनता से विकास सम्बंधित सुझाव प्राप्त करने के उद्देश्य से %सरोजनीनगर विकास दर्शन रथ यात्रा% संचालित है। रविवार को ग्राम पंचायत गहरवारा के मजरा रेवारी पहुंची यात्रा का ग्राम प्रधान के नेतृत्व में ग्रामीणों ने भव्य स्वागत किया। जनसंघ के समय के कार्यकर्ता, आपातकाल में 19 महीने जेल काटने वाले वरिष्ठ भाजपा नेता एवं बूथ अध्यक्ष विजय कुमार द्विवेदी को सम्मानित कर यात्रा की शुरुआत हुई। इस दौरान विधायक की टीम द्वारा क्षेत्र में कराये जा रहे कार्यों का उल्लेख करते हुए बताया गया कि सरोजनीनगर में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 140 से अधिक सिलाई सेंटर खुलवाए गए, तारा शक्ति नि:शुल्क रसोई के माध्यम से प्रतिदिन 400 जरुरत मंदों को ताजा, पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाया जा रहा है। डॉ. राजेश्वर सिंह के प्रयासों से अब तक मुख्यमंत्री रहत कोष से 700 से अधिक जरुरतमंदों को 15 करोड़ से अधिक की सहायता राशि उपलब्ध करवाई गयी, लखनऊ विश्व विद्यालय के कृषि संकाय, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय कैम्पस के लिए भूमि आवंटन, नीवा में आईटीआई की स्थापना, लातीफनगर में गर्ल्स डिग्री कॉलेज भवन के भवन के पुनर्निर्माण के लिए धनराशी स्वीकृत करवाई गयी। इस दौरान उपस्थित ग्रामीणों ने क्षेत्र के विकास सम्बंधित सुझावों से भी विधायक की टीम को अवगत कराया। यात्रा के दौरान ग्राम प्रधान गहरवारा शिव कुमार, पूर्व ब्लाक प्रमुख राम विलास, अजय सिंह यादव, सोनू यादव, अर्मेंद्र सिंह चौहान, अजीत कुमार यादव, विजय कुमार, संतराम, सुरेन्द्र रावत, समूह सखी आशा, सरस्वती, आरती यादव, आरती सिंह, कोमल यादव, अमर सिंह यादव, मनोज पाल, नीरज मौर्या, पिंटू राजपूत, सुनीत रावत, शैलेन्द्र यादव, मुनेश्वर गौतम, बब्लू शर्मा एवं अन्य ग्रामवासी मौजूद रहे।

श्रेया सरन

अगर आज मैंने बतौर अभिनेत्री शुरुआत की होती तो मेरी कहानी अलग होती

हिंदी सिनेमा में, श्रेया सरन के पास अपनी फिल्मोग्राफी में बहुत ज्यादा फिल्में नहीं हैं, लेकिन साउथ फिल्म इंडस्ट्री में, अभिनेत्री ने पैन-इंडिया फिल्मों के लिए हमारी प्रशंसा शुरू होने से बहुत पहले ही अपनी पहचान बना ली थी। जब बॉलीवुड की बात आती है, तो दर्शक उन्हें दृश्यम फ्रैंचाइज से पहचानते हैं। हमारे साथ बातचीत में, श्रेया ने बताया कि कैसे उन्हें हिंदी सिनेमा में भी ऐसी ही पहचान मिली होती, ओटीटी माध्यम में उन्हें क्या अवसर मिलते हैं और भी बहुत कुछ।

श्बी-टाउन को लगा कि मेरे फीचर साउथ इंडियन हैंश

साउथ में अपना करियर शुरू करने के बारे में बात करते हुए हरिद्वार की रहने वाली श्रेया कहती हैं, ष्मैं साउथ की फिल्में करना चाहती थी क्योंकि मुझे लगा कि इंडस्ट्री बहुत स्वागत करने वाली है। उन्हें लगा कि मेरे फीचर साउथ और नॉर्थ का मिश्रण हैं, जबकि मुंबई में इंडस्ट्री के लोगों को लगा कि मैं बहुत साउथ इंडियन दिखती हूँ.ष् भले ही उन्होंने साउथ के टॉप स्टार्स के साथ काम किया हो, लेकिन श्रेया बताती हैं कि उन्हें बॉलीवुड में एक एक्टर के तौर पर वह पहचान नहीं मिली जिसकी उन्हें जरूरत थी।

श्साउथ इंडस्ट्री में मेरा काम हिंदी दर्शकों तक कभी नहीं पहुँचाश

यह बताते हुए कि उनका काम व्यापक दर्शकों तक क्यों नहीं पहुँच पाया, वह कहती हैं, 卐आज हम ओटीटी के समय में रह रहे हैं, जो पहले ऐसा नहीं था। जो मैं साउथ में काम कर रही थी, वो काम बॉलीवुड दर्शकों तक नहीं पहुँच पाया था। उस समय, हमारे पास विभिन्न भाषाओं की फिल्मों तक पहुँच नहीं थी, जिस तरह से आज है, वो भी ओटीटी प्लेटफॉर्म के कारण। और घ्उस समय साउथ की फिल्में पूरे भारत में रिलीज नहीं होती थीं। यही वजह है कि मुंबई में लोग मेरे काम के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे। दिल्ली में मेरे कॉलेज के प्रोफेसरों ने यह मानने से इनकार कर दिया कि मैं साउथ में एक एक्टर हूँ। मेरे पिता को उन्हें समझाना पड़ा और उन्हें बताना पड़ा कि मैं चिरंजीवी और नागार्जुन जैसे सितारों के साथ काम कर रही हूँ, ताकि वे कॉलेज में मेरी कम उपस्थिति पर विचार कर सकें और मुझे अपनी परीक्षा में बैठने की अनुमति दे सकें।卐

श्पहले, अनुवाद में बहुत कुछ खो जाता थाश

एसएस राजामौली की ऑस्कर पुरस्कार विजेता अखिल भारतीय फिल्म आरआरआर (2022) में नजर आईं श्रेया को खुशी है कि दर्शक अब विभिन्न भाषाओं में विभिन्न प्रकार के सिनेमा के प्रति ग्रहणशील हैं। 卐पहले, अनुवाद में बहुत कुछ खो जाता था, जो आज नहीं होता है। मणिरत्नम सर जैसे लोगों का धन्यवाद, जो मुझे लगता है कि कई भाषाओं में फिल्म रिलीज करने वाले पहले फिल्म निर्माताओं में से एक थे। यहां तक घ्कि शंकर सर (शिवाजीरू द बॉस, एंथिरन और 2.0 जैसी फिल्मों के निर्माता) ने भी ऐसा किया था। आज सारा सिनेमा एक छतरी के नीचे है, श्श्रेया कहती हैं, जिन्होंने उम्मीद जताई कि उनकी फिल्में जैसे शिवाजीरू द बॉस (2007), मनम (2014), छत्रपति (2005) और टैगोर (2003) अखिल भारतीय रिलीज होंगी डिजिटल प्लेटफॉर्म में आए बदलावों और पहले के समय की यादों के बारे में बात करते हुए, वह कहती हैं, 卐

काश जब मैंने शुरुआत की थी तब ओटीटी प्लेटफॉर्म होते क्योंकि आज काम कर रहे अभिनेताओं के पास ऐसे अद्भुत अवसर हैं। दर्शकों का आधार बहुत बड़ा है, और एक शो के साथ भी आप कई जगहों तक जा सकते हैं। ओटीटी ने निश्चित रूप से हमें कहानी कहने में बदलाव दिखाया है। मुझे लगता है कि अगर मैंने आज के समय में ओटीटी, सोशल मीडिया और अखिल भारतीय फिल्मों की मौजूदगी में शुरुआत की होती, तो मेरे करियर की कहानी अलग होती। ऐसा कहने के बाद, वे दिन भी अपने तरीके से जादुई, खूबसूरत और कच्चे थे।卐

श्रेया सरन अपने परिवार के साथ श्मेरे पति आंद्रेई के लिए यह एक बड़ा बदलाव रहा हैश

श्रिया ने 2018 में अपने रूसी बॉयफ्रेंड आंद्रेई कोशेव से शादी की । उन्होंने बताया, ष्यह उनके लिए एक बड़ा बदलाव रहा है। वह एक कॉर्पोरेट फर्म में सेल्स हेड हैं और हर दिन अंधेरी से ठाणे अपने ऑफिस जाते हैं। यह उनके लिए बहुत अलग जीवन है। उनके पास झील और पहाड़ों के सामने एक देहाती घर था, वह एक कन्वर्टिबल कार चलाते थे और यहाँ तक कि नौकायन भी करते थे। हालाँकि, उन्हें भारत में अपना समय बिताना बहुत पसंद है। वह अब केवल भारतीय खाना खाते हैं, जैसे रोटी-सब्जी और गोलगप्पे भी उन्हें बहुत पसंद हैं।ष

'करिश्मा का करिश्मा' फेम झनक शुक्ला ने रचाई शादी

शाहरुख खान स्टारर फिल्म कल हो ना हो और करिश्मा का करिश्मा जैसे टीवी शो में नजर आ चुकी झनक शुक्ला ने शादी कर ली है। उन्होंने अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड स्वप्निल सूर्यवंशी के साथ सात फेरे लिए, जिसकी तस्वीरें भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। झनक शुक्ला ने अपने इंस्टाग्राम पर शादी की वीडियो शेयर की। इसमें वह लाल संग की साड़ी पहने हुए दुल्हन के लुक में बेहद सुंदर नजर आ रही हैं। जबकि स्वप्निल सूर्यवंशी ने व्हाइट कलर की शेयरवानी और लाल साफा बांधा है। कौन हैं स्वप्निल सूर्यवंशी?स्वप्निल सूर्यवंशी एक मैकेनिकल इंजीनियर और डठ। क्वालिफाइड हैं। हालांकि वो हेल्थ और फिटनेस इंडस्ट्री से जुड़े हुए हैं। वो एक बॉडी सर्टिफाइड पर्सनल ट्रेनर और लाइफस्टाइल एक्सपर्ट हैं। झनक का करियर झनक शुक्ला फेमस डॉक्यूमेंट्री फिल्म मेकर हरिल शुक्ला और एक्ट्रेस सुप्रिया शुक्ला की बेटी हैं। झनक ने अपने करियर की शुरुआत बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट की थी। उन्हें टीवी शो करिश्मा का करिश्मा में रोबोट का रोल निभाने के लिए जाना जाता है। इसके अलावा झनक ने कल हो ना हो फिल्म में जया बच्चन की अडॉप्टेड बेटी जिया कपूर का किरदार निभाया था। इतना ही नहीं उन्होंने सोनपरी, हातिम और गुमराह के कई एपिसोड्स में काम भी किया है। साल 2006 में झनक ने टीवी इंडस्ट्री को अलविदा कह दिया। अब झनक एक आर्कियोलॉजिस्ट और लाइफ स्टाइल ब्लॉगर हैं। झनक ने आखिर अचानक क्यों छोड़ दी थी एक्टिंग? हिंदुस्तान टाइम्स के साथ एक इंटरव्यू में झनक ने बताया था कि उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें एक्टिंग में इंटरेस्ट नहीं है। उन्होंने कहा, 'मैंने कभी भी जानबूझकर एक्टिंग नहीं छोड़ी, सब कुछ अपने आप होता चला गया। मैं एक चाइल्ड आर्टिस्ट थी, लेकिन कुछ समय बात मेरे माता-पिता ने मुझसे कहा कि अभी मुझे पढ़ाई पर फोकस करना चाहिए और मैं चाहूं तो पोस्ट ग्रेजुएशन कंप्लीट करने के बाद एक्टिंग शुरू कर सकती हूं, इसलिए मैंने उस वक्त पढ़ाई के बारे सोचा। जब तक मैंने अपना ग्रेजुएशन पूरा किया, मैंने महसूस किया मुझे एक्टिंग में कोई दिलचस्पी नहीं थी।'

बेटी को फौजी बनाने के लिए कैसे मानें रवि किशन?

भोजपुरी सुपरस्टार रवि किशन ने भोजपुरी की 700 से ज्यादा फिल्मों में काम किया है. वे हिंदी फिल्मों और सीरीज का भी हिस्सा रहे हैं. एक्टर होने के साथ-साथ वे एक नेता भी हैं. वे यूपी की गोरखपुर सीट से बीजेपी सांसद हैं. हाल ही में उन्होंने एक पॉडकास्ट में अपनी बेटी को आर्मी में भेजने का फैसला लेने की असल वजह का खुलासा किया. शुभांकर मिश्रा के पॉडकास्ट में बात करते हुए रवि किशन ने अपनी बेटी इशिता शुक्ला के आर्मी प्रोफेशन चुनने को लेकर बात की. उनसे पूछा गया कि अक्सर नेताओं पर आरोप लगता है कि वे अपने बच्चों को फौज में नहीं भेजते हैं, तो उन्होंने अपनी बेटी को फौज में कैसे भेज दिया. इसपर रवि किशन ने बताया कि वे भी इसके लिए राजी नहीं थे. बेटी का फैसला था फौज में जाना रवि किशन ने कहा- श्मैं भी भेजना नहीं चाहता था, झूठ क्यों बोलूं. कोई भी पिता नहीं चाहता कि बहुत मुश्किल हो. ट्रेनिंग बहुत मुश्किल होती है. बेटी को सब प्यार करते हैं, मां के करीब बेटा होता है और बाप के करीबी बेटी होती है. ये उनका खुद का फैसला था.श् इस सवाल पर कि किया रवि किशन ने अपनी बेटी को रोकने की कोशिश नहीं की, एक्टर ने कहा- श्मैंने कहा था कि क्यों करना है, ये बहुत मुश्किल है. तुम एनसीसी कैडेट बनोगी, तीन साल दिल्ली में रहोगी, स्नाइपर बनोगी.श् बेटी को फौज में भेजने के लिए कैसे मानें रवि किशन? एक्टर ने आगे कहा- श्ये आसान नहीं है, उसने 26 जनवरी को मार्च भी किया था, प्राइम मिनिस्टर के सामने, इशिता शुक्ला नाम है. जब मैंने उससे पूछा कि क्यों बेटा तुम्हें फौजी क्यों बनना है, तो उसने कहा आप क्यों कुर्ता पहनकर संसद जाते हैं. यहीं बाबा शांत हो गया और कहा कि ठीक है आगे बढ़ो.श् क्या करते हैं रवि किशन के दूसरे बच्चे? रवि किशन ने आगे बताया कि उनका एक बच्चा कलाकार है और दूसरी बेटी शेयर मार्किट पढ़ रही हैं. उनके सारे बच्चे टॉपर्स हैं. एक्टर ने अपने बारे में खुलासा किया कि वे ग्रेजुएशन पूरी नहीं कर पाए थे. वे एक अच्छे स्टूडेंट नहीं थे.

इस साल इन भारतीय क्रिकेटरों ने दिया है सबसे अधिक टैक्स

भारत में हर वर्ष कई अभिनेता, उद्योगपति और खिलाड़ी ऐसे होते हैं जो सर्वाधिक टैक्स का भुगतान करते है। वर्ष 2023-24 के दौरान कई भारतीय क्रिकेटरों ने भी टैक्स का भुगतान किया है। इन क्रिकेटरों ने इस साल सबसे अधिक टैक्स का भुगतान किया है। विराट कोहली ने वित्तीय वर्ष 2024 के लिए सबसे अधिक टैक्स क्रिकेटरों की सूची में दिया है। विराट कोहली सबसे अधिक टैक्स देने वाले भारतीय क्रिकेटर है। उन्होंने इस बार 66 करोड़ रुपये का टैक्स दिया है। उनकी ये आय मैच फीस, आईपीएल कॉन्ट्रैक्ट, कई बड़े ब्रांड्स के विज्ञापन के जरिए पैसे कमाते है। बता दें कि विराट कोहली दुनिया के सबसे अधिक कमाई करने वाले खिलाड़ियों में शुमार है। विराट कोहली की अनुमानित संपत्ति 1000 करोड़ रुपये है। उनकी मार्केटिंग क्षमता और अटूट प्रदर्शन के कारण वो खेल और व्यवसाय के क्षेत्र में प्रमुख व्यक्ति बने है। महेंद्र सिंह धोनी भारतीय टीम के पूर्व कप्तान एमएस धोनी ने 38 करोड़ रुपए टैक्स के तौर पर दिया है। इंटरनेशनल क्रिकेट से सन्यास लेने के बाद भी एमएस धोनी आईपीएल में खेलने वाले एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। एमएस धोनी को रीबॉक और टीवीएस मोटर्स जैसे अनेकों विज्ञापन मिले हुए है। जानकारी के मुताबिक एमएस धोनी की अनुमानित संपत्ति 1200 करोड़ रुपये है। एमएस धोनी की संपत्ति का श्रेय उनके विविध व्यावसायिक उपक्रमो को दिया जाता है। सचिन तेंदुलकर क्रिकेट से कई वर्षों पहले संन्यास लेने वाले सचिन तेंदुलकर 28 करोड़ रुपये टैक्स के तौर पर चुकाते है। वो भारतीय इकोनॉमी में महत्वपूर्ण योगदान देते है। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर के पास अब भी कोका-कोला और एडिडास जैसे विश्व प्रसिद्ध ब्रैंड्स के विज्ञापन है। उनकी कुल संपत्ति संभावित तौर पर 1000 करोड़ रुपये है। सौरव गांगुली सौरव गांगुली ने करों में 23 करोड़ रुपये का महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान के रूप में उनकी आय मुख्य रूप से क्रिकेट प्रशासन और विज्ञापनों में उनकी भागीदारी से होती है। 300 करोड़ रुपये की अनुमानित कुल संपत्ति के साथ, गांगुली की व्यावसायिक सूझबूझ उनके विविध उपक्रमों में स्पष्ट है, जिसमें मीडिया में उपस्थिति और क्रिकेट कमेंट्री शामिल है। हार्दिक पंड्या हार्दिक पंड्या ने भारतीय क्रिकेट टीम के एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अपनी वित्तीय जिम्मेदारी को दर्शाते हुए करों में 13 करोड़ रुपये का योगदान दिया है। क्रिकेट से अपनी कमाई के अलावा, पंड्या को हाला प्ले और जिलेट जैसे प्रसिद्ध ब्रांडों के साथ आकर्षक विज्ञापन से भी लाभ होता है। लगभग 80 करोड़ रुपये की अनुमानित कुल संपत्ति के साथ, मैदान पर पंड्या की सफलता और उनकी मजबूत मार्केटिंग अपील ने क्रिकेट और व्यापार जगत दोनों में एक उभरते सितारे के रूप में उनकी स्थिति को मजबूत किया है। ऋषभ पंत ऋषभ पंत का कर योगदान 10 करोड़ रुपये था। प्रतिभाशाली युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज ने आईपीएल से अच्छी कमाई और च्ड। जैसे प्रसिद्ध ब्रांडों के आकर्षक विज्ञापनों से तेजी से रैंक हासिल की है। उनकी कुल संपत्ति वर्तमान में लगभग 50 करोड़ रुपये आंकी गई है, जो मैदान पर और बाहर दोनों जगह उनकी निरंतर वृद्धि का प्रमाण है। अजिंक्य रहाणे अपनी शानदार बल्लेबाजी शैली के लिए मशहूर अजिंक्य रहाणे ने 8 करोड़ रुपये टैक्स के रूप में दिए हैं।

मेलबर्न में भारतीय टीम की शानदार वापसी

ऑस्ट्रेलिया के 474 रन के जवाब में बनाए 358/9, नीतीश का शतक

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी। शुक्रवार को दूसरे दिन ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 474 रन बनाए थे। जवाब में भारत ने तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक अपनी पहली पारी में नौ विकेट गंवाकर 358 रन बना लिए हैं।मेलबर्न में जारी बॉक्सिंग डे टेस्ट के तीसरे दिन का खेल खत्म हो चुका है। टीम इंडिया ने इस मैच में जबरदस्त वापसी की है और खेल खत्म होने तक अपनी पहली पारी में नौ विकेट गंवाकर 358 रन बना लिए हैं। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 474 रन बनाए थे। इस लिहाज से भारत अभी भी 116 रन पीछे है। नीतीश रेड्डी ने बेहतरीन शतक जड़ा। वह फिलहाल 105 रन बनाकर नाबाद हैं। उन्होंने अब तक 176 गेंद की अपनी पारी में 10 चौके और एक छक्का लगाया है। मोहम्मद सिराज भी दो रन बनाकर नाबाद हैं।भारत ने तीसरे दिन 194 रन जोड़े भारत ने शनिवार को पांच विकेट पर 164 रन से आगे खेलना शुरू किया और 194 रन जोड़े। इस दौरान भारत ने चार और विकेट गंवाए। शनिवार को ऋषभ पंत, रवींद्र जडेजा, जसप्रीत बुमराह और वॉशिंगटन सुंदर आउट हुए। नीतीश ने नौवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे वॉशिंगटन सुंदर के साथ आठवें विकेट के लिए 127 रन की साझेदारी निभाई। सुंदर और नीतीश दोनों ने 150-150 गेंद खेलीं। टेस्ट क्रिकेट में ऐसा पहली बार हुआ जब किसी टीम के आठवें और नौवें नंबर के बल्लेबाज ने 150 गेंदें खेली हों। दोनों ने संयुक्त रूप से 285 गेंदें खेलीं यानी करीब 48 ओवर बल्लेबाजी की। सुंदर 162 गेंद में एक चौके की मदद से 50 रन बनाकर आउट हुए। इससे पहले यशस्वी जायसवाल 82 रन, रोहित शर्मा तीन, केएल राहुल 24 रन, विराट कोहली 36 रन और ऋषभ पंत 28 रन और रवींद्र जडेजा 17 रन बनाकर आउट हुए थे। जसप्रीत बुमराह और आकाश दीप खाता नहीं खोल सके। नीतीश रेड्डी का पहला अंतरराष्ट्रीय शतक नीतीश ने 171 गेंद में बोलैंड की गेंद पर चौका लगाकर शतक लगाया। यह उनके अंतरराष्ट्रीय करियर का पहला शतक है। उन्होंने टेस्ट में पहली बार पचास से ज्यादा रन बनाए और उस पारी को शतक में बदल दिया। नीतीश इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट में शतक लगाने वाले तीसरे सबसे युवा भारतीय बन गए हैं। उनसे आगे सिर्फ सचिन तेंदुलकर और ऋषभ पंत हैं। नीतीश के लिए यह शतक इसलिए भी खास है क्योंकि उनके पिता मुतयाला रेड्डी दर्शक दीर्घा में मौजूद हैं और यह मैच देख रहे हैं। अपने पिता के सामने शतक लगाने के बाद नीतीश भावुक भी हो गए। ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 474 रन पर समाप्त हुई। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए ऑस्ट्रेलिया के लिए शुरुआती तीन बल्लेबाजों ने अर्धशतक जड़े। इसके बाद स्टीव स्मिथ ने टेस्ट करियर का 34वां शतक लगाया। कप्तान पैट कमिंस ने 49 रन की पारी खेली। दूसरे दिन ऑस्ट्रेलिया ने छह विकेट पर 311 रन से आगे खेलना शुरू किया। हालांकि, भारतीय गेंदबाजों को दूसरे दिन चार विकेट के लिए काफी मेहनत करनी पड़ी। ऑस्ट्रेलिया ने शुक्रवार को 163 रन जोड़े और चार विकेट गंवाए। स्मिथ 140 रन बनाकर आउट हुए। भारत के लिए जसप्रीत बुमराह ने सबसे ज्यादा चार विकेट लिए। वहीं, रवींद्र जडेजा को तीन विकेट मिले। आकाश दीप को दो विकेट मिले, जबकि सुंदर ने एक विकेट लिया। दोनों टीमें एक-एक बदलाव के साथ उतरीं इस मैच के लिए दोनों टीमों में एक-एक बदलाव हुआ था। ऑस्ट्रेलिया ने जोश हेजलवुड की जगह स्कॉट बोलैंड और भारत ने शुभमन गिल की जगह वॉशिंगटन सुंदर को मौका दिया। कंगारुओं की शुरुआत अच्छी रही थी और 19 साल के डेब्यूटांट सैम कोंस्टास ने उस्मान ख्वाजा के साथ पहले विकेट के लिए 89 रन की साझेदारी निभाई। कोंस्टास ने अपने डेब्यू मैच में ही आक्रामक बल्लेबाजी की और बुमराह को निशाने पर लिया। उन्होंने अर्धशतक जमाया। हालांकि, इसके बाद रवींद्र जडेजा की गेंद पर एलबीडब्ल्यू आउट हो गए। कोंस्टास 65 गेंद में छह चौके और दो छक्के की मदद से 60 रन बनाकर आउट हुए। ख्वाजा-लाबुशेन ने अर्धशतक लगाया इसके बाद ख्वाजा ने स्टीव स्मिथ के साथ दूसरे विकेट के लिए 65 रन की साझेदारी निभाई। ख्वाजा ने टेस्ट करियर का 27वां अर्धशतक लगाया। वह 121 गेंद में छह चौके की मदद से 57 रन बनाकर बुमराह की गेंद पर आउट हुए। वहीं, हेड खाता नहीं खोल सके। उन्हें बुमराह ने क्लीन बोल्ड किया। बुमराह ने फिर मिचेल मार्श को भी सस्ते में निपटा दिया। वह चार रन बना सके। लाबुशेन ने 145 गेंद में सात चौके की मदद से 72 रन की पारी खेली। यह उनके टेस्ट करियर का 22वां अर्धशतक रहा। स्टीव स्मिथ ने 34वां टेस्ट शतक जड़ा स्टीव स्मिथ ने गाबा के बाद मेलबर्न टेस्ट में भी शतक जड़ा। उन्होंने टेस्ट करियर का 34वां शतक जड़ा। स्मिथ ने शानदार बल्लेबाजी की। यह भारत के खिलाफटेस्ट में उनका 11वां शतक रहा और वह टीम इंडिया के खिलाफ सबसे ज्यादा टेस्ट शतक लगाने वाले बल्लेबाज भी बन गए। कमिंस ने स्मिथ के साथ सातवें विकेट के लिए 112 रन की साझेदारी निभाई। कमिंस के साथ-साथ जडेजा ने मिचेल स्टार्क को क्लीन बोल्ड किया। स्टार्क 15 रन बना सके। स्मिथ 140 रन बनाकर आकाश का शिकार बने 455 के स्कोर पर ही ऑस्ट्रेलिया को नौवां झटका लगा। आकाश दीप ने स्टीव स्मिथ को बोल्ड किया। स्मिथ अजीबोगरीब तरीके से आउट हुए। आकाश की शॉर्ट पिच गेंद को स्मिथ ने आगे बढ़कर खेलने का प्रयास किया। गेंद उनके बल्ले से लगकर पैड पर लगी और फिर विकेट पर जा लगी। स्मिथ दो फीट आगे निकल चुके थे और गेंद को रोकने के लिए वापस नहीं गए। गेंद रोल होते हुए स्टंप्स पर जा लगी। उन्होंने 197 गेंद में 13 चौके और तीन छक्के की मदद से 140 रन बनाए। आखिरी विकेट नाथन लियोन के रूप में गिरा। दोनों टीमों की प्लेइंग-11 भारतः रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, नीतीश रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, आकाश दीप, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज। ऑस्ट्रेलियाः उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीव स्मिथ, ट्रेविस हेड, मिचेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेटकीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिचेल स्टार्क, नाथन लियोन और स्कॉट बोलैंड।

200+ विकेट लेने वालों में बुमराह का गेंदबाजी औसत सबसे बेहतर, भज्जी-कुंबले को इस मामले में पछाड़ा

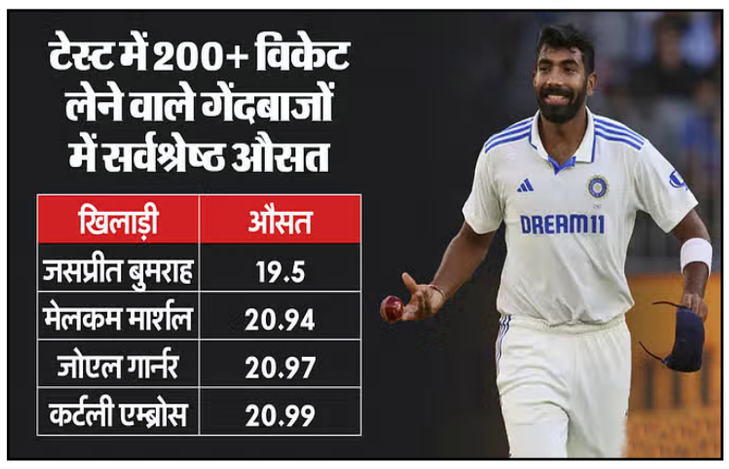

मेलबर्न। 200 विकेट लेने वाले टेस्ट गेंदबाजों में बुमराह का औसत सबसे बेहतर है। इसके बाद वेस्टइंडीज के महान मार्शल का नंबर आता है। मेलबर्न में जारी बॉक्सिंग डे टेस्ट में भारतीय गेंदबाज कहर बरपा रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया ने दूसरी पारी में 100 रन के अंदर छह विकेट गंवा दिए। जसप्रीत बुमराह ने एकबार फिर भारतीय पेस अटैक को लीड किया और छह में से चार विकेट झटके। बुमराह ने इसी के साथ टेस्ट में 200 विकेट भी पूरे कर लिए। वह इस उपलब्धि को हासिल करने वाले भारत के 12वें गेंदबाज बने। बुमराह ने महज 44वें टेस्ट में यह मुकाम हासिल किया। इस दौरान उनका गेंदबाजी औसत 19.3 का रहा है, जो कि शानदार है। बुमराह का औसत 200 टेस्ट विकेट लेने वाले गेंदबाजों में मेल्कम मार्शल और कर्टली एम्ब्रोस जैसे महान गेंदबाजों से भी बेहतर है। इसके साथ ही उन्होंने टेस्ट मैचों के हिसाब से सबसे तेज 200 विकेट लेने के मामले में हरभजन सिंह और अनिल कुंबले को पीछे छोड़ दिया। बुमराह के फिलहाल 44 टेस्ट में 19.3 के औसत से 202 विकेट लिए हैं। 27 रन देकर छह विकेट उनकी सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी है। वहीं, बुमराह ने 12 बार पारी में पांच विकेट लिए हैं। बुमराह का औसत सबसे बेहतरीन 200 विकेट लेने वाले टेस्ट गेंदबाजों में बुमराह का औसत सबसे बेहतर है। इसके बाद वेस्टइंडीज के महान मार्शल का नंबर आता है। उन्होंने 81 टेस्ट में 20.94 की औसत से 376 विकेट लिए थे। वहीं, तीसरे स्थान पर जोएल गार्नर हैं। गार्नर ने 111 टेस्ट में 20.97 की औसत से 259 विकेट लिए थे। चौथे नंबर पर कर्टली एम्ब्रोस हैं। एम्ब्रोस ने 98 टेस्ट में 20.99 की औसत से 405 विकेट लिए थे। गेंदबाजी औसत का मतलब है प्रति विकेट कितने रन खर्च किए गए। वहीं, गेंदबाजी स्ट्राइक रेट का मतलब है प्रति विकेट कितनी गेंद फेंकी। संयुक्त रूप से दूसरे सबसे तेज भारतीय मैच के हिसाब से भारत के लिए टेस्ट में सबसे तेज 200 विकेट लेने वालों में बुमराह दूसरे स्थान पर हैं। हालांकि, इस लिस्ट की शीर्ष पांच गेंदबाजों में अकेले तेज गेंदबाज हैं। बुमराह ने 44 टेस्ट में ऐसा किया। वहीं, अश्विन 37 टेस्ट मैचों में 200 विकेट पूरे किए थे और वह शीर्ष पर हैं। रवींद्र जडेजा ने भी 44 टेस्ट में 200 विकेट पूरे किए थे। हरभजन सिंह ने 46 टेस्ट में यह मुकाम हासिल किया था और वह चौथे नंबर पर हैं। अनिल कुंबले ने 47 टेस्ट में यह उपलब्धि हासिल की थी और वह पांचवें स्थान पर हैं। इस मामले में चौथे स्थान पर बुमराह गेंद के हिसाब से टेस्ट में सबसे तेज 200 विकेट पूरे करने वाले गेंदबाजों की बात करें तो बुमराह चौथे स्थान पर हैं। बुमराह को 200 विकेट के लिए 8484 गेंदें फेंकनी पड़ीं। पाकिस्तान के वकार यूनिस इस लिस्ट में शीर्ष पर हैं। वहीं, डेल स्टेन दूसरे और कगिसो रबाडा तीसरे स्थान पर हैं। बुमराह विदेश में किसी एक टेस्ट सीरीज में किसी भारतीय गेंदबाज द्वारा सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में भी दूसरे स्थान पर हैं। हालांकि, अभी एक टेस्ट और बचा है और उनके पास सबसे आगे निकलने का मौका है। बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मौजूदा सीरीज में अब तक 29 विकेट लिए हैं। बिशन सिंह बेदी ने 1977-78 में ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर 31 विकेट लिए थे। इसके बाद बुमराह का नंबर आता है। इसी के साथ बुमराह ऑस्ट्रेलिया में एक टेस्ट सीरीज में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाज भी बन गए। ऑस्ट्रेलिया के शुरुआती छह में से चार विकेट बुमराह ने लिए ऑस्ट्रेलिया ने अपनी दूसरी पारी में 91 के स्कोर पर ही छह विकेट गंवा दिए थे। बुमराह एक बार फिर कंगारू बल्लेबाजों के लिए पहेली साबित हुए। सैम कोंस्टास (8) को अपने पहले स्पेल में पवेलियन भेजने के बाद बुमराह ने अपने चौथे स्पेल में एक ही ओवर में ट्रेविस हेड (1) और मिचेल मार्श (0) को आउट किया था। इसके बाद चौथे स्पेल के अपने दूसरे ओवर में उन्होंने एलेक्स कैरी को भी बोल्ड किया। कैरी दो रन बना सके। इसके अलावा सिराज ने दो विकेट झटके। उन्होंने स्टीव स्मिथ (13) और उस्मान ख्वाजा (21) को आउट किया था। सिराज ने स्मिथ को टेस्ट में 15 पारियों में चौथी बार आउट किया। वहीं, बुमराह ने हेड को टेस्ट में 16 पारियों में छठी बार आउट किया।

सिडनी टेस्ट से पहले खुद बाहर होंगे रोहित शर्मा या बड़े फैसले का इंतजार करेंगे ?

महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने '7 क्रिकेट' के लिये कमेंट्री के दौरान कहा ,'' उसके लिये कठिन समय है।' उन्होंने कहा ,'' अभी दूसरी पारी और सिडनी टेस्ट की दो पारियां बाकी है। इन तीनों पारियों में अगर वह रन नहीं बनाता है तो सवाल तो उठेंगे।''

एक बार फिर रोहित शर्मा सस्ते में आउट हुए और फिर उनके भविष्य को लेकर अटकलें लगनी शुरू हो गई जो लाजमी भी हैं। महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने '7 क्रिकेट' के लिये कमेंट्री के दौरान कहा ,'' उसके लिये कठिन समय है।' उन्होंने कहा ,'' अभी दूसरी पारी और सिडनी टेस्ट की दो पारियां बाकी है। इन तीनों पारियों में अगर वह रन नहीं बनाता है तो सवाल तो उठेंगे।'' पैट कमिंस की शॉर्ट गेंद पर यहां चौथे टेस्ट की पहली पारी में भारतीय कप्तान के तीन रन पर आउट होने के बाद सवाल उठने लगे हैं कि वह टेस्ट क्रिकेट से विदा कब लेंगे।

राष्ट्रीय चयन समिति के अध्यक्ष अजित अगरकर मेलबर्न में है और हो सकता है कि दोनों की भविष्य को लेकर बात भी हुई हो क्योंकि भारतीय टीम बदलाव के दौर से गुजर रही है। पिछले आठ टेस्ट की 14 पारियों में 11.07 की औसत से रोहित ने सिर्फ 155 रन बनाये हैं। एक तो वह फॉर्म में नहीं हैं और स्थिर लग रही प्रारंभिक जोड़ी में बदलाव करके टीम का संतुलन भी बिगड़ गया है। ऐसी अटकलें हैं कि अगर भारत विश्व टेस्ट चौम्पियनशिप फाइनल के लिये क्वालीफाई नहीं कर पाता है तो सिडनी उनके कैरियर का आखिरी टेस्ट होगा। लेकिन क्या रोहित टीम के लिये सिडनी टेस्ट से खुद को बाहर रखकर फॉर्म में चल रहे केएल राहुल को यशस्वी जायसवाल के साथ पारी का आगाज करने देंगे। भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने आईपीएल में अपने खेलने के दिनों में एक बार खुद को बाहर कर दिया था। अगर रविचंद्रन अश्विन को यह जताकर संन्यास लेने के लिये विवश किया जाता है कि वह विदेश में पहली पसंद के दो स्पिनरों में से नहीं हैं तो क्या भारतीय कप्तान को यह नहीं बताना चाहिये कि वह टेस्ट में शीर्ष छह में नहीं हैं जिनकी जगह टीम में पक्की है। सात सप्ताह बाद वनडे प्रारूप में चौम्पियंस ट्रॉफी खेली जानी है और वनडे में रोहित का कोई सानी नहीं। मौजूदा खराब फॉर्म से उनका मनोबल गिरा होगा लेकिन अगर टेस्ट की जिम्मेदारी हट जाती है तो वह खुलकर खेल सकेंगे। रोहित और विराट कोहली दोनों ही खराब फॉर्म में हैं लेकिन अंतर इतना है कि क्रीज पर दोनों कैसे दिखते हैं। कोहली को देखकर अभी भी लगता है कि वह जल्दी ही बड़ी पारी खेलेंगे और पर्थ में उन्होंने शतक जमाया भी। एमसीजी पर भी दूसरे दिन वह आत्मविश्वास से भरे दिख रहे थे। दूसरी ओर रोहित आसानी से विकेट गंवाते आये हैं। यहां बहुत ही खराब शॉट खेलकर वह पवेलियन लौटे। बतौर कप्तान भी अभी तक इस श्रृंखला में उन्होंने बहुत प्रभावित नहीं किया है। लिहाजा कप्तान को जल्दी ही फैसला लेना होगा। शायद उनकी टीम इसका इंतजार कर रही है।

विराट कोहली के आउट होने के बाद ऑस्ट्रेलिया टीम के फैंस ने की ऐसी हरकत, भड़क गया ये पूर्व दिग्गज

19 वर्षीय सैम कोनस्टास से भिड़ने के बाद से ऑस्ट्रेलियाई मीडिया और ऑस्ट्रेलियाई दर्शक भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली के पीछे पड़ गए हैं। सीरीज की शुरुआत में जिस खिलाड़ी को मीडिया और फैन किंग बता रहे थे उसी खिलाड़ी को अब हर जगह हूटिंग का सामना करना पड़ा रहा है। परेशानी ये है कि कोहली का बल्ला भी नहीं चल रहा है जिससे लोगों को उन्हें ट्रोल करने का मौका मिल रहा है। शुक्रवार को मेलबर्न टेस्ट में कोहली के आउट होने के बाद स्टेडियम में मौजूद दर्शकों ने उन्हें गुस्सा दिलाया। भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली 86 गेंदों में 36 रन बनाकर आउट हो गए। स्कॉट बोलैंड ने उन्हें एलेक्स कैरी के हाथों कैच आउट कराया। कोहली जिस समय आउट हुए भारतीय टीम अच्छी स्थिति में नहीं थी। कोहली अपने आउट होने से निराश थे। जिस कारण वह सिर झुकाकर ड्रेसिंग रूम में जा रहे थे। कोहली जब मैदान से बाहर जा रहे थे तभी फैंस ने उन्हें हूट करना शुरू किया। शुरुआत में भारतीय बल्लेबाज ने इसे इग्नोर किया और आगे बढ़ गए लेकिन तभी फैंस और ज्यादा हूटिंग कनरे लगे। ऐसे में किसी दर्शक ने अपशब्द का इस्तेमाल किया जो कि कोहली का बर्दाश्त नहीं हुआ। कोहली गुस्से में पीछे मुड़ और दर्शकों की ओर देखकर बात करने लगे। उनका गुस्सा उनकी बॉडी लैंग्वेज में दिख रहा था। इसी दौरान वहां मौजूद आईसीसी अधिकारी आए और कोहली को शांत करके उन्हें अपने साथ ले गए। सोशल मीडिया पर ये वीडियो काफी वायरल हो रहा है।

बॉक्सिंग डे टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के सामने पस्त हुई टीम इंडिया, छाया फॉलोऑन का संकट

भारत और ऑस्ट्रेलिया चौथे टेस्ट मैच के दूसरे दिन का खेल समाप्त हो गया है। बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच के दूसरे दिन काफी रोमांचक मैच हुआ। स्टीव स्मिथ ने अपने टेस्ट करियर का 34वां शतक जड़ा। ऑस्ट्रेलिया ने 474 रनों का विशाल स्कोर बनाया, जबकि रोहित शर्मा पहली बार इस दौरे पर ओपनर के तौर पर उतरे और फेल रहे। वे अब तक नंबर 6 पर खेल रहे थे और वहां भी रन नहीं बना पाए थे। यशस्वी जायसवाल ने दमदार अर्धशतक पूरा किया, लेकिन वे रन आउट हो गए। विराट कोहली आज लय में नजर आए, लेकिन यशस्वी के आउट होने के बाद उनका फोकस टूट गया और वे फिर से चौथे-पांचवें स्टंप की गेंद पर कैच आउट हो गए। इंडिया का स्कोर दूसरे दिन के खेल के बाद 5 विकेट के नुकसान पर 164 है। आधी टीम पवेलियन लौट चुकी है भारत अभी भी पहली पारी के आधार पर 310 रन पीछे है और फॉलोऑन बचाने के लिए भारत को अभी 111 रन चाहिए। इस मैच की बात करें तो ऑस्ट्रेलिया ने पहले दिन के खेल के बाद 6 विकेट के नुकसान पर 311 से आगे खेलते हुए पहले सेशन में दमदार खेल दिखाया और 140 से ज्यादा रन जोड़े। यहां तक सिर्फएक ही विकेट पहले सेशन में गिरा, लेकिन दूसरे सेशन की शुरुआत में ही ऑस्ट्रेलिया के बाकी के तीन विकेट गिर गए। ऑस्ट्रेलिया ने 474 रन बनाए, जिसमें स्टीव स्मिथ ने 140 रन की पारी खेली, जबकि सैम कोंस्टास, उस्मान ख्वाजा और मार्नस लाबुशेन ने पहले दिन अर्धशतक जड़े। कप्तान पैट कमिंस ने 49 रन बनाए। जसप्रीत बुमराह ने 4 विकेट निकाले। भारतीय टीम जब बल्लेबाजी के लिए उतरी तो रोहित शर्मा ओपनर के तौर पर नजर आए। हालांकि, वे सिर्फ3 रन बनाकर आउट हो गए। इसके बाद केएल राहुल ओपनर यशस्वी जायसवाल का साथ देने आए। दोनों के बीच साझेदारी पनपी, लेकिन टी ब्रेक से पहले की आखिरी गेंद पर वे क्लीन बोल्ड गए। इसके बाद तीसरे सेशन में विराट कोहली क्रीज पर यशस्वी का साथ देने आए। दोनों के बीच 100 रनों की साझेदारी हुई, लेकिन यशस्वी 82 रन बनाकर रन आउट हो गए। विराट कोहली भी 36 रन बनाकर कैच आउट हो गए। आकाश दीप के तौर पर भारत का दिन का आखिरी विकेट गिरा।

एक बार फेल हुए रोहित शर्मा, सिर्फ5 गेंद पर बनाए 3 रन, पिछली 14 पारियों में भी रहे फ्लॉप

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के बॉक्सिंग डे टेस्ट में भारतीय कप्तान रोहित शर्मा बतौर ओपनर उतरे और महज 5 गेंद में ही आउट हो गए। रोहित शर्मा काफी खराब फॉर्म से गुजर रहे हैं। उन्होंने पिछली 14 पारियों में 9 बार दहाई का आंकड़ा पार नहीं किया है। रोहित का फॉर्म में न होना टीम इंडिया के लिए परेशानी की बात है। रोहित शर्मा ने 2024 की शुरुआत में बेहतरीन प्रदर्शन किया था। इंग्लैंड के खिलाफघरेलू सरजमीं पर टेस्ट सीरजी में 2 शतक और एक अर्धशतक ठोका। इसके चलते उन्होंने 2024 में 14 मैच की 15 पारी में 25.41 के औसत से 610 रन बनाए हैं। उन्होंने 2 शतक और 2 अर्धशतक लगाए हैं। इस सीरीज के बाद टेस्ट में रोहित शर्मा का बल्ला नहीं चला। घरेलू सरजमीं पर बांग्लादेश और न्यूजीलैंड के खिलाफटेस्ट सीरीज में वह फेल रहे। अब ऑस्ट्रेलिया में खराब फॉर्म से जूझ रहे हैं।

मनमोहन सिंह के सम्मान में भारतीय खिलाड़ियों ने बांह पर काली पट्टी बांधी

भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के सम्मान में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफचौथे टेस्ट के दूसरे दिन शुक्रवार को बांह पर काली पट्टी बांध कर मैदान पर उतरे। भारत के आर्थिक सुधारों के जनक मनमोहन सिंह का 92 साल की उम्र में बृहस्पतिवार रात को दिल्ली में निधन हो गया। वह 2004-14 के दौरान भारत के प्रधानमंत्री थे।

इसकी वास्तव में कोई जरूरत नहीं थी, कोहली ऐसी विरासत नहीं चाहेंगे: गावस्कर

महान क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने बृहस्पतिवार को ऑस्ट्रेलिया के पदार्पण करने वाले युवा सैम कोंस्टास के साथ विराट कोहली की टक्कर की आलोचना करते हुए कहा कि इसकी 'कोई जरूरत नहीं' थी और भारतीय स्टार नहीं चाहेगा कि इस तरह की घटना से उनकी विरासत धूमिल हो।

रोहित के फिर फ्लॉप होने पर निराश हुए प्रशंसक, भारतीय कप्तान को संन्यास लेने की दे डाली सलाह

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 474 रनों पर सिमटी और मौजूदा ऑस्ट्रेलिया दौरे पर रोहित पहली बार यशस्वी जायसवाल के साथ ओपनिंग के लिए उतरे। रोहित बड़ी पारी नहीं खेल सके और बतौर ओपनर भी फेल रहे। रोहित दूसरे ओवर में पैट कमिंस की गेंद पर बोलैंड के हाथों कैच आउट हुए। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ऑस्ट्रेलिया दौरे पर अब तक प्रभावशाली प्रदर्शन नहीं कर सके हैं और उनकी खराब फॉर्म में मेलबर्न में खेले जा रहे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के चौथे टेस्ट में भी जारी रही। रोहित मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) पर खेले जा रहे चौथे टेस्ट की पहली पारी में ओपनिंग करने उतरे, लेकिन महज तीन रन बनाकर पवेलियन लौट गए। रोहित के बार-बार असफल होने से सोशल मीडिया पर प्रशंसकों ने नाराजगी व्यक्त की। यहां तक कि प्रशंसकों के एक वर्ग ने भारतीय कप्तान को संन्यास लेने की सलाह भी दे डाली। ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 474 रनों पर सिमटी और मौजूदा ऑस्ट्रेलिया दौरे पर रोहित पहली बार यशस्वी जायसवाल के साथ ओपनिंग के लिए उतरे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा श्हीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।